डाक पंजीयन नं. 99/2021–23

E-mail:-adhuniksamachar2014@gmail.com website:www.adhuniksamachar.com

आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

PG-5

आधुनिक समाचार

PG-5

प्रयागराज से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

सिनेमाःफिल्म एक्ट्रेस कंचन अवस्थी से सीधा साक्षात्कार आधुनिक समाचा के ईजी

वर्ष -8 अंक -75 प्रयागराज, गुरूवार 26 मई, 2022 पृष्ठ- 8 मूल्य : 2.00 रूपये

संक्षिप्त समाचार

कर्नाटक में श्रीरंगपटना के बाद अब मलाली स्थित मस्जिद को लेकर विवाद

दक्षिण कन्नड़। कर्नाटक में श्रीरंगपटना जामिया मस्जिद के बाद अब राज्य के दक्षिण कनन्ड़ जिले के मलाली स्थित मस्जिद को लेकर भी विवाद सामने आ रहा है। बजरंग दल और विश्व हिंदू परिषद ने इस मामले को उठाने का निणय्र लिया है। दरअसल, हिंदू संगठनों का मानना है कि श्रीरंगपटना जामिया मस्जिद पहले हनुमान मंदिर हुआ करता था। यह मामला अभी चल ही रहा था कि दक्षिण कनन्ड़ स्थित मलाली में असैय्यद अदबुल्लाहिल मदनी मस्जिद के नवीनीकरण के दौरान मंदिर की संरचना मिलने का दावा किया गया है। इस मामले के सामने आने के बाद अदालत द्वारा मस्जिद के नवीनीकरण को रोक दिया गया था। तब ऐसा लगा कि हिंदू संगठन इस मुद्दे को नहीं उठाएंगे और पूरा मामला अब सुलझ गया है। लेकिन अब हिंदू संगठनों ने इस मामले को लेकर आगे बढ़ने का निणय्र लिया है। विहिप और बजरंग दल के लोग अब अब पुजारियों के पास जाकर पौराणिक आधार पर इस स्थान की सच्चाई का पता लगाने का प्रयास करेंगे। यदि पुजारियों ने पौराणिक साक्ष्यों के आधार पर इसे मस्जिद के स्थान पर मंदिर होने की पुष्टि कर दी तो हिंदू संगठनों के लोग इसे कानूनी प्रक्रिया के तहत हासिल करने के लिए आगे बढ़ेंगे। ऐसा माना जा रहा है कि यदि यह मामला आगे बढ़ा तो प्रशासन के समक्ष एक बड़ी चुनौती खड़ी हो जाएगी। मलाली मंगलुरु के बेहद नजदीक है। यह धार्मिक रूप से बहुत ही संवेदनशील क्षेत्र है। महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना (मनसे) ने दावा किया है कि पुणे में दो दरगाहों का निर्माण मंदिरों की भूमि पर किया गया है। मनसे के महासचिव अजय शिंदे ने दावा किया है कि ज्ञानवापी की तर्ज पर ही पुणे में पुण्येश्वर एवं नारायणेश्वर मंदिर की भूमि पर दो दरगाहों का निर्माण किया गया है। ये दरगाहें अलाउद्दीन खिलजी के शासनकाल में इन मंदिरों को तोड़कर बनाई गई थीं। अब मनसे इन दोनों मंदिरों की भूमि को मुक्त कराने के लिए अभियान चला रही है। शिंदे ने महाराष्ट्र के लोगों से इस अभियान में शामिल होने की अपील की है।

हिंद प्रशांत आर्थिक फ्रेमवर्क के जरिए चीन को तगड़ी चोट देने की तैयारी

नई दिल्ली। हिंद प्रशांत क्षेत्र में रणनीतिक सहयोग के लिए क्वाड के गठन के बाद इस क्षेत्र के दूसरे प्रमुख देशों को मिला कर एक बड़ा आर्थिक सहयोग संगठन बनाने की शुरुआत सोमवार को जापान की राजधानी में टोक्यो में हुई। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन और जापान के पीएम फुमियो किशिदा की उपस्थित में 13 देशों को मिला कर हिंद प्रशांत आर्थिक ढांचे (आइपीईएफ) बनाने की घोषणा की गई। संयुक्त घोषणा पत्र में बताया गया है कि यह फ्रेमवर्क कोरोना महामारी और यूक्रेन पर रूस के हमले से उत्पन्न मौजूदा कई समस्याओं, जैसे सप्लाई चेन में बाधा, महंगाई में वृद्धि, डिजिटल धोखाधड़ी में बढ़ोतरी, स्वच्छ ऊर्जा, से निपटने में आपसी सहयोग की दिशा सुनिश्चित करेगा। कई विशेषज्ञ इसे वैश्विक सप्लाई चेन में चीन पर विश्व की निर्भरता को कम करने के तौर पर भी देख रहे हैं। फ्रेमवर्क में भारत, अमेरिका, जापान, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, सिंगापुर, थाइलैंड, ब्रूनेई, दक्षिण कोरिया, मलेशिया, फिलीपींस, इंडोनेशिया और विएतनाम शामिल हैं। बैठक में मोदी, बाइडन और किशिदा व्यक्तिगत तौर पर मौजूद थे, जबकि दूसरे देशों के प्रमुखों ने वर्चुअल तरीके से हिस्सा लिया। पीएम मोदी क्वाड (अमेरिका, भारत, जापान व आस्ट्रेलिया) शिखर बैठक में हिस्सा लेने के लिए जापान गए हैं। क्वाड के सदस्य देशों के प्रमुखों की यह तीसरी बैठक मंगलवार को होगी। मंगलवार को पीएम मोदी की अमेरिकी राष्ट्रपति बाइडन से द्विपक्षीय बैठक भी होनी है। फ्रेमवर्क को लेकर बुलाई गई बैठक के बारे में भारतीय विदेश मंत्रालय ने कहा है कि भारत हिंद प्रशांत क्षेत्र को

समावेशी व सभी के लिए समान अवसर वाला क्षेत्र बनाने के लिए प्रतिबद्ध है। भारत मानता है कि आर्थिक सहयोग को बढ़ाना इस क्षेत्र में शांति, संपनन्ता व स्थायित्व के लिए जरूरी है। फ्रेमवर्क के बारे में कहा गया है कि इसकी स्थापना के बाद सदस्य देश आर्थिक सहयोग बढ़ाने और एक साझा लक्ष्य हासिल करने के लिए बातचीत शुरू करेंगे। बैठक को संबोधित करते हुए पीएम मोदी ने कहा कि फ्रेमवर्क इस क्षेत्र को वैश्विक आर्थिक विकास का इंजन बनाने की हमारी सामूहिक इच्छाशक्ति की घोषणा है। इतिहास इस बात का गवाह है कि भारत सदियों से इस क्षेत्र में कारोबारी गतिविधियों के केंद्र में रहा है। पीएम मोदी ने इस क्षेत्र की आर्थिक चुनौतियों के लिए साझा समाधान खोजने व रचनात्मक व्यवस्था स्थापित करने की बात करते हुए यह पेशकश भी की है कि भारत एक समावेशी हिंद प्रशांत आर्थिक फ्रेमवर्क के लिए सभी के साथ काम करेगा। एक टिकाऊ सप्लाई चेन की स्थापना के लिए उन्होंने 3 टी यानी ट्रस्ट (भरोसा), ट्रांसपैरेंसी (पारदर्शिता) और टाइमलीनेस (सामयिकता) का मंत्र भी दिया। यह फ्रेमवर्क किस तरह से आगे बढ़ेगा, इसका अभी कोई स्पष्ट दिशानिर्देश नहीं आया है। अमेरिकी प्रशासन इसे अपने कारोबारियों, श्रमिकों और अर्थव्यवस्था के लिए फायदेमंद बता रहा है लेकिन दूसरे देशों को किस तरह से फायदा होगा, यह स्पष्ट नहीं है। यह भी साफ नहीं है कि क्या सदस्य देश एक दूसरे को सीमा शुल्क में रियायत देंगे या उन्हें अमेरिकी बाजार में प्रवेश के लिए क्या प्रोत्साहन मिलेगा। लेकिन जिस तरह से उक्त सभी 13 देशों ने भविष्य में साझा तौर पर अपनी अर्थव्यवस्था को तैयार करने की बात कही है उससे साफ है कि इनके बीच चीन के बगैर एक वैश्विक आर्थिक व्यवस्था तैयार करने की तैयारी है। भारत के संदर्भ में अमेरिका ने कहा है कि वह इस फ्रेमवर्क का एक महत्वपूर्ण सदस्य होगा। वैसे यह संकेत है कि यह आर्थिक सहयोग व्यवस्था के निर्देश में ही चलेगा। 13 सदस्य देशों की वैश्विक अर्थव्यवस्था में 40 प्रतिशत हिस्सा है। अगले 30 वर्षों के दौरान इस हिस्से का दुनिया की अर्थव्यवस्था को आगे बढ़ाने में सबसे अहम भूमिका रहेगी।

बाइडन की मौजूदगी में पीएम मोदी का चीन को कड़ा संदेश

टोक्यो। जापान की धरती से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने चीन को साफ और कड़ा संदेश दिया है। अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन की उपस्थिति में मोदी ने कहा, भारत हिंद-प्रशांत महासागर क्षेत्र को मुक्त, खुला और समावेषी बनाए रखने

के लिए संकल्पबद्ध है। भारत सहयोगी देशों के साथ आर्थिक संबंध मजबूत कर क्षेत्र में सतत विकास, शांति और संपनन्ता का माहौल बनाने में विश्वास रखता है। प्रधानमंत्री मोदी ने यह बात सोमवार को इंडो-पैसीफिक इकोनोमिक फ्रेमवर्क फार प्रोस्पेरिटी (आइपीईएफ) अभियान की शुरुआत के मौके पर कही। अभियान की शुरुआत अमेरिकी राष्ट्रपति बाइडन ने की है। इसमें भारत और अमेरिका सहित कुल 12 देश शामिल हैं। आर्थिक ताने-बाने से चीन को नजदीक जाकर घेरने की तैयारी हो चुकी है। अमेरिका ने समान विचारधारा वाले देशों के साथ मिलकर स्वच्छ ऊर्जा, आपूर्ति श्रृंखला को मजबूत बनाने और डिजिटल ट्रेड को बढ़ावा देने का अभियान शुरू किया है। इस अभियान को इंडो-पैसीफिक इकोनोमिक फ्रेमवर्क फार प्रोस्पेरिटी का नाम दिया गया है। चीन की आक्रामक व्यापार नीति का जवाब माने जा रहे इस अभियान में भारत के साथ आस्ट्रेलिया, ब्रूनेई, इंडोनेशिया, दक्षिण कोरिया, मलेशिया, न्यूजीलैंड, फिलीपींस, सिंगापुर, थाइलैंड और वियतनाम हैं। जाहिर है इनमें सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाले देश भारत की मुख्य भूमिका होगी। समारोह में प्रधानमंत्री मोदी ने कहा, आइपीईएफ के जरिये हिंद-प्रशांत क्षेत्र वैश्विक आर्थिक प्रगति का नेतृत्व करेगा। सही मायने में इसमें शामिल 12 सदस्य देश दुनिया के आर्थिक विकास का इंजन बनेंगे। इसके लिए हमें मिलकर हिंद-प्रशांत क्षेत्र में मजबूत हो रही चुनौतियों का सामना करना होगा, अपनी पारदर्शी और नियमबद्ध कार्यशैली से उन चुनौतियों को खत्म करना होगा। प्रधानमंत्री मोदी ने आइपीईएफ के सभी सहभागी देशों के साथ समावेषी और लचीला रुख अपनाने और साथ चलने का संकल्प व्यक्त किया।

2019 में गुणा की जनता से हुई गलती

गुना। केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया के समर्थक और भाजपा नेता महेंद्र सिंह ने एक ऐसा बयान दिया है जिससे मध्य प्रदेश की राजनीति गरमा गई है। दरअसल महेंद्र सिंह सिसोदिया ने एक कार्यक्रम के दौरान कहा कि 2019 में गुना की जनता से गलती हुई। बता दें कि साल 2019 के लोकसभा चुनाव में कांग्रेस के टिकट पर ज्योतिरादित्य सिंधिया ने गुणा से भाजपा प्रत्यासी केपी यादव के खिलाफ चुना लड़ा, जिसमें सिंधिया को हार का सामना करना पड़ा। अब शिवराज सिंह सरकार में पंचायत मंत्री रहे महेंद्र सिंह के इस बयान ने भाजपा के अंदर ही हलचल पैदा कर दी है। महेंद्र सिंह के इस बयान पर गुणा के सासंद केपी यादव ने तीखी प्रतिक्रिया देते हुए रविवार को कहा, 'वह मजबूरी में बोल रहा हूं और वो (सिसोदिया) मूर्ख हैं कि वह इस तरह की बात कर रहे हैं। वे वरिष्ठ मंत्री हैं। वह जिस तरह का बयान दे रहे हैं..हर कार्यकर्ता को अब लगने लगा है कि बीजेपी ने इन्हें स्वीकार कर गलती की है। सजुला ने टिवटर पर सिंधिया समर्थक और एमपी एनर्जी डेवलपमेंट कारपोरेशन के अध्यक्ष गिरराज दंडोतिया का भी एक वीडियो भी पोस्ट किया, जिसमें उन्हें यह कहते हुए सुना जा सकता है, 'जब भी हम गुना और शिवपुरी में लोगों से मिलते हैं और सिंधिया के बारे में बात करते हैं, तो उनकी आंखें नम हो जाती हैं कि उन्होंने ऐसे नेता को कैसे हराया है। गौरतलब है कि सोमवार इस मामले में अचानक नया मोड़ आ गया जब गुणा में पार्टी की बैठक

(सिसोदिया) मुझसे ज्यादा अनुभवी हैं। उन्हें इस तरह नहीं बोलना चाहिए, लेकिन अगर कोई बुजुर्ग हर बार ऐसी गलतियां करता है तो उसके बारे में उसे बताना जरूरी हो जाता है। मैं भी मजबूरी में बोल रहा हूं। वह एक वरिष्ठ मंत्री हैं और उन्हें इस तरह नहीं बोलना चाहिए। वहीं कांग्रेस ने इस पूरे प्रकरण पर चुटकी ली है। मध्य प्रदेश कांग्रेस के प्रवक्ता नरेंद्र सलूजा द्वारा ट्विटर पर एक वीडीयो पोस्ट किया, जिसमें यादव कहते हुए सुना जा सकते हैं कि मैं में सिसोदिया और यादव दोनों एक साथ बैठकर एक दूसरे के कानों में फुसफुसाते नजर आए। उन्होंने एक-दूसरे को सम्मान के साथ संबोधित भी किया। सिसोदिया ने कहा, 'वह (यादव) मेरे छोटे भाई और परिवार के सदस्य हैं। यह बीजेपी का अंदरूनी मामला है और हम मिल बैठकर इसका समाधान करेंगे। बता दें कि इस मामले पर मध्य प्रदेश भाजपा प्रवक्ता पंकज चतुर्वेदी ने कहा कि यह भाजपा का आंतरिक मामला है और इसे पार्टी के भीतर ही सुलझा लिया जाएगा।

देश में बीते 24 घंटे में कोरोना के 1675 नए मामले

नई दिल्ली। देश में कोरोना संक्रमण के मामले में गिरावट देखने को मिली है। स्वास्थ्य मंत्रालय के मुताबिक, बीते 24 घंटे में कोरोना के 1,675 नए मामले सामने आए हैं। बता दें कि 6 दिन बाद कोरोना के दो हजार से कम मामले दर्ज किए गए हैं। कल यानी सोमवार को कोरोना के 2,022 मामले सामने आए थे। मंत्रालय ने बताया कि कोरोना से इस दौरान 31 लोगों की मौत भी हुई है। उधर, कोरोना के सक्रिय मामले 15 हजार से कम हो गए हैं। कोरोना के एक्टिव केस घटकर 14,841 हो गए हैं। वहीं, पाजिटिविटी दर 0.41 फीसद हो गई है। दरअसल, एक दिन पहले देश में कोरोना संक्रमण के 2,022 मामले सामने आए थे। वहीं, इस दौरान 2,099 लोग कोरोना से ठीक भी हुए हैं। इसके अलावा बीते 24 घंटे में कोरोना के कारण 46 मरीजों की मौत भी हुई थी। रिपोर्ट के अनुसार, अब तक कुल चार करोड़ 25 लाख से ज्यादा लोग कोरोना से ठीक हो चुके हैं, जबकि 5 लाख 24 हजार से ज्यादा लोगों की कोविड से मौत हो चुकी है।

विधवा प्रथा की आड़ में महिलाओं की स्वतंत्रता का हनन होना चाहिए बंद

सुथार। महाराष्ट्र सरकार ने कोल्हापुर जिले की हेरवाड़ पंचायत को नजीर मानते हुए विधवा प्रथा को राज्य में समाप्त करने का आदेश दिया है। दरअसल, पिछले दिनों हेरवाड़ पंचायत में विधवा प्रथा को खत्म करने का प्रस्ताव रखा गया था, जो सर्वसम्मति से पारित हो गया। जिसके बाद पंचायत के ग्रामीणों ने तय किया कि अब गांव में किसी पुरुष की मृत्यु हो जाती है तो उसकी पत्नी को चूड़ियां तोड़ने और माथे से सिंदूर मिटाने, मंगलसूत्र निकालने जैसे काम के लिए विवश नहीं किया जाएगा। उसे पहले जैसा जीवन जीने को प्रेरित किया जाएगा। यह सच है कि आधुनिक होते समाज में आज भी विधवाएं अलग-अलग कुप्रथाओं और सामाजिक प्रतिबंधों के कारण कष्टमय जीवन जीने को विवश हैं। पति की मृत्यु के बाद उसकी विधवा को बेरंग जीवन जीना पड़ता है। समाज उसे पहनने-ओढ़ने, साज-श्रृंगार से लेकर खानपान और किसी प्रसंग-पर्व में शामिल होने से रोकता है। विधवाओं की इस स्थिति के पीछे समाज का वह रूढ़िवादी सोच दोषी है, जो उनके जीवन को जटिल बनाकर उन्हें समाज से कटा हुआ महसूस कराता है। विधवाओं पर लगाई जाने वाली ये पाबंदियां उनके स्वतंत्र जीवन एवं उनके अवसरों की समानता के अधिकार में बाधा खड़ी करती हैं।

उत्तर भारत में आंधी के साथ बारिश का कहर, 39 की मौत इन राज्यों में आज भी तेज हवा के साथ पड़ेगी बौछारें

नई दिल्ली। दिल्ली-एनसीआर सहित उत्तर भारत के कई राज्यों के मौसम में बदलाव से तेज आंधी-तूफान के साथ जोरदार बारिश हुई। मौसम विभाग का अनुमान है कि आज भी दिल्ली, बिहार, झारखंड आदि जैसे राज्यों में तेज बारिश जारी रहेगी। मौसम विभाग के अनुसार, दिल्ली में आज का न्यूनतम तापमान 19 डिग्री सेल्सियस रहेगा, जबकि अधिकतम तापमान 34 डिग्री सेल्सियस तक जा सकता है। आज भी आसमान में बादल छाए रहेंगे और हल्की बारिश हो सकती है। मौसम विभाग का अनुमान है कि कुछ राज्यों में आंधी-तूफान की वजह से लोगों को मुश्किलें हो सकती है। मौसम विभाग के ताजा अपडेट के मुताबिक ओडिशा के कई स्थानों पर आज भारी वर्षा की संभावना है। हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड में अलग-अलग स्थानों पर बिजली की चमक, 40-50 किमी प्रति घंटे की गति से तेज हवाओं और ओलावृष्टि के साथ साथ बौछारें पड़ने की संभावना है। उत्तर प्रदेश में आंधी से कई जगह पेड़ और बिजली के खंभे उखड़ गए। इनकी चपेट में आने से प्रदेश में 21 लोगों की मौत हो गई। हरियाणा में झोपड़ी में सो रहे एक व्यक्ति की मौत हो गई और फरीदाबाद में करंट लगने से युवती की जान चली गई। पंजाब में चार, बिहार में पांच और मप्र में आंधी से पांच की जान चली गई। मैहर

में रोपवे की 28 ट्रालियों में 80 यात्री डेढ़ घंटे तक हवा में फंसे रहे। हरिद्वार में दो लोगों की मौत हो गई। इन राज्यों में आज और कल बारिश का अनुमान उत्तराखंड, पंजाब, हरियाणा-चंडीगढ़-दिल्ली, उत्तर प्रदेश और पूर्वी राजस्थान में भी आज अलग-अलग इलाकों में हल्की बारिश का अनुमान है। इसके अलावा, हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड में आज और कल और आज पंजाब में तेज बारिश हो सकती है। वहीं, जम्मू कश्मीर, हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड में भी आज बारिश होने का अनुमान है। अगले 2 दिनों के दौरान बिहार, झारखंड, पश्चिम बंगाल और ओडिशा में भी छिटपुट, मध्यम बारिश होने की संभावना है। उत्तर प्रदेश में मौसम विभाग ने आज यलो अलर्ट जारी किया है। यूपी में मौसम का मि?जाज अचानक बदलने से भीषण गर्मी के बीच लोगों ने राहत की सांस ली है। आज भी कई जिलों में सुबह से बादल छाए हुए हैं । इसी के साथ तेज आंधी और बारिश की संभावना है। सोमवार देर रात गाजियाबाद और फिरोजाबाद सहित कई जि?लों में हुई बारिश ने लोगों को तपती जलती गर्मी के बीच चैन की सांस दी है। मौसम विभाग के अनुसार अगले कुछ दिनों तक मौसम ऐसा ही रहने की उमीद है। (विस्तृत खबर पढ़ने के लिए यहां क्लिक करें) हिमाचल प्रदेश के लाहुल को छोड़ सभी जिलों में आंधी और ओलावृष्टि का अलर्ट। यलो अलर्ट हुआ जारी। कई क्षेत्रों में बारिश होने की संभावना। मौसम विभाग के अनुसार आंधी, बारिश व ओलावृष्टि से तापमान में और गिरावट आएगी। उत्तराखंड के पर्वतीय क्षेत्रों में जारी रहेगा बारिश व ओलावृष्टि का क्रम। ऊंची चोटियों पर बर्फबारी के आसार हैं। मौसम विज्ञान केंद्र के अनुसार मंगलवार को पहाड़ों में ओलावृष्टि और बारिश का यलो अलर्ट जारी किया गया है। कुमाऊं मंडल में कहीं-कहीं भारी बारिश हो सकती है। वहीं, मैदानी क्षेत्रों में 90 किमी प्रति घंटा की गति से अंधड़ चल सकता है।

नाजायज तमंचा बम सहित दो अभियुक्त धराये

(आधुनिक समाचार सेवा)
सरफराज अहमद

फूलपुर। फूलपुर थाना अध्यक्ष अमित कुमार के नेतृत्व में उप निरीक्षक विनय कुमार मिश्र द्वारा मय हमराह टीम के अभियुक्त गण साजिद अली पुत्र इसराइल निवासी नौडेरा स्वरूपपुर सुवंसा थाना फतनपुर प्रतापगढ़ के कब्जे से एक अदद तमंचा 315 बोर व एक अदद जिंदा कारतूस 315 बोर एवं दिनेश कुमार भारतीय पुत्र मंगरु भारतीय निवासी आटा थाना फूलपुर प्रयागराज के कब्जे से 6 अदद देसी नाजायज बम बरामद किया। बरामदगी व गिरफ्तारी के आधार पर अभियुक्त गण पर विभिनन्न अपराधिक धाराओं में थाना स्थानीय पर मुकदमा दर्ज कर विधिक कार्यवाही की गई। गिरफ्तारी टीम में उप निरीक्षक विनय कुमार मिश्र व उपनिरीक्षक सुभाष कुमार गौतम के अलावा हेड कांस्टेबल अविनाश चंद्र एवं पवन कुमार सोनी रहे।

देवर ने भाभी संग की अश्लीलता, मुकदमा दर्ज

(आधुनिक समाचार सेवा)
सरफराज अहमद

फूलपुर। कोतवाली अंतर्गत एक गांव में बीती रात 3 बजे एक परिवार की बहू पर उसके देवर ने रिश्ते को तार-तार करने की कोशिश की। परंतु काफी प्रयास के बाद उसे सफलता न मिली तो भाभी के दो अबोध बच्चों का खेल खत्म करने देने की धमकी दे डाली। कथित रूप से बच्चों का प्यार उनके जीवन को खतरा देख मां ने अश्लीलता पर चुप्पी साध ली। परंतु सोमवार सुबह कोतवाली में आपबीती बताई तो तत्काल पुलिस हरकत में आई और आरोपित देवर को बैठा लिया। महिला की तहरीर पर थाने में मुकदमा दर्ज करते हुए महिला को मेडिकल चेकअप हेतु भेजा गया।

यमुना में डूबा युवक

(आधुनिक समाचार सेवा)
सरफराज अहमद

फूलपुर। करेली इलाके में यमुना नदी में एक युवक डूब गया। यह घटना सोमवार की सुबह यमुना नदी के जलालपुर घाट पर हुई। राम सहाय निषाद पुत्र ऋषि सहाय धूमनगंज थाना क्षेत्र के भोपतपुर तारापुर का निवासी है। घाट पर मौजूद लोगों की सूचना पर संबंधित थाने की पुलिस मौके पर पहुंची। गोताखोरों को बुलाकर नदी में मजदूर की तलाश की जा रही है।

युवक ने लगायी फांसी

(आधुनिक समाचार सेवा)

फूलपुर। दारागंज के कच्ची सड़क निवासी राजन वाल्मीकि 42 ने रविवार देर रात फंदे से लटककर खुदकुशी कर ली। मौके पर पहुंची दारागंज पुलिस ने कमरे की तलाशी ली, लेकिन कोई सुसाइड नोट नहीं मिला। घरवाले भी कोई कारण नहीं बता सके। पुलिस का कहना है कि घरेलू कलह के चलते युवक ने खुदकुशी की है।

नाला सफाई के नाम पर की जा रही सिर्फ खानापूर्ति

(आधुनिक समाचार सेवा)

प्रयागराज। नगर निगम के वार्ड पूरा मनोहरदास क्षेत्र में नालों की सफाई का कार्य शुरू हुआ लेकिन नाला सफाई का कार्य देख कर ही अंदाजा लगाया जा सकता है की नाला सफाई के नाम पर सिर्फ खानापूर्ति की जा रही है! निहालपुर, अकबरपुर, करेली आदि क्षेत्रों में छोटे व बड़े नालों की सफाई व्यवस्था ना के बराबर रहती है! अब जब बारिश से पहले जलभराव की समस्या से बचने के लिए नाला सफाई कराने हेतु टेंडर प्रक्रिया से ठेकेदारों को काम दिया गया तो ठेकेदारों द्वारा नाला सफाई के लिए कर्मचारी तो जरूर लगाये गये लेकिन नाला सफाई की जगह सिर्फ ऊपर ऊपर कूड़ा निकाला जा रहा है जबकी नाले की तल्ली लगभग तीन फीट नीचे दबा हुआ है। ऐसे में बारिश के पानी का बहाव नाले के बाहर सड़को पर रहेगा और जबरजस्त जलभराव की समस्या भी उत्पनन्न होने का अंदेशा है सामाजिक कार्यकर्ता अब्दुल सलाम ने आरोप लगाया की क्षेत्रीय पार्षद और ठेकेदारों के गठजोड़ से नाला सफाई की जगह सिर्फ खानापूर्ति कर निगम के धन की बर्बादी और लूट खसोट चल रही है।

फूलपुर तहसील मुख्यालय पर किसानों का अनिश्चितकालीन धरना प्रदर्शन

(आधुनिक समाचार सेवा)
सरफराज अहमद

फूलपुर। भारतीय किसान यूनियन भानु के मंडल अध्यक्ष प्रयागराज बबलू दुबे ने किया ऐलान। क्षेत्रीय किसानों की समस्याओं का समाधान ना होने से किसानों में आक्रोश। समस्याओं का निस्तारण ना होने से किसानों ने अनिश्चितकालीन धरना प्रदर्शन करने का आवाहन 30 मई को किया है। किसान नेता बब्लू दूबे की अगुवाई में फूलपुर तहसील मुख्यालय पर किसान धरना प्रदर्शन करने को तैयार। किसान नेता बबलू दुबे से पूछे जाने पर बताया गया कि किसानों की समस्या काफी समय से लंबित है। लंबित होने के कारण कई बार उपजिलाधिकारी फूलपुर व तहसीलदार फूलपुर से स्वयं मुलाकात कर शिकायत की गई। लेकिन एक नही सुनी गयी। बीते छः महीने से आश्वासन पर आश्वासन मिलता रहा। निस्तारण ना होने से क्षेत्रीय किसानों के साथ एक बैठक की गई। जिसमें 30 मई से अनिश्चितकालीन धरना प्रदर्शन का आवाहन किया गया है। जब तक किसानों की समस्या का निस्तारण नहीं होगा। तब तक सभी किसान धरने पर बैठे रहेंगे। अब अश्वासन नहीं, निस्तारण चाहिए।

ट्रक की टक्कर से घायल की हुई मौत

(आधुनिक समाचार सेवा)
सरफराज अहमद

फूलपुर। रविवार रात्रि 10 बजे ओवरलोड ट्रक की टक्कर से थाना सराय ममरेज के किशन दासपुर निवासी अभिषेक पाल पुत्र श्याम राजपाल गंभीर रूप से घायल हो गया था। सूचना पर पहुंची फूलपुर पुलिस ने ट्रक को हिरासत में लेकर थाने पर खड़ी कर दिया। वहीं घायल अभिषेक को सीएचसी फूलपुर भेजा वहां से गंभीर अवस्था में उसे एस आर एन रिफर कर दिया गया। जहां इलाज के दौरान अभिषेक पाल की सोमवार दोपहर मौत हो गई। कोतवाली पुलिस ने ट्रक तेज रफ्तार व लापरवाही से चलाने का मुकदमा दर्ज किया है।

नगर पंचायत सराय अकिल में अतिक्रमण पर चला बाबा का बुलडोजर

(आधुनिक समाचार सेवा)

फूलपुर। उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा सड़क सुरक्षा को सवीच्च प्राथमिकता को देखते हुए नगर काम किया गया।जिस प्रकार से जरूरत पड़ी उस हिसाब से अतिक्रमण हटवा कर सड़क को साफ कराया गया।साथ ही

पंचायत सराय अकिल में अतिक्रमण को हटाने के लिये बुलडोजर चलाना पड़ा।नगर पंचायत सराय अकिल ई ओ लाल जी यादव ने जानकारी दिया कि सरकार की मंशा पर पहले लाऊड स्पीकर द्वारा अतिक्रमण कारियो को सूचित कराया गया था।लेकिन कुछ अतिक्रमणकारी अभी तक अतरिक्रमण नही हटाए और सड़क जाम किये हुए है।जिसपर आज सराय अकिल थाना प्रभारी निरीक्षक सुनील कुमार सिंह के साथ मय फ़ोर्स सहित अतिक्रमण हटवाने का साथ थाना प्रभारी निरीक्षक यह भी कहा कि अगर अतिक्रमण हटवाने के बावजूद यदि अतिक्रमणकारी नही मानेंगे तो सख्त से सख्त उनके खिलाफ कार्यवाही की जाएगी। वोट बैंक को बढ़ावा देने के कारण नही होती है कार्यवाही नगर पंचायत का अतिक्रमण नगर अध्यक्ष के कारण नही हट पाता है।जो भी नगर पंचायत अध्यक्ष बना वह अपना वोट बैंक खराब न हो जिसके कारण अतिक्रमण कारियो का मनोबल बढ़ा रहता है।और आने जाने वालों को सड़क जाम को झेलना पड़।

प्रयागराज : चौक में अपहृत युवक की हत्या कर फरार 4 आरोपियों के ऊपर 25 हज़ार का इनाम घोषित

(आधुनिक समाचार सेवा)
विलास गुप्ता

प्रयागराज । क्ष्अतरसुइया थाना क्षेत्र के क्ष्रानीमंडी के रहने वाले जीतेंद्र केसरवानी के बेटे आदर्श केसरवानी की एक अप्रैल की रात हत्या कर दी गई थी। अब इस जाएगा । मुट्ठीगंज के रहने वाले मोनू सारस्वत रात में आदर्श को अपने घर बुलाकर ले गया और वहीं अपने साथियों के साथ गला दबाकर मार डाला। इसके बाद रात में कार से उसका शव मिर्जापुर के ड्रमंडगंज की पहाडियों से नीचे फेंक

मामले में फरार चार आरोपियों पर पुलिस ने इनाम घोषित किया है। एसएसपी अजय कुमार ने फरार अभियुक्त कोमल सरस्वत, अंशु गुप्ता, सुमित चौरसिया और नयन वैश्य के खिलाफ 25 हजार प्रति व्यक्ति का नगद पुरस्कार की घोषणा की है। इनकी जानकारी देने वालों को यह राशि इनाम स्वरूप दिया दिया। उधर, घरवालों को इस बारे में कुछ भी नहीं पता था। पिता ने अपहरण की रिपोर्ट दर्ज कराई थी। पूछताछ में यह खुलासा हुआ था कि आदर्श ने मोनू की पतनी के बारे में कुछ छीटाकशी की थी। इसी कारण दोनों में विवाद हुआ और मोनू ने दोस्तों के साथ मिल उसकी हत्या कर दी।

पत्रकारों के हित का कार्य करेगा उत्तर प्रदेश जर्नलिस्ट्स एसोसिएशन अखिल नारायण सिंह

आधुनिक समाचार सेवा
डॉ0रणजीत सिंह

प्रतापगढ़। यू.पी. जर्नलिस्ट्स एसोसिएशन (उपजा) प्रतापगढ़ की एक बैठक नगर स्थित होटल सिद्धार्थ में जिलाध्यक्ष अखिल नारायण सिंह की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई।बैठक को संबोधित करते हुए जिला अध्यक्ष ने कहा कि पत्रकारों के हित का कार्य जारी रहेगा।शीघ्र ही संगठन का शपथ ग्रहण समारोह आयोजित किया जाएगा।बैठक का संचालन महामंत्री डॉ. अमित पाण्डेय ने किया।बैठक में उपजा के प्रदेश संगठन मंत्री संतोष भगवन बतौर मार्गदर्शक मौजूद रहे।बैठक में उपस्थित सदस्यों ने उपजा की प्रति माह नियमित बैठक होने पर चर्चा की गई।सर्वसम्मति से यह निणन्य लिया गया कि उपजा के पदाधिकारियों द्वारा नियमित रूप से प्रति माह बैठक का आयोजन किया जाएगा।यदि पदाधिकारी बैठक के प्रति उदासीनता प्रदर्शित करते हैं, तो ऐसे पदाधिकारी को निष्क्रिय माना जाएगा। बैठक में मार्गदर्शक अमितेन्द्र श्रीवास्तव ने उपजा के सभी सदस्यों का सामूहिक बीमा कराए जाने का प्रस्ताव रखा, जिसका सभी सदस्यों ने स्वागत किया।सर्वसम्मति से निणन्य लिया गया कि सभी सदस्यों का 2 लाख रुपये का सामूहिक बीमा कराया जाएगा।रवि प्रकाश सिंह चंदन, आशीष कुमार शुक्ल, सुरेश बहादुर मौर्य व सलिक राम मौर्य ने उपजा की सदस्यता ग्रहण करने हेतु आवेदन किया जिस पर सर्वसम्मति से सदन द्वारा उक्त चारों पत्रकार साथियों को उपजा की प्राथमिक सदस्यता दी गई । बैठक में गिरीश ओझा, आर.बी. सिंह, संतोष कुमार पांडेय, सम्पूर्णानन्द मिश्र, हरिनाथ मिश्र, राजेन्द्र कुमार त्रिपाठी, राजमणि पांडेय, धीरेंद्र कुमार तिवारी, अमित शुक्ल, गिरीश पांडेय, गिरजा रमण मिश्र, डॉ. क्षितिज कुमार श्रीवास्तव, इरफान अली, बृजेन्द्र सिंह बबलू, मनीष कुमार पांडेय, राम सिंह, दोस्त मोहम्मद।

नैनी औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र, प्रयागराज

भारत सरकार की कौशल विकास योजना में अगस्त 2021 से प्रारम्भ हो रहे सत्र के लिए निम्नलिखित ट्रेडों में दाखिले के लिए आवेदन पत्र आमंत्रित ट्रेड प्रवेश योग्यता तथा प्रस्तुत विभिन्न पाठ्यक्रमों की अवधि इस प्रकार है-

क0सं0	ट्रेड का नाम	ट्रेड की अवधि	योग्यता
1.	कोपा	1 वर्ष	12वीं पास
2.	फिटर	2 वर्ष	10वीं पास
3.	बेसिक कम्प्युटिंग	6 माह	साक्षर
4.	डाटा इंट्री ऑपरेटर	6 माह	10वीं पास
5.	फायर प्रिवेन्शन एण्ड इंडस्ट्रियल सेफ्टी	6 माह	8वीं पास
6.	सेक्योरिटी सर्विस	6 माह	8वीं पास
7.	कम्प्यूटर हार्डवेयर एण्ड एसेम्बली	1 वर्ष	10वीं पास
8.	सर्टिफिकेट इन कम्प्युटर एप्लीकेशन	1 वर्ष	10वीं पास
9.	इलेक्ट्रिकल टेक्निशियन्स	1 वर्ष	8वीं पास
10.	रेफरिजरेटर एण्ड एयर कन्डिसनिंग	1 वर्ष	8वीं पास
11.	योगा असिस्टेन्ट	1 वर्ष	10वीं पास
12.	वेल्डिंग टेक्नोलॉजी	1 वर्ष	8वीं पास
13.	कम्प्यूटर टीचर ट्रेनिंग कोर्स	1 वर्ष	10वीं पास

1.प्रमाण पत्रः- सफल प्रशिक्षणार्थियों को भारत सरकार द्वारा प्रमाणपत्र दिए जाते है, जो केंन्द्रीय सरकार एवं राज्य सरकार के अधीनस्थ पद एवं सेवा में भर्ती के लिए मान्य है। **2.चयन की प्रक्रियाः-** इस वर्ष कोविड-19 महामारी के चलते सभी सीटों पर दाखिले पहले आओ-पहले पाओ के आधार पर किये जायेंगे। **3.आयु सीमाः-** उम्मीदवारों की आयु 1 अगस्त 2021 को न्यूनतम 14 वर्ष से अधिक होनी चाहिए। **4.आवेदन कैसे करेः-** आवेदन फॉर्म संस्थान की वेबसाइट पर जाकर ऑनलाइन भरे जा सकते है तथा संस्थान के कार्यालय से निःशुल्क भी प्राप्त किया जा सकता है। **5.**आवेदन फॉर्म भरते समय पंजीकरण शुल्क रूपये 2665/- का भी देय होगा। **6.कक्षायें/उपस्थितिः-** छात्रों की उपस्थिति में दो भाग शामिल है- थ्योरी क्लास और ट्रेनिंग इस वर्ष कोविड-19 स्थिति के कारण सभी छात्र संस्थान द्वारा आयोजित ऑनलाइन कक्षाओं में भाग लेंगे तथा उसके लिए संस्थान में छात्रों की भौतिक उपस्थिती की अनिवार्यता नहीं है, जब तक कोविड-19 की वर्तमान स्थिति समाप्त नहीं हो जाती है। प्रशिक्षण के लिए छात्रो को प्रधानाचार्य की अनूमति के साथ, अपने सम्बंधित मूल स्थानों पर प्रशिक्षण पूरा करने की अनुमति है। परीक्षा के समय छात्रों की उपस्थिति अनिवार्य होगी। **7.छात्रवृत्तिः-** दाखिले के उपरांत शुल्क प्रतिपूर्ति के लिए सभी ट्रेडों में आरक्षित श्रेणी के अभ्यर्थी, जिनके पास आय प्रमाण पत्र एवं सम्बन्धित दस्तावेज मौजूद हो वे सभी भारत सरकार की छात्रवृत्ति योजनाओं में आवेदन कर सकते है। **8.** अधिक जानकारी के लिए संस्थान की वेबसाइटः- **www.nainiiti.com** देखें। **9.दाखिले की अंतिम तिथिः-** 30 मई 2022

सम्पर्क सूत्र :- 0532-2695959, 9415608710, 9807278552, 9415608790

जनपद में जलवायु मित्र ग्राम पंचायत प्रतियोगिता का होगा आयोजन-जिलाधिकारी

आधुनिक समाचार सेवा
डॉ0रणजीत सिंह

प्रतापगढ़। जिलाधिकारी डा0 नितिन बंसल ने बताया कि पर्यावरण वन एवं जलवायु विभाग द्वारा जलवायु परिवर्तन के शमन एवं अनुकूलन सम्बन्धी कार्यो की गति प्रदान किये जाने के उद्देश्य से ''उत्तर प्रदेश क्लाइमेट चेंज ऐक्शन प्लान'' का निरूपण एवं क्रियान्वयन का कार्य किया जा रहा है। जलवायु सम्बन्धी दुष्प्रभावों को न्यून किये जाने हेतु ग्राम पंचायतों की अग्रणी भूमिका होगी।इसके दृष्टिगत पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग के स्तर से सम्पूर्ण प्रदेश के अन्तर्गत जलवायु परिवर्तन कार्यो को ग्राम पंचायतों के स्तर पर प्रारम्भ कराये जाने हेतु जागरूकता कार्यक्रम चलाये जा रहे है। उन्होंने बताया कि जलवायु परिवर्तन के शमन एवं अनुकूलन सम्बन्धी उत्कृष्ट कार्य करने वाली ग्राम पंचायतों को चिह्नित किये जाने के उद्देश्य से ''जलवायु मित्र ग्राम पंचायत प्रतियोगिता-2022'' आयोजित की जायेगी। इस प्रतियोगिता के अन्तर्गत जलवायु परिवर्तन की दृष्टि से जनपद में एक-एक जलवायु मित्र ग्राम पंचायत का चयन किया जायेगा तथा इन चयनित ग्राम पंचायतों को ''क्लाइमेट स्मार्ट'' ग्राम पंचायतों के रूप में विकसित किये जाने हेतु वृहद कायन्योजना निरूपित करायी जायेगी। चयनित ग्राम पंचायतों को राज्य स्तर पर सम्मानित भी किया जाना प्रस्तावित है। जलवायु मित्र ग्राम पंचायत प्रतियोगिता-2022 का आयोजन आनलाइन के माध्यम से आयोजित करायी जा रही है जिसकी अन्तिम तिथि 29 मई 2022 है। प्रतियोगिता हेतु ग्राम पंचायतों द्वारा आनलाइन आवेदन पत्र भरे जा रहे है। जलवायु मित्र ग्राम पंचायत प्रतियोगिता 2022 हेतु वेबसाइट पूेः// ल्ज्म्म् म.दु/म्न् पर आवेदन कर सकते है।

रेलवे सुरक्षा बल ने लाखों नकदी समेत शातिर चोरो के गिरोह को दबोचा,यात्रियों के चोरी हुए आभूषण को भी किया बरामद

(आधुनिक समाचार सेवा)
शीतल निर्भीक ब्यूरो

बलिया।,23 मई रेलवे सुरक्षा बल, पूर्वोत्तर रेलवे द्वारा यात्रियों को सुरक्षा प्रदान करने का निरन्तर प्रयास किया जाता है। इसी क्रम में 22 मई, 2022 को ऑपरेशन यात्री सुरक्षा के अन्तर्गत रेलवे सुरक्षा बल पोस्ट वाराणसी सिटी तथा जीआरपी वाराणसी सिटी के

द्वारा वाराणसी सिटी रेलवे स्टेशन पर यात्री आपरेशन सुरक्षा के अन्तर्गत श्रीमती अंजू लता द्विवेदी प्रभारी निरीक्षक वाराणसी सिटी के निर्देशन में संयुक्त रुप से चलाए गए अभियान में उपनिरीक्षक सुधीर कुमार राय साथ स्टाफ वाराणसी सिटी रेलवे स्टेशन की गई कार्यवाही में अपराधिक गतिविधियों की निगरानी में मशगूल प्लेटफार्म नंबर 2 के पूर्वी छोर पर यात्रियों का सामान की चोरी करने वाले दो शातिर चोरों को जीआरपी के साथ संयुक्त रूप से घेराबंदी करके समय 6:35 बजे पकड़ लिया गया दोनों व्यक्तियों ने रेल गाड़ी से यात्री सामानो की चोरी करना स्वीकार किया। इस दौरान सुरक्षा बलों द्वारा पकड़े गए व्यक्तियों का नाम राजू उर्फ पेलू /द भरत डोम निवासी भदऊ चुंगी रेलवे कॉलोनी झोपड़ी थाना आदमपुर जनपद वाराणसी उम्र 22 वर्ष दूसरा मोहम्मद जावेद पिता मोहम्मद इस्माइल निवासी लाट भैरव सरैया थाना जैतपुरा जिला वाराणसी 39 /377 उम्र करीब 25 वर्ष है। राजू के पास डायजेपाम नशीला पाउडर व रुपया 45000 नगद जिसमें ?500 की 90 नोट व मोहम्मद जावेद के पास 43500 रुपए जिसमें ?500 के 87 नोट दोनों व्यक्तियों ने इंटरसिटी एक्सप्रेस से महिला का पर्स छीनने,डाईजापाम नशीला पाउडर खिलाकर यात्री का सामान लूटनास्वीकार किया तथा चोरी किये गये सामानों को बेचने से प्राप्त पैसे कुल ?88500 नगद बरामदगी समेत इंफिनिक्स मोबाइल एक अदद चोरी का एक टुकड़ा जंजीर गोल्डन कलर वह एक लेडीज पर्स का हैंडल बरामद किया गया जिन्हें जीआरपी मऊ पर पूर्व में दर्ज भे हद13/22 अंतर्गत धारा 380 आईपीसी 16/22 धारा 392 आईपीसी वि हद 28 / 22 धारा 8/ 21/22 एनडीपीएस एक्ट थाना जीआरपी मऊ के मामले में मुकदमा पंजीकृत किया गया उक्त मुकदमे की जांच चौकी प्रभारी प्रमोद कुमार शुक्ल द्वारा की जा रही है। अभियुक्तो के निशानदेही पर चोरीतठ, महिला का पर्स भी बरामद किया गया। इसी क्रम में 22 मई को ऑपरेशन यात्री सुरक्षा के अन्तर्गत रेलवे सुरक्षा बल पोस्ट सिवान एवं ट्रेन स्कोर्ट पार्टी गाडी सं.12554 द्वारा टीईसी गोरखपुर एस्कोर्ट पार्टी के साथ संयुक्त रुप से चेकिंग के दौरान मैरवा सिवान के मध्य गाड़ी संख्या 12554 वैशाली एक्सप्रेस में कोच नंबर बी/4 के दरवाजे के पास एक व्यक्ति अमन वर्मा स्वर्गीय राजेश वर्मा निवासी नोनियारी टोला वार्ड नंबर 25 देवरिया उम्र 24 वर्ष के पास से पीली धातु के पाये जाने पर प्रभारी निरीक्षक सीवान को प्राप्त सूचना पर आरपीएफ पोस्ट सीवान एवं ट्रेन के स्कोर्ट पार्टी के संयुक्त कार्रवाही में उक्त के पास से मिले बैग के चेकिंग के दौरान लगभग कुल ग्राम 1137.74 ग्राम सोने का आभूषण (अंगूठी) जिसकी कीमत लगभग 5200000/ ? है के साथ पकड़ा गया। इस दौरान मौके पर उपरोक्त व्यक्ति द्वारा कोई भी संबंधित कागजात उक्त आभूषण के संबंध में प्रस्तुत नहीं किया गया। लिहाजा उपरोक्त आभूषण के साथ उपरोक्त व्यक्ति को आरपीएफ पोस्ट सिवान पर डिटेन कर अग्रिम कार्यवाही अमल में लाते हुए पूछताछ किया गया तो पकड़े गए व्यक्ति द्वारा बताया गया की उक्त माल आनंद कुमार सोनी एवं अजय कुमार सोनी, सिवान का है। बताया जाता है कि सूचना पर उपरोक्त दोनों व्यक्ती पोस्ट पर आये।प्रभारी निरीक्षक अजय कुमार यादव, उप निरीक्षक संजय कुमार पांडे,उप निरीक्षक सुरेश चंद पांडे, हेड कांस्टेबल कुमार प्रिय रंजन तथा कांस्टेबल विजय कुमार यादव सभी आरपीएफ पोस्ट सिवान एवं सहायक उपनिरीक्षक प्रमोद कुमार सिंह साथ स्टाफ सभी टीईटी/गोरखपुर पूर्व के समक्ष सातों पैकेट को खोलकर उसमें रखे पीले धातु का आभूषण अंगूठी का तौल किया गया तो 1137.740 ुग्र. लगभग एवं सभी की गिनती की गई तो 874 नग पाया गया है जिस संबंध में फर्द की कार्रवाई की गई है। कार्यवाही के दौरान उपरोक्त आभूषण के ओनर द्वारा कागजात प्रस्तुत किया गया। इस संबंध में एडीआईटी/ इनकम टैक्स विभाग मुजफ्फरपुर से संपर्क किया गया है रविवार होने के कारण आज संबंधित विभाग के स्तर से कार्यवाही अमल में नहीं लाई जा सकी,जबकि उनके ही निर्देशानुसार अग्रिम कार्यवाही अमल में लाई जा रही है। वर्तमान समय में व्यक्तिगत बंधपत्र तैयार कर संदिछ्ध को छोडा गया है। अशोक कुमार जनसंपर्क अधिकारी वाराणसी के अनुसार इसी क्रम में 22 मई को ऑपरेशन यात्री सुरक्षा के तहत रेलवे सुरक्षा बल पोस्ट छपरा जंक्शन प्रभारी निरीक्षक मुकेश कुमार सिंह, उप निरीक्षक प्रमोद कुमार एवं सीआईबी/रेसुबल/छपरा उप निरीक्षक संजय कुमार राय, रारेपु/ छपरा स.अ.नि. मंजू देवी साथ स्टाफ द्वारा छपरा जंक्शन पर निगरानी व चेकिंग के दौरान यात्री सामानों की चोरी करने वाले एक शातिर चोर को यात्रियों से चोरी किये गए 01 अदद म्ब्थ् मोबाइल व 01 अदद चांदी के पायल के साथ समय 11.05 बजे गिरफ्तार किया गया। बरामद मोबाइल को ट्रेन संख्या - 13106 बलिया-सियालदह एक्सप्रेस के रेलयात्री व पायल को किसी अन्य ट्रेन के यात्री से चोरी किया गया था।

रिकवरी का दिखाया डर 2700 राशनकार्ड सरेंडर

बलिया। खाद्य एवं रसद विभाग के आयुक्त सौरभ बाबू ने बीते 11 मई को पत्र जारी किया था कि जो लोग अपात्र हैं, वह राशनकार्ड आपूर्ति कार्यालय या तहसीलों पर वापस कर दें। इस आदेश के अनुपालन में प्रशासन ने फरमान जारी कर दिया कि जो अपात्र लोग 31 मई तक राशनकार्ड वापस नहीं करेंगे, उनके खिलाफ रिकवरी की कार्रवाई की जाएगी। कार्ड जारी होने से अब तक आवंटित राशन की रकम बाजार की दर से वसूल की जाएगी। इस आदेश के बाद जिले में हलचल बढ़ गई। अपात्र लोग कार्ड वापस करने के लिए पहंचने लगे। अब तक कुल 2700 कार्ड सरेंडर हो चुके हैं। अब आयुक्त ने अपने आदेश पर यूटर्न लिया है। कहा कि उन्होंने वसूली की कोई बात नहीं कही थी। कोई रिकवरी

नहीं की जाएगी। उनके इस स्पष्टीकरण के बाद कार्ड जमा करने की रफ्तार धीमी पड़ गई है। फिलहाल रिकवरी का डर अपात्रों के सिर पर चढ़कर खूब बोला। जिनके घरों में एसी, जनरेटर और चार पहिया वाहन समेत कई सामान है, वह सभी खुद राशन कार्ड वापस करना शुरू कर दिए थे। यह अपात्र लोग सालों से गरीबों का निवाला खा रहे थे। अब अधिकारी ढीले पड़ गए हैं। अपात्रों से आग्रह की भूमिका में खड़े दिख रहे हैं।

फल व बालू की दुकानें लगाकर सड़क पर किए कब्जा

चितबड़ागांव (बलिया)। चितबड़ागांव-मोहम्मदाबाद मुख्य मार्ग पर बाजार के आस-पास लगभग एक किलोमीटर की दूरी में मुख्य सड़क के आधा भाग पर फलों के ठेले व बालू की दुकानें लगाकर दुकानदारों द्वारा कब्जा जमा लिया गया है। मुख्य मार्ग पर बाजार के आस-पास न सिर्फ सड़क की पटरियों पर अवैध कब्जा है बल्कि पक्की सड़क के भी कुछ भाग पर ठेले व बालू के दुकानदार कब्जा किए हैं। जाम की समस्या के साथ ही आए दिन दुर्घटनाएं भी होती हैं। अवैध कब्जा हटाने के मुख्यमंत्री के फरमान का यहां कोई असर होता नहीं दिखता। आम जनता को हो रही परेशानी से न तो चितबड़ागांव पुलिस को कुछ लेना देना है ।

आश्वासन से नहीं चलेगा काम, शिक्षक समस्याओं का हो समाधान

आजमगढ़। अब आश्वासन से काम नहीं चलेगा। लंबित समस्याओं के समाधान से कम मंजूर नहीं। अभी तो यह क्रमिक अनशन है लेकिन अब यह सत्याग्रह का रूप लेगा। जेडी कार्यालय के कर्मचारियों की

मनमानी नहीं चलेगी। यह बातें उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षक संघ के जेडी कार्यालय परिसर में चल रहे धरने के 13वें दिन सोमवार को शिक्षक नेताओं ने कही। प्रधानाचार्य दिनेश प्रताप सिंह ने कहा कि विद्यालयों की वेबसाइट, छात्रों की ई-मेल आइडी एवं छात्रों की बायोमीट्रिक उपस्थिति में ढेर सारी व्यवहारिक एवं तकनीकी खामियां है। जिनके निवारण के लिए संगठन संगठन जिला से लेकर प्रांतीय स्तर तक पहल करे। शासन को यह बताए कि यह एक अव्यवहारिक निणय्य है। इससे छात्र-छात्राओं का नुकसान होगा। इसे तत्काल वापस लिया जाए। अध्यक्षता मंडल अध्यक्ष अमित श्रीवास्तव व संचालन जिला मंत्री पंकज कुमार सिंह ने किया। संरक्षक रामजन्म सिंह, अबरार अहमद, डा. जयशंकर मिश्र, अमरनाथ मिश्र, गिरीश नारायण सिंह, रविद्र सिंह आदि थे।

आग में छह रिहायशी झोपड़ियां राख, बकरी मरी

दुबहड़ (बलिया)। शिवरामपुर ग्राम सभा के मोहन छपरा में अज्ञात कारणों से लगी आग में छह रिहायशी झोपड़ियां जलकर राख हो गयीं। वहीं एक बकरी जल मरी व दूसरी झुलस गई। घटना मंगलवार दोपहर की है। शिवकुमार गोंड की रिहायशी झोपड़ी से अचानक धुआं निकलने लगा। कुछ ही देर में पास के कमलेश गौंड, अवधेश गोंड, उमाशंकर, वीरेंद्र व नंद गोंड की झोपड़ियां आग के आगोश में आ गयीं। घटना में शिव कुमार की एक बकरी जल मरी व दूसरी झुलस गई। वहीं झोपड़ियों में रखा सभी सामान जलकर राख हो गया। घटना के दौरान घर के पुरुष वर्ग शहर में चले गए थे, केवल महिलाएं ही थी। ग्रामीणों ने किसी तरह आग पर काबू पाया। दुबहड़ थानाध्यक्ष भी मौके पर पहुंच गये।

करोड़ों की लागत से तैयार बस अड्डा बना खेल मैदान

मार्टीनगंज (आजमगढ़)। सपा सरकार में कुशल गांव में करोड़ों की लागत से बना रोडवेज बस अड्डा यात्रियों के काम तो नहीं आ

रहा, लेकिन आसपास के बच्चों के लिए खेल मैदान जरूर बन गया है। ढोल-नगाड़े के साथ सपा सरकार में इसका लोकार्पण हुआ, तो पहले दिन पांच बसों को लखनऊ, बनारस, कानपुर, जौनपुर के लिए रवाना किया गया। जनता में आस जगी कि पिछड़े इलाके में अब लोगों को दूर-दराज के सफर में दिक्कत नहीं आएगी, लेकिन कुछ ही दिनों बाद सपना चकनाचूर हो गया। उसके बाद किसी जनप्रतिनिधि ने इस मुद्दे को उठना उचित नहीं समझा। आज बस की जगह यहां बच्चे बल्ला चलाते हैं। वहां खेलने वाले दीपक, प्रदीप विश्वकर्मा, साबिर, कुलदीप विश्वकर्मा, लवटू, संदीप, नितिन, राजेश, कमलेश ने बताया कि शायद इसे खेल मैदान बना दिया गया होता, तो क्षेत्र की प्रतिभाओं को निखरने का मौका मिलता। बस अड्डे पर जो नंबर लिखा था वह मिलाने पर बंद बता रहा था। मौके पर मिले एक पीआरडी जवान ने बताया कि हमारी ड्यूटी बिल्डिग की रखवाली के लिए लगाई गई है।

गुस्साए उपभोक्ताओं ने यूबीआइ शाखा के बाहर किया प्रदर्शन

पवई (आजमगढ़)। जेनरेटर न होने के कारण आए दिन दुश्वारियां झेल रहे उपभोक्ताओं का गुस्सा सोमवार को यूबीआइ प्रबंधन के खिलाफ फूट पड़ा। नाराज उपभोक्ताओं ने प्रदर्शन कर विरोध जताया। आरोप लगाए कि बिजली की मुकम्मल व्यवस्था नहीं होने के कारण लेन-देन ठप होने से उपभोक्ताओं को निराश लौटना पड़ता है। महीनों से एक जैसी स्थिति होने के बाद भी जिम्मेदारों की तंद्रा टूट नहीं पा रही है। सोमवार को एक दिन की बंदी के बाद पवई शाखा खुली तो उपभोक्ताओं की भीड़ उमड़ पड़ी। बैंक का कार्य शुरू हो पाता कि उससे पूर्व ही बिजली गुल हो गई। जेनरेटर न होने के कारण सिस्टम ने काम करना बंद कर दिया। बिजली आई भी तो ट्रिपिग के कारण आंख मिचौली की स्थिति ही बनी रही। कछरा, जल्दीपुर, बस्ती, लग्गूपुर, भीमलपुर शाहमर्दानपुर सहित अनेक गांवों से पहुंचे उपभोक्ताओं को लेनदेन न होने की भनक लगी तो भड़क उठे। कुछ ऐसा कि बैंक के बाहर आकर प्रदर्शन कर विरोध जताने लगे। कहा कि जेनरेटर न होने का दंश उपभोक्ताओं को झेलना पड़ रहा है। वृद्धा पेंशन, प्रधानमंत्री

आवास, मनरेगा सहित कई योजनाओं में मिलने वाली धनराशि अटक जा रही है। व्यक्तिगत तौर से मकान निर्माण, कृषि कार्य सहित लोगों दूसरे कार्य रुपये के अभाव में ठहर जाते है। बैंक प्रबंधक श्रीराम बिरला का कहना है कि बिजली की अधिक कटौती होने से यूपीएस चार्ज नहीं हो पा रहा है। उच्चाधिकारियों से जनरेटर लगाने के लिए कहा गया है।

जनसम्पर्क विभाग पूर्वोत्तर रेलवे गोरखपुर

अब पूर्वोत्तर रेलवे प्रशासन ने यात्रियों की यात्रा को सुखद बनाने के लिए उठा रहा है नये-नये कदम

(आधुनिक समाचार सेवा)
शीतल निर्भीक ब्यूरो

गोरखपुर। पूर्वोत्तर रेलवे यात्री प्रधान रेलवे है और यात्री संतुष्टि इसका परम ध्येय है। रेलवे प्रषासन यात्रियों की यात्रा को सुखद बनाने के लिए नित नये-नये कदम उठा रहा है। इसके लिए अद्यतन तकनीक का भी उपयोग किया जा रहा है। यात्रा के दौरान यात्रियों को किसी भी असुविधा के निवारण के लिए रेल प्रषासन द्वारा 'रेल मदद ऐप' विकसित किया गया है। जिसका उद्देष्य यात्री षिकायत निवारण में तेजी लाना और उसे कारगर बनाना है। यात्री सुविधा को ध्यान में रखकर अपर महाप्रबन्धक श्री अमित कुमार अग्रवाल ने 'रेल मदद ऐप' के माध्यम से प्राप्त जन परिवादों के निस्तारण प्रक्रिया में व्यापक सुधार कराया है। इसके लिये सघन अभियान चलाकर ग्राहक संतुष्टि के पैरामीटर में अपेक्षित सुधार किया गया है। फलस्वरूप जन-परिवादों के निस्तारण में आशातीत सफलता मिली है। उपरोक्त बाते की जानकारी पूर्वोत्तर रेलवे के अपर महाप्रबंधक ने दी वर्ष 2020 में जन परिवादों का पेन्डेन्सी समय 04 घंटा 34 मिनट एवं निस्तारण समय 03 घंटा 06 मिनट था तथा यात्री द्वारा दिये जाने वाली रेटिंग/फीडबैक भी संतोषजनक ही रहा। जबकि निरन्तर किये गये सुधारों से वर्ष 2021 में घटकर पेन्डेंसी समय मात्र 09 मिनट तथा निस्तारण समय मात्र 13 मिनट हो गया है। उत्कृष्ट फीडबैक रेटिंग भी मिल रही है।इस ऐप के माध्यम से प्राप्त जन-परिवादों के निस्तारण में पूर्वोत्तर रेलवे का रिकॉर्ड क्षेत्रीय रेलों में काफी बेहतर है। पंकज कुमार सिंह मुख्य जनसम्पर्क अधिकारी गोरखपुर के अनुसार पूर्वोत्तर रेलवे पर ग्राहक संतुष्टि हेतु चलाये गये अभियानों के अन्तर्गत सर्वप्रथम समस्याओं को पहचान कर उनके लिये तत्काल सुधारात्मक प्रयास किये गये है। प्रतिदिन विभाग एवं मंडल के कार्यकलापों की जानकारी देने के लिये मंडल एवं मुख्यालय के अधिकारियों का वाट्सअप समूह बनाया गया। 'रेल मदद ऐप' से प्राप्त जन-परिवेदनाओं के निस्तारण में अधिक समय लगने वाले मामलों की गहन समीक्षा प्रतिदिन की गयी। मुख्यालय द्वारा ऐसे क्षेत्रों का वर्गीकरण किया गया जहां से निरन्तर एवं रिपीटेड जन-परिवेदनायें प्राप्त होती थीं, उसका विवरण सम्बन्धित मंडलों को भेजा गया। मंडलों में नोडल अधिकारी बनाये गये तथा कर्मचारियों का उत्साहवर्धन किया गया। इस सम्पूर्ण प्रक्रिया में कंट्रोल की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण है, इसलिए षिकायतकर्त्ता से विनम्रतापूर्वक एवं षिष्टाचार से बात करने के लिए योग्य कर्मचारियों को रखा गया तथा उनको उचित प्रषिक्षण दिया गया कि सोषल मीडिया एवं 'रेल मदद पोर्टल' पर प्राप्त होने वाले परिवादों पर कैसे जबाव देना है। मंडल कन्ट्रोल में कार्यरत

कर्मचारियों को निर्देषित किया गया कि सभी शिकायतकर्त्ताओं से बात कर उनका फीडबैक लिया जाये। असंतोषजनक फीडबैक प्राप्त होने पर प्रतिदिन अपर मंडल रेल प्रबन्धक स्तर पर इसकी समीक्षा की जाती है। एनालिसिस में यह पाया गया कि ज्यादातर षिकायत कोचों में साफ-सफाई, वाटरिंग, ट्वायलेट एवं कोच अनुरक्षण से सम्बन्धित थीं। इन समस्याओं को दूर करने के लिए निमनलिखित सुधारात्मक कार्य किये गये। आन बोर्ड साफ-सफाई के लिए ओ.बी.एच.एस. का चैबीस घंटे हेल्पलाईन गोरखपुर एवं ऐषबाग में बनाया गया है। ओ.बी.एच.एस. हेल्पलाईन नम्बर को हर कोच में प्रदर्षित किया गया है । यह प्रयोग बहुत ही सफल रहा तथा लगभग 70 कॉल प्रतिदिन रही है और मंडलों में सहायक वाणिज्य प्रबन्धक स्तर पर पार्सल/ लगेज की षिकायतों के लिये निगरानी की जा रही है। रेलवे सुरक्षा बल एवं वाणिज्य कर्मचारियों के समन्वय से कोचों में अनाधिकृत यात्रियों के प्रवेष पर अंकुष लगाया जा सका है। यात्रियों को चिकित्सा सहायता के लिये उनकी सीधे चिकित्सक से बात करायी जाती है। इन सभी सुधारों से जहाँ षिकायतों की संख्या में कमी आई है, वहीं मामलों के शीघ्र एवं गुणवत्तापूर्ण निस्तारण से यात्रियों एवं रेल उपयोकर्त्ताओं की संतुष्टि का स्तर भी बढ़ा है रेलवे यात्री षिकायत निवारण और प्रबंधन प्रणाली 'रेल मदद ऐप' यात्रियों को मोबाइल फोन या वेब के माध्यम से षिकायत दर्ज करने की अनुमति देता है साथ ही ऐप में फोटो अपलोड करने का विकल्प भी है। एक बार जब यात्री अपनी षिकायत दर्ज कर लेता है, तो उसे भारतीय रेलवे द्वारा की गई कार्रवाई के बारे में सूचित करने हेतु एसएमएस के माध्यम से एक त्वरित आईडी प्राप्त होती है। साथ ही 'रेल मदद ऐप' यात्रियों को उनकी षिकायतों के निवारण की स्थिति पर रीयल-टाइम फीडबैक देता है। इस ऐप पर विभिनन हेल्पलाइन नंबर भी प्रदषि्त होता है, जैसे चाइल्ड हेल्प लाइन नंबर, सुरक्षा नंबर तथा इसके अतिरिक्त एक आसान चरण में तत्काल सहायता के लिए सीधे कॉल करने की सुविधा भी प्रदान करता है। इंटरनेट के इस जमाने में अब रेलवे तक अपनी शिकायत पहुंचाना बेहद आसान है। इसके अलावा आप अन्य किसी भी प्रकार की शिकायत इसके जरिए कर सकते हैं। सफर के दौरान यात्री पानी, बिजली और साफ-सफाई के लिए शिकायत दर्ज करा करा सकते हैं। इसके लिए यात्री को एक ऑनलाइन फॉर्म भरना होता है। जिसमें शिकायत संबंधी डिटेल, घटना की तारीख, कर्मचारी का नाम, घटनास्थल इत्यादि की जानकारी देनी होती है। यात्री इसमें अपनी शिकायत विस्तृत रूप में लिख सकते हैं पंकज कुमार सिंह मुख्य जनसम्पर्क अधिकारी गोरखपुर के अनुसार पूर्वोत्तर रेलवे ने वर्ष 2021-22 में 'रेल मदद पोर्टल पर कुल 39087 षिकायत प्राप्त किया तथा सभी का निस्तारण समय से किया गया। 39087 षिकायतों के निस्तारण के उपरान्त यात्रियों द्वारा कुल 17605 फीडबैक प्राप्त हुए जिसमें से 11766 उत्कृष्ठ फीडबैक रहा अर्थात कुल 66.83 प्रतिषत उत्कृष्ठ रहा। 'रेल मदद ऐप' षिकायतों के निस्तारण के मामले में भारतीय रेल के सभी जोनो में पूर्वोत्तर रेलवे का प्रथम स्थान है जिसके लिए रेलवे बोर्ड स्तर पर सर्वश्रेष्ठ प्रदर्षन के लिए पूर्वोत्तर रेलवे को रेल मदद शील्ड-2022 प्रदान कर पुरस्कृत किया जाएगा।

किसानों ने बनाई डेयरी उत्पादक कंपनी, अब हुए आत्मनिर्भर

बलिया । एकता में अटूट शक्ति होती है। एक दूसरे के खिलाफ काम करने के बजाय एक दूसरे के सहयोग से हम काम करें तो सफलता निश्चित हो जाती है। कुछ ऐसा ही कर दिखाया है जिले के सोहांव नारायण किसान उत्पादक संघ ने। नाबार्ड व मां सुरसरी सेवा संस्थान कथरिया के सहयोग से अगस्त 2021 में किसान उत्पादक संघ का गठन किया था। इसमें शामिल 120 सदस्यों ने बैठक कर कुछ नया करने का प्लान बनाया। छह माह पहले नरहीं डेयरी के नाम एक कंपनी खोल दी। कंपनी को खड़ा करने के लिए 120 सदस्यों ने 10 हजार से लेकर 50 हजार तक अंशदान दिया। 25 लाख से कंपनी के माध्यम से कारोबार शुरू किया। आसपास के करीब 300 पशुपालकों को भी सामान्य सदस्य के रूप में जोड़ा। दूध स्टोर करने के लिए मिल्क कूलर स्थापित किया। वितरण के लिए दो मिल्क एटीएम यूनिट खरीदी। सभी मिलकर कार्य

करने लगे और छह माह में ही कंपनी ने शहर सहित आसपास के मार्केट में मिल्क एटीएम से दूध बिक्री कर अलग पहचान स्थापित कर दी है। प्रतिदिन दो हजार लीटर दूध करते बिक्री डेयरी उत्पादन कंपनी के मुख्य कार्यकारी अधिकारी वैभव नारायण राय ने बताया कि कंपनी दो मिल्क एटीएम के माध्यम से 2000 लीटर दूध शहर में बिक्री करती है। पशुपालकों से दूध हम 35 रुपये के रेट में लेकर स्टोर करते हैं। उसे 44 रुपये प्रति लीटर के रेट में बिक्री करते हैं। अब ताजा खोवा और पनीर भी तैयार होने लगा है। खास बात यह कि कंपनी पनीर और खोवा ताजा प्रदान करती है। गुणवत्ता की भी पूरी गारंटी रहती है। अंशदान के हिसाब से मुनाफे में बंटवारा कंपनी के मुख्य कार्यकारी अधिकारी ने बताया मुनाफे का बंटवारा छह माह पर होगा। अभी बंटवारा नहीं हुआ है, लेकिन नियम पहले से बना दिए गए हैं। मान लीजिए 120 सदस्यों में किसी ने 50 हजार शेयर लगाया है तो 25 लाख के हिसाब से उसका शेयर दो फीसद होता है। सभी खर्च काटकर छह माह में कंपनी को यदि 10 लाख की आय होती है तो 50 हजार वाले शेयरदाता को 10 लाख का दो फीसद मुनाफा यानि 20 हजार रुपये मिलेंगे। जिसने 10 हजार रुपये लगाया है, उसका अंशदान 0.4 फीसद होता है। 10 लाख का 0.4 फीसद यानि संबंधित को 4000 रुपये मिलेंगे। पशुपालकों का सहयोग करती है कंपनी मां सुरसरी सेवा संस्थान कथरिया के सचिव डा. सुधीर कुमार सिंह ने बताया कंपनी पशुओं के लिए दवा का इंतजाम भी कराती है। आर्थिक तंगी वाले पशुपालकों को अग्रिम धनराशि भी सहयोग में देती है। इसलिए पशुपालन कंपनी को ही नियमित दूध देते हैं।

आंधी से गिरा मड़हा, मलबे में दबने से वृद्ध समेत दो घायल

मीरजापुर । आंधी-तूफान के साथ हुई बारिश से लोगों को गर्मी से राहत जरुर मिली, लेकिन नुकसान भी हुआ। कई कच्चे मकान ढह गए तो कई पेड़ धराशाई हो गए। कई लोग घायल भी हुए। कछवां क्षेत्र के वार्ड थाना में स्थित साई मंदिर के पास स्थित एक मड़हा का जर्जर दीवार सोमवार को तेज आंधी के चलते गिर गया। इसके मलबे में 80 वर्षीय जलील व 40 वर्षीय मोहम्मद जाहीद दब गए। आसपास के लोगों ने काफी मशक्कत के दोनों को मलबे से बाहर निकालकर अस्पताल ले गए। इसके बाद आक्रोशित स्वजनों ने सारा मलबा सड़क पर फेंककर जाम लगा दिया। आरोप लगाया कि मंदिर की तरफ से कुछ लोग घर का मरम्मत नहीं करने देते है, जिसके वजह से आज यह हादसा हुआ है। अगर मरम्मत नहीं कराया गया तो कभी भी अप्रिय घटना घट सकती है। जाम लगने की जानकारी पर कस्बा चौकी प्रभारी धर्मेंद्र कुमार मयफोर्स और नगर पंचायत के

लिपिक दूधनाथ मौके पर पहुंच गए और सड़क पर फेंके गए मलबे को समझाकर बुझाकर हटवाया, तब जाकर लोगों ने राहत की सांस ली।

हलिया : थाना क्षेत्र के दीघिया गांव निवासी शिवनारायण विश्वकर्मा का कच्चा मकान आम का पेड़ गिरने से जमींदोज हो गया। वहीं घर के दूसरे हिस्से में मौजूद परिवार के सभी सदस्य बाल-बाल बच गए। अनाज और गृहस्थी का सामान भी नष्ट हो गया। पीड़ित ने घटना की जानकारी ग्राम प्रधान दिनेश सिंह के साथ हल्का लेखपाल पकंज पटेल को दी और मुआवजे की मांग की। वहीं बैधा गांव में आंधी-पानी से कच्चे मकान की दीवार गिरने से दो अधेड़ महिलाएं गंभीर रूप से घायल हो गईं। मंगलवार सुबह स्वजन घायलों को उपचार के लिए एंबुलेंस से प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र हलिया लेकर गए। बैधा गांव निवासी 70 वर्षीय रामकली पतनै मुड़ऊ पाल अपनी ननद 72 वर्षीय तेरसी पतनै लोलर निवासी सोनगढ़ा के साथ आंधी-पानी के दौरान कच्चे मकान के बरामदे में बैठी थी। तेज बारिश की वजह से कच्चे मकान का दीवार भर-भराकर अचानक गिर पड़ा। इससे दोनों घायल हो गईं।

लाखों की लागत से बनी सब्जी मंडी बेकाम

पड़री (मीरजापुर) । पहाड़ी विकास खंड के ग्राम पंचायत टौंगा में दाढीराम मार्ग पर लाखों की लागत

से बना हाट पैड बदहाल है। इसके चलते किसान सड़कों पर सब्जी लगाकर बेचने को विवश है। वही जाम की समस्या उत्पनन होती है, जिससे लोगों को काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। ग्राम पंचायत टौगा में सब्जी मंडी का निर्माण हो रहा था तब उसे देखकर यही लगा था कि इसका एक स्थान होगा। कुछ दिनों तक इसकों लेकर क्षेत्र के किसानों व सब्जी विक्रेताओं में खूब चर्चा रही, लेकिन मंडी बनने के बाद मंडी के अंदर दुकान लगाने की प्रक्रिया प्रशासन द्वारा पूर्ण नहीं कराई गई। इससे किसान व सब्जी विक्रेता कई वर्षों से सड़कों पर व ठेकेदारों की जमीनों पर मोटी रकम देकर सब्जी की दुकान लगाते है। उधर ठेकेदारों की वजह से वाराणसी-मीरजापुर मार्ग न केवल सिकुड़ती जा रही है, बल्कि इससे आवागमन में परेशानी होने लगी है, जाम की समस्या भी बढ़ती जा रही है।

नगरीय विस्तार, सुंदरीकरण के लिए बस स्टैंड हटाना आवश्यक

दुद्धी (सोनभद्र)। अवैध रूप से संचालित वाहन स्टैंड हटाने का निर्देश का असर तहसील मुख्यालय के भी वाहन संचालकों पर दिखने लगा है। यहां की स्थिति अन्य स्थानों से भिनन है। ब्रिटिशों द्वारा आबाद आबादी का दायरा भी आजादी के साढ़े सात दशक बाद भी उसी तरह से सिमटा हुआ है। फील्ड से लेकर पत्ता गोदाम तक ही नगरीय आबादी की मान्यता है। इसके लिए कहीं कोई अधिकृत बस स्टैंड नही है। सड़क के किनारे पटरी पर अतिक्रमण कर लोग जहां रोजी-रोटी चलाते है, वहीं आधे हाइवे पर कब्जा कर वाहन स्टैंड संचालित होते हैं। सरकार के जारी फरमान के बाद नगर पंचायत भी अभियान चलाने के लिए सक्रिय हो गया। मंगलवार को बकायदे हाइवे किनारे के अतिक्रमण को खाली करने संबंधी सूचना ध्वनि विस्तारक यंत्र के माध्यम से पूरे दिन प्रसारित कराया गया। इससे प्राइवेट बस मालिक व चालकों के माथे पर चिता की लकीरें दिखाई पड़ने लगी। संचालकों का कहना है कि नगर में अनादिकाल से इसी तरह बस स्टैंड संचालित होता चला आ रहा है। हम भी विकास चाहते है किंतु किसी का विनाश कर विकास की बात बेमानी होगी। सरकार जनता से सीधे जुड़े इस फरमान के लिए कोई समुचित व्यवस्था बनाये, जिससे लोगों के आवागमन में किसी तरह की कोई परेशानी न हो। प्रशासन को सभी पक्ष के हितों का ख्याल रखते हुए इस संबंध में कदम उठाना चाहिए। वर्जन शासन ने अवैध बस अथवा आटो स्टैंड को हटाने का निर्देश दिया है। दुद्धी में इस तरह का कोई वैध स्थान नहीं है, अस्थाई तौर पर बस आटो जैसे वाहन खड़े होते हैं। उन बस या आटो वालों को वहां से हटाने का निर्देश दे दिया गया है। वैध स्थल पर उन्हें खड़ा कराने की व्यवस्था की जा रही है, जिसके लिए जगह की तलाश शुरू कर दी गई है। शैलेन्द्र मिश्रा,

उपजिलाधिकारी दुद्धी सोनभद्र । नगर में अवैध प्राइवेट बस स्टैंड उस तरह का नहीं है। अस्थाई तौर पर बस और आटो वाहन खड़े होते है और सवारियों को लेकर चले जाते है। बावजूद इसके निजी बसों के ठहराव के लिए जमीन की तलाश शुरू करा दी गई है। बस चालकों को आगाह किया गया है कि वे सार्वजनिक जगहों पर बस खड़ा कर जाम न लगाएं। भारत सिंह, अधिशासी अधिकारी दुद्धी सोनभद्र ।सरकार ने अवैध बस स्टैंड को हटाने का निर्देश दिया है। निजी बस हो अथवा आटो, इस कार्यवाही से हम सभी को दिक्कत आएगी। बस व आटो को सही ढंग से खड़ा करने के लिए नगर पंचायत द्वारा स्थाई स्टैंड की सरकारी जमीन पर व्यवस्था दी जानी चाहिए। इसके बदले जो भी उचित शुल्क तय हो उसे वाहन मालिक देने से पीछे नहीं हटेंगे क्योंकि यह एक रोजी-रोटी है।सवारी जीप चलाकर परिवार का भरण पोषण करते है। सरकार के इस आदेश से यदि बसों अथवा आटो का संचालन प्रभावित होता है, तो हम चालकों की रोजी रोटी में दिक्कत होगी। कहीं तो स्टैंड स्थापित होना चाहिए ताकि वहां से सवारी एकत्रित होकर अपने गंतव्य के लिए सुविधा पूर्ण तरीके से आटो में सवार होकर अपने गंतव्य तक पहुंच सके, और हम चालकों को भी रोजी रोटी का सहारा बना रहे।

प्रशन पहर : सुकन्या समृद्धि योजना से समृद्ध होगा बेटियों का भविष्य

आजमगढ़। सुकन्या समृद्धि योजना से बेटियों का भविष्य समृद्ध होगा। खाता खोलने के लिए बेटी का जन्म प्रमाण पत्र और माता या पिता का आधार कार्ड, पैन कार्ड की स्वप्रमाणित छाया प्रति देनी होगी। बेटी की उम्र 10 वर्ष तक होनी

चाहिए। जन्म प्रमाण पत्र के लिए अस्पताल से जारी प्रमाण पत्र, ग्राम प्रधान से जारी प्रमाण पत्र, स्कूल से जारी पहचान पत्र से खाता खोला जा सकता है। यह खाता 250 रुपये से खोला जा सकता है। यह जानकारी प्रवर डाक अधीक्षक योगेंद्र मौर्य ने मंगलवार को 'दैनिक जागरण' के 'प्रशन पहर' में लोगों के सवालों के जवाब में दी। सवाल : मुझे आइपीपीबी खाता खोलना हैं, इसमें क्या-क्या अभिलेख लगेगा। खाता कहां खुल सकता है जवाब : खाता मात्र 10 रुपये में खोला जा सकता है। केवल आधार कार्ड की संख्या से किसी भी ग्रामीण या शहरी डाकघर में जाकर फिगर प्रिंट से खाता खोला जा सकता है। खाता खोलते समय क्यूआर कोड दिया जाता है। समय-समय पर कैंप लगाकर भी खाता खोला जा रहा है। सवाल : मेरी एक बेटी का सुकन्या खाता चल रहा है। इसके बाद मेरी दो जुड़वां बेटियां हैं तो क्या इनका भी योजना का खाता खोला जा सकता है जवाब : हां, एक बेटी के बाद दो जुड़वां बेटियों का भी खाता खोला जा सकता है। सवाल : डाक जीवन बीमा व ग्रामीण डाक जीवन बीमा की अधिकतम सीमा क्या है जवाब : डाक जीवन बीमा की अधिकतम सीमा 50 लाख रुपये और ग्रामीण डाक बीमा की अधिकतम सीमा 10 लाख रुपये है।सवाल : मेरे बेटे की उम्र 10 वर्ष है, क्या उसका पीपीएफ खाता खोला जा सकता है जवाब : हां, यह खाता संरक्षक की तरफ से खोला जाएगा। सवाल : क्या इस समय गंगा जल डाकघर से प्राप्त हो सकता है जवाब : अधिकृत डाकघरों में गंगोत्री से प्राप्त गंगा जल 250 एमएल 30 रुपये में उपलब्ध है। सवाल : डाकघर में पासपोर्ट सेवा उपलब्ध है। इस सेवा के लिए क्या करना होगा जवाब : अधिकृत प्रधान डाकघर में आजमगढ़ व मऊ में पासपोर्ट की सेवा उपलब्ध है। इसके लिए कोई भी व्यक्ति स्वयं अपने मोबाइल या किसी नजदीकी जनसेवा केंद्र से आनलाइन समय बुक कराकर सूचना पत्र के साथ निर्धारित तिथि पर संबंधित पासपोर्ट सेवा केंद्र पर उपस्थित होकर अपना पासपोर्ट बनवा सकते है। इन्होंने पूछे सवाल विनय कुमार गंभीरवन, रामबचन नरेहथा, शिवमूरत मेंहनगर, रामअचल सिंहपुर, जगदीश प्रसाद चक्रपानपुर, उमेश जलालपुर, राजेश बछवल, अखिलेश रसूलपुर, रामबचन राय पटवध कौतुक, आरसी यादव टीकापुर तहबरपुर, सत्येंद्र दीक्षित मेंहनगर, हरेंद्र दिलौरी रानी की सराय, अभय यादव नंदावं।

कलवारी बाजार में लटकता हाई वोल्टेज तार, खतरा

कलवारी (मीरजापुर) । मड़िहान अंतर्गत कलवारी बाजार में पिछले दिनों 33,000 वोल्टेज के पोल में अनियंत्रित डीजे वाहन ने जोरदार टक्कर मार दिया था। इससे पोल धराशायी हो गया था, हालांकि डीजे वाहन संग उस पर सवार बाल-

बाल बच गए थे, लेकिन पोल पर टक्कर लगने के कारण हाईवोल्टेज तार नीचे की तरफ लटक रहा है। इसके चलते ग्रामीण मौत के साए में जीने को विवश है। ग्रामीणों का कहना है कि कई बार विभागीय अधिकारियों और कर्मियों से गुहार लगाई, लेकिन आश्वासन ही मिलता रहा। ग्रामीणों का आरोप है कि सूचना पर पहुंचे विद्युत विभाग के कर्मियों ने बिना नए पोल लगाए ही 33000 वोल्टेज के तार को जोड़कर बिजली आपूर्ति बहाल कर दी। इसके बाद भी तार पोल से काफी नीचे हैं। एक सप्ताह बाद भी विद्युत कर्मियों के अड़ियल रवैए के चलते ग्रामीण परेशान है। इस दौरान ललू खान, राजू, मुस्तफा खांन, दिलबहार, पंकज, प्रियांशु आदि ने तार को दुरूस्त करवाने की मांग की है। इस संबंध में जेई मड़िहान राजेश कुमार सिंह ने बताया कि गड्ढा खोदने वाली मशीन (हाइड्रा) न मिलने के कारण पोल को नहीं लगाया गया है। जैसे ही हाइड्रा मिलता है तो पोल को लगवा दिया जाएगा।

पुलिस अधिकारी-कर्मचारी जनता से रखें मधुर व्यवहार

सोनभद्र। विध्याचल परिक्षेत्र के पुलिस उप महानिरीक्षक रामकृष्ण भारद्वाज ने पुलिस विभाग के अधिकारियों, कर्मचारियों को अनुशासन का पाठ पढ़ाया। कहा कि अधिकारी-कर्मचारी ड्यूटी के दौरान उच्च कोटि की वर्दी पहनें व जनता से मधुर व्यवहार स्थापित करें। उन्होंने कमिऱ्यों के शारीरिक रूप से फिट रहने के लिए परेड कराया। इस दौरान अनुशासन व एकरूपता के लिए टोलीवार ड्रिल कराया। मंगलवार को पुलिस लाइन चुर्क में डीआइजी ने परेड की सलामी लेते हुए निरीक्षण किया। प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे रिक्रूट आरक्षियों से वार्ता की। उनकी समस्याओं के निस्तारण व बेहतर प्रशिक्षण के लिए प्रतिसार निरीक्षक व संबंधित

प्रशिक्षक को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। उन्होंने यूपी-112 व थानों से आये वाहनों की गहनता से चेकिग की। पीआरवी पर तैनात पुलिस कर्मियों से वाहनों में उपलब्ध दंगा नियंत्रण, सुरक्षा उपकरणों के संबंध में जानकारी लेते हुए उनकी चेकिग की। पीआरवी कमिऱ्यों को उनके कर्तव्य के बारे में सजग रहने के लिए निर्देशित किया। उन्होंने क्वार्टर गारद की सलामी लेते हुए क्वार्टर गार्द व शस्त्रागार चेक किया। इसके बाद स्टोर रुम, परिवहन शाखा, बैरक, आरटीसी बैरक, पुलिस मेस, भोजनालय, शौचालय, वाहन पार्किंग इत्यादि का निरीक्षण किया। इस दौरान पुलिस लाइन में बेहतर साफ-सफाई के लिए प्रतिसार निरीक्षक को निर्देश दिया। स्टोर रुम, परिवहन शाखा, गणना कार्यालय के ड्यूटी रजिस्टर व अभिलेखों के बेहतर रखरखाव व वहां नियुक्त अधिकारी, कर्मचारी से कार्यों की गहनता से पूछताछ करते हुए संबंधित को आवश्यक दिशा निर्देश दिए। उन्होंने पुलिस लाइन परिसर में पौधरोपण भी किया। इस मौके पर पुलिस अधीक्षक अमरेंद्र प्रसाद सिंह, अपर पुलिस अधीक्षक मुख्यालय विनोद कुमार, अपर पुलिस अधीक्षक आपरेशन विजय शंकर मिश्र, सभी क्षेत्राधिकारी, प्रतिसार निरीक्षक धर्मेंद्र सिंह, सभी थाना प्रभारी, शाखा प्रभारी, यातायात पुलिस बल, थानों से आये पीआरवी वाहनों के कर्मचारी, पुलिस लाइन में नियुक्त पुलिस बल, प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे रिक्रूट आरक्षियों सहित अन्य अधिकारी व कर्मचारी मौजूद रहे।

निरीक्षण में तीन कर्मी मिले अनुपस्थित, रोका वेतन

मीरजापुर । अपर जिलाधिकारी वित्त व राजस्व शिव प्रताप शुक्ला द्वारा मंगलवार को सिचाई विभाग के कार्यालयों का औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान अधिशाषी अभियंता बांध प्रखंड कार्यालय में दो कर्मचारी तथा अधिशाषी अभियंता अनुसंधान एवं नियोजन खंड कार्यालय का एक कर्मचारी अनुपस्थित मिला। उन्होंने अनुपस्थित कार्मिकों से स्पष्टीकरण मांगा साथ ही एक दिन का वेतन रोकने की संस्तुति

भी की। जिलाधिकारी प्रवीण कुमार लक्षकार के निर्देश पर एडीएम वित्त व राजस्व द्वारा सिचाई विभाग के कार्यालयों का औचक निरीक्षण किया गया। अपर जिलाधिकारी द्वारा कार्यालय अधिशासी अभियंता, सिरसी बांध प्रखण्ड का प्रातः 10.15 बजे निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान अधिशासी अभियंता रामशंकर राजपूत अनुपस्थित मिले। इसी प्रकार कार्यालय अधिशासी अभियंता एमसीडी मीरजापुर के निरीक्षण दौरान अधिशासी अभियंता वैभव सिंह सहित सभी कर्मचारी उपस्थित रहे। कार्यालय अधिशासी अभियंता सिचाई खंड चुनार मीरजापुर में निरीक्षण के दौरान अधिशासी अभियंता हरिशंकर प्रसाद सहित समस्त कर्मचारी उपस्थित रहे। नियोजन खंड के निरीक्षण के दौरान अधिशासी अभियंता कमर अहमद से वार्ता करने पर बताया गया कि वह लखनऊ में तैनात है। मीरजापुर का उनके पास अतिरिक्त प्रभार है। आज वह लखनऊ कार्यालय में उपस्थित है। निरीक्षण के दौरान रामपति वरिष्ठ सहायक अनुपस्थित मिले। सहायक अभियंता ने बताया गया कि अधिशासी अभियंता लखनऊ मीटिग में गए हैं। निरीक्षण के दौरान जयप्रकाश सिंह, वरिष्ठ सहायक राधेश्याम सोनकर, मुंशी अनुपस्थित मिले। अपर जिलाधिकारी ने जिलाधिकारी को प्रेषित निरीक्षण आख्या में अनुपस्थित कर्मचारियों का स्पष्टीकरण प्राप्त करते हुए एक दिन का वेतन रोकने की संस्तुति की।

पीएचसी निर्माण के लिए भूमि से जेसीबी ने मड़हे को हटाया

हलिया (मीरजापुर) । विकास खंड के बंजारी कला में प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र निर्माण के लिए धनराशि शासन ने स्वीकृत कर दी है, लेकिन पीएचसी के लिए चयनित भूमि पर अतिक्रमण के चलते कार्यदायी संस्था द्वारा कार्य प्रारंभ नहीं करा पा रहा था।

इसकी जानकारी होने पर मंगलवार को एसडीएम विजय नारायण सिंह ने तहसीलदार शशांक शेखर राय, कानूनगो लालबहादुर बिद, लेखपाल मुकेश पांडेय, हंसराज, रमेश, थानाध्यक्ष अनिल कुमार सिंह व पुलिसकर्मी व महिला पुलिसकर्मी के साथ मौके पर पहुंच गए। पीएचसी के लिए आरक्षित की गई भूमि पर किए गए अतिक्रमण को जेसीबी से खाली करा दिया। बंजारी कला गांव में 0.493 हेक्टेयर में दो करोड़ 16 लाख 23 हजार रुपये की लागत से प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र का निर्माण कराया जाएगा। इसके लिए 50 लाख की धनराशि सरकार द्वारा आवंटित कर दी गई है। इसमें कार्यदायी संस्था आवास विकास के द्वारा प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र का निर्माण कार्य कराएगी। प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र बन जाने से बंजारीकला, पवारीकला इंद्रवार, राजपुर, भटपुरवा ऊंटी, महुगढ, गलरा, आदि गांव के मरीजों को अब 10 किमी दूर हलिया प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र नहीं जाना पड़ेगा। स्थानीय स्तर पर भी उनके दवाई इलाज का प्रबंध होगा जिससे लोगों ने खुशी जाहिर किया है। एसडीएम ने बताया कि पीएचसी निर्माण कार्य के लिए प्रस्तावित भूमि पर अतिक्रमण कर मड़हे को जेसीबी मशीन से हटवाकर खाली करा दिया गया है। जल्द ही पीएचसी निर्माण कार्य शुरू करने के लिए कार्यदायी संस्था को निर्देशित किया गया है।

लंबित एसीपी प्रकरण का जल्द हो निस्तारण

मीरजापुर । फतहां स्थित संयुक्त शिक्षा निदेशक विध्याचल मंडल के सभाकक्ष में यूपी एजूकेशनल मिनिस्ट्रीयल आफिसर्स एसोसियेशन उत्तर प्रदेश की बैठक

मंगलवार को हुई। प्रांतीय अध्यक्ष विवेक यादव और प्रांतीय महामंत्री राजेश चंद्र श्रीवास्तव की अगुवाई में विध्याचल मंडल के लिपिकों की समस्याओं और उनके निस्तारण पर चर्चा की। इसके बाद संयुक्त शिक्षा निदेशक कामता राम पाल के साथ प्रांतीय अध्यक्ष व पदाधिकारियों की द्विपक्षीय वार्ता हुई। संयुक्त शिक्षा निदेशक ने आश्वासन दिया कि कर्मचारियों की लंबित एसीपी प्रकरण का निस्तारण एक-दो दिन में कराया जाएगा। शिक्षा विभाग के मंडल कार्यालय व संस्थान में कार्यरत कनिष्ठ सहायकों के स्थायीकरण आदेश नियमानुसार जारी किया जा रहा है। द्विपक्षीय वार्ता सफलतापूर्वक मंडलीय अध्यक्ष सालिग राम सरोज, राजेश त्रिपाठी, राजेश कुमार जायसवाल, घनश्याम पांडेय, राज कुमार गुप्ता, प्रमोद यादव, कृष्ण पाल, रविद्र कुमार वर्मा, अशोक कुमार, अनिल मिश्रा, मनोज कुमार यादव व लालजी के बीच संपन्न हुई।

अधिवक्ताओं ने कचहरी परिसर में बुलंद की आवाज, प्रदर्शन

मीरजापुर । पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के तहत डिस्ट्रिक्ट बार एसोसिएशन के अध्यक्ष जटाधर द्विवेदी के नेतृत्व में अधिवक्ताओं ने सोमवार को कचहरी परिसर का चक्रमण कर अपनी आवाज बुलंद की। दोपहर करीब 12 बजे कलेक्ट्रेट परिसर पहुंचकर अपनी मांगों को लेकर विरोध-प्रदर्शन किया। इसके बाद कचहरी परिसर के सभागार में बैठक आयोजित कर अपनी मांगों को लेकर आगे की रणनीति तय की। वरिष्ठ अधिवक्ता श्यामधर शुक्ला ने कहा कि डीएम की बदसलूकी से नाराज अधिवक्ताओं का प्रतिनिधि मंडल 23 मई को शासन के लोगों से मिलने के लिए लखनऊ गया था। वहां उच्चाधिकारियों से डीएम को हटाए जाने को लेकर वार्ता भी हुई है। जब तक वहां से कोई जवाब नहीं आ जाता है तब तक अधिवक्ता विरोध- प्रदर्शन करते रहेंगे। इसी के क्रम में बुधवार को अधिवक्ता न्यायिक कार्य नहीं करेंगे। साथ ही कचहरी परिसर में चक्रमण कर अपना विरोध-प्रदर्शन करेंगे। इसके बाद सिविल लाइन पेट्रोल पंप तिराहे पर अपना विरोध जताएंगे। बैठक में गंगा प्रसाद यादव, कृष्ण मोहन तिवारी, हीरालाल पांडेय, सुरेश सिंह, पंकज श्रीवास्तव, ओम नारायण, रतन मिश्रा, प्रकाश नाथ उपाध्याय, आदि शामिल रहे।

अगर ऐसा हुआ तो की टीम बिना प्लेआफ खेले हो जाएगी बाहर

नई दिल्ली। इंडियन प्रीमियर लीग के 15वें सीजन में प्लेआफ में पहुंची चार टीमों में सबसे आखिर में जगह बनाने वाली रायल चैलेंजर्स बैंगलोर का मुकाबला एलिमिनेटर में लखनऊ सुपर जायंट्स से होना है। इस मुकाबले में जीत हासिल करने वाली क्वालीफायर 2 में राजस्थान की टीम के खिलाफ खेलेगी जिसे पहले क्वालीफायर में गुजरात से हार मिली थी। एलिमिनेटर को लेकर एक अहम बात है कि अगर जो मुकाबला नहीं खेला जा सका तो बैंगलोर की टीम बिना खेले ही बाहर हो जाएगी बुधवार, 25 मई को लखनऊ और बैंगलोर के बीच कोलकाता के इडेन गार्डन्स मैदान पर मुकाबला खेला जाना है। कोलकाता का मौसम पिछले कुछ दिनों से खराब चल रहा है और इस मैच पर बारिश का साया है। बताया जा रहा है कि मैच के दौरान मौसम विभाग की तरफ से बारिश की आशंका जताई गई है। लीग स्टेज में लखनऊ की टीम अंक तालिका में तीसरे स्थान पर थी जबकि बैंगलोर की टीम चौथे नंबर पर रही थी। आइपीएल 2022 के नए नियमों के मुताबिक अगर मौसम या किसी और वजह से मुकाबला नहीं कराया जा सका तो अगले दौर में जाने वाली टीम पर फैसला लीग स्टेज के नतीजों के आधार पर होगा। अगर मैच बारिश की वजह से नहीं खेला जा सका तो पहले सुपर ओवर से नतीजा निकाले जाने का नियम है। अगर जो मैच में सुपर ओवर भी कराया जाना संभव नहीं हुआ तो लीग स्टेज में जिस टीम के पास ज्यादा अंक होंगे या अंक तालिका में जो टीम उपर रहेगी वह आगे जाएगी।

बैंगलोर और लखनऊ की किस्मत का फैसला आज

नई दिल्ली। इंडियन प्रीमियर लीग के 15वें सीजन में आज लखनऊ सुपर जायंट्स और रायल चैलेंजर्स बैंगलोर के बीच शाम करो या मरो का मुकाबला खेला जाना है। कोलकाता के इडेन गार्डन्स मैदान पर एलिमिनेटर में दोनों टीमों का सामना होगा। यहां जिस टीम को हार मिलेगी उसके खिताब जीतने का सपना टूट जाएगा जबकि जीतने वाली टीम को क्वालीफायर 2 में राजस्थान की टीम के साथ खेलना होगा। लीग स्टेज में लखनऊ की टीम ने शानदार खेल दिखाते हुए प्लेआफ में जगह बनाई थी। 14 में से 9 मैच जीतकर टीम अंक तालिका में तीसरे स्थान पर रही थी। बैंगलोर की टीम ने लीग स्टेज में अपने 8 मुकाबले जीते थे और 16 अंक हासिल कर यहां पहुंचने में कामयाब हुई। दिल्ली और बैंगलोर के बीच प्लेआफ के आखिरी जगह को लेकर टक्कर थी लेकिन दिल्ली अपना आखिरी मुकाबला हार गई।

कोलकाता के इडेन गार्डन्स मैदान पर एलिमिनेटर में दोनों टीमों का सामना होगा

नई दिल्ली। इंडियन प्रीमियर लीग के 15वें सीजन में आज शाम कोलकाता के इडेन गार्डन्स मैदान पर लखनऊ सुपर जायंट्स के खिलाफ रायल चैलेंजर बैंगलोर की टीम को खेलना है। इस मुकाबले में जीत हासिल करने वाली टीम आगे बढ़ेगी जबकि हार से उसका सफर यहीं खत्म हो जाएगा। जीत और हार के अलावा भी एक चीज है जो इस मैच पर असर डालने वाला है। कोलकाता का मौसम पिछले कुछ दिनों में अच्छा नहीं रहा और बारिश का साया आज के मुकाबले पर भी मंडरा रहा है। बुधवार, 25 मई को लखनऊ और बैंगलोर की टीम आइपीएल एलिमिनेटर में आमने सामने होंगी। यह मैच वैसे तो दोनों ही टीम के लिए अहम है क्योंकि जिसे भी हार मिली उसके ट्राफी जीतने का सपना टूट जाएगा। जीत और हार सिर्फ मैच होने की सूरत में ही नहीं बल्कि इसके नहीं खेले जाने पर ही तय किया जाना है। आइपीएल के नए नियम के मुताबिक अगर मैच नहीं कराया जा सका तो लीग स्टेज में ज्यादा अंक हासिल करने वाली टीम आगे बढ़ जाएगी। क्वालीफायर पर बारिश का साया बताया जा रहा था और दिन के समय बारिश हुई। मैच के दौरान खलल नहीं पड़ी लेकिन एलिमिनेटर में मौसम विलेन बन सकता है। पिछले दो दिनों से कोलकाता में आंधी-तूफान और बारिश का असर रहा है। मौसम विभाग के पूर्वानुमान के मुताबिक मैच के दौरान हल्की बारिश हो सकती है। ऐसे में ओवर में कटौती होने की संभावना है। शाम पांच बजे से बारिश का पूर्वानुमान लगाया जा रहा है। बारिश की आशंका के बीच सुबह से कोलकाता का मौसम साफ है। यहां धूप खिली हुई दिखी और बादल का नाम नहीं था आसमान पूरी तरह से साफ दिखा। शाम को मौसम कैसा रहता है इसको लेकर सब चिंता में है।

मुकाबले में कैसा रहेगा पिच का मिजाज, क्या कहता है रिकार्ड

नई दिल्ली। इंडियन प्रीमियर लीग के 15वें सीजन में आज शाम लखनऊ का मुकाबला बैंगलोर की टीम के साथ एलिमिनेटर में होना है। यह मैच बेहद अहम है क्योंकि यहां जिस टीम को हार मिलेगी वह टूर्नामेंट से बाहर हो जाएगी। कोलकाता के इडेन गार्डन्स पर होने के इस मैदान पर अब तक कुल 78 टी20 मुकाबले खेले जा चुके हैं। इस मैदान पर खेले गए मुकाबलों में पहले बैटिंग करने वाली टीम को को 31 में जीत मिली है। लक्ष्य का पीछा करने वाली टीम 47 बार मुकाबला जीती है। इसका मतलब साफ है कि जिस भी टीम

वाले इस मुकाबले से पहले जान लेते हैं यहां खेले गए अब तक के सभी मैच के रिकार्ड। किस टीम को मिलेगा फायदा और टास जीतकर कप्तान क्या करना करेंगे पसंद। आइपीएल में पहली बार शामिल हुई लखनऊ की टीम ने अब तक दमदार खेल के दम पर आखिरी चार टीमों में जगह बनाई। वहीं इससे पहले फाइनल तक का सफर तय कर चुकी बैंगलोर की टीम भी प्लेआफ की रेस जारी रखने में कामयाब हुई। आज की शाम दोनों टीमों में से किसी एक का सफर यहीं थम जाएगा। कोलकाता के कप्तान यहां टास जीतेंगे वह बाद में बल्लेबाजी करना चाहेंगे। इस मैदान पर इन मुकाबलों के दौरान सबसे बड़ा स्कोर 232 रन का रहा है जिसे कोलकाता की फ्रेंचाइजी कोलकाता नाइट राइडर्स (ख्ेंं) ने मुंबई इंडियंस (श्ब्) के खिलाफ 2019 में बनाया था। सबसे कम रन बनाने का रिकार्ड भी बैंगलोर की टीम के नाम दर्ज है। 2017 में रायल चैलेंजर्स बैंगलोर (ंॅ) की टीम कोलकाता के खिलाफ 132 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए महज 49 रनों पर सिमट गई थी।

चयन नहीं, प्रदर्शन के बारे में सोचता हूं : मोहसिन खान

नई दिल्ली। लखनऊ सुपरजाइंट्स के तेज गेंदबाज मोहसिन खान ने बताया कि उनके बड़े भाई ने उन्हें क्रिकेट खेलने के लिए प्रेरित किया और उनका साथ दिया। मोहसिन घरेलू क्रिकेट में उत्तर प्रदेश का प्रतिनिधित्व करते हैं और संयोग कुछ ऐसा रहा कि आइपीएल में भी उन्हें लखनऊ टीम का प्रतिनिधित्व करने का मौका मिला। लखनऊ के साथ सफर सहित अन्य मुद्दों को लेकर अभिषेक त्रिपाठी ने मोहसिन खान से खास बातचीत की। पेश हैं मुख्य अंश : मेरे बड़े भाई यूपी पुलिस टीम के लिए क्रिकेट खेलते थे। उन्होंने ही मुझे बोला कि तुम भी अभ्यास किया करो यह अच्छा रहेगा। वह मुझे खेलते हुए देखते थे। सबसे अच्छी चीज तो यह है कि मेरे मम्मी-पापा ने हमेशा से मेरा बहुत समर्थन किया है। संघर्ष की बात करूं तो अंडर-16 खेलने के बाद मैं चोटिल हो गया था, वो एक-दो साल मेरे जीवन के लिए काफी कठिन थे। उस दौरान मेरे माता-पिता और भाई ने मेरा काफी साथ दिया। यह सभी लोग कहते थे कि एक दिन तुम खेलोगे। लखनऊ सुपरजाइंट्स से जुड़कर काफी अच्छा महसूस हो रहा है क्योंकि यह मेरी स्थानीय टीम है। मैं भी उत्तर प्रदेश से हूं और यह टीम पहली बार आइपीएल में उतरी और हमने प्लेआफ के लिए क्वालीफाई किया। टीम बहुत अच्छा खेल रही है और मुझे उम्मीद है कि हमारे अभी तक के मैच जैसे रहे हैं, वैसे ही आगे भी चलते रहें। मैं काफी खुश हूं। नीलामी से पहले भी सोच रहा था कि मेरा चयन लखनऊ की टीम में हो जाए और हुआ भी ऐसा ही। मैं काफी खुश हूं क्योंकि मैं अपनी स्थानीय टीम से आइपीएल टीम में आया हूं। मुझे अच्छा लगा कि मैं इस टीम के लिए खेल रहा हूं और मैं सोचता हूं कि यूपी के लोग मुझे देखते होंगे। मेरे दिमाग में ऐसा कुछ नहीं रहता है कि चयनकर्ताओं की नजर मेरे ऊपर है। मैं सिर्फ यही सोचता हूं कि जैसा मेरा प्रदर्शन चल रहा है, आगे भी वैसा ही चलता रहे। मैं बस चाहता हूं कि मैच खेलता रहूं और सब अच्छा चलता रहे। पश्चिमी उत्तर प्रदेश से मुहम्मद शमी भी आते हैं और लोग उन्हें देखकर आते हैं। मैंने उनके साथ काफी समय बिताया है। सब लोग यही सोचते हैं कि हमको तेज गेंदबाज बनना है ।

राजस्थान के खिलाफ मैच से पहले साहा का अपनी फिटनेस को लेकर अपडेट बताया होम ग्राउंड पर खेलेंगे या नहीं

नई दिल्ली, आनलाइन डेस्क। इंडियन प्रीमियर लीग का पहला क्वालीफयर मैच कोलकाता के इडेन गार्डन्स में खेला जाएगा। इस मैच में पहली बार आइपीएल खेल रही गुजरात टाइटंस और पहले सीजन की चैंपियन टीम राजस्थान आपस में भिड़ेगी। गुजरात के लिए ओपनिंग जोड़ी बड़ी समस्या रही और ऐसे में इस बड़े मैच से पहले ओपनर रिद्धिमान साहा ने अपनी फिटनेस को लेकर अपडेट दिया है कि वो इस मैच में खेलेंगे या नहीं। दरअसल अपने आखिरी लीग मैच में आरसीबी के खिलाफ उन्हें हैमस्ट्रिंग में खिंचाव था। इस मैच से पहले एक वर्चुअल कांफ्रेंस के माध्यम से साहा ने अपनी फिटनेस को लेकर कहा कि वो पूरी तरह से फिट हैं और राजस्थान के खिलाफ मैच में खेलने के उपलब्ध होंगे। इस मैच में राजस्थान के खिलाफ अपनी योजना के बारे में उन्होंने कहा कि उनकी कोशिश होगी कि शुरुआत में तेजी से रन बनाए जाएं। उन्होंने कहा कि मैं पावलप्ले में जोखिम भरे शाट्स खेलना पसंद करता हूं। उन्होंने कहा कि यदि मैं शुरुआती ओवर में साझेदारी करता हूं तो बाकी बल्लेबाजों के लिए काम आसान हो जाएगा। साहा की बल्लेबाजी की बात करें तो उन्होंने 9 इनिंग्स में 125 की स्ट्राइक रेट से 312 रन बनाए हैं। तीन साल बाद कोलकाता के इडेन गार्डन्स पर आइपीएल की वापसी को लेकर साहा ने कहा कि अपने लोगों के बीच खेलना हमेशा से अलग अनुभव देता है। आपको बता दें कि गुजरात के लिए इस सीजन ओपनिंग जोड़ी की समस्या रही है। पहले टीम ने गिल के साथ मैथ्यू वेड को ट्राय किया लेकिन साहा के आने से ओपनिंग में थोड़ी स्थिरता आई है। इसलिए इस बड़े मैच में साहा का खेलना गुजरात के लिए फायदेमंद रहेगा। आरसीबी के खिलाफ आखिरी लीग मैच में साहा हैमस्ट्रिंग में खिंचाव के चलते परेशानी में दिखे थे जिसके बाद उनके क्वलीफायर में खेलने को लेकर आशंका जताई जानी लगी थी। उस मैच में साहा ने 22 गेंदों पर 31 रनों की पारी खेली थी।

केएल राहुल और डुप्लेसिस के पास सिर्फ एक मौका, हारे तो बाहर

कोलकाता। एक तरफ लखनऊ सुपरजाइंट्स है, जो शानदार प्रदर्शन कर प्लेआफ में पहुंची है तो दूसरी तरफ है रायल चैलेंजर्स बेंगलुरु, जिसे भाग्य ने आखिरी समय में नाकआउट राउंड में पहुंचाया है, लेकिन ये सब अब कल की बातें है। अब एलिनिमेटर है और हर मैच नया होता है। क्रिकेट का उसूल यही कहता है कि जिस दिन जो अच्छा खेलेगा, वही जीतेगा। वैसे बेंगलुरु लीग राउंड के मैच में लखनऊ को मात दे चुकी है, इसलिए उसके हौसले बुलंद हैं। दूसरी तरफ लखनऊ इस सत्र की सबसे संतुलित टीमों में से एक है। ईडन गार्डेस स्टेडियम में जब लखनऊ सुपरजाइंट्स और रायल चैलेंजर्स बेंगलुरु आमने-सामने होंगी तो दोनों खिताब की तरफ एक कदम और बढ़ाने को पूरी जान लगा देंगी। लखनऊ को इस बात का मलाल जरूर होगा कि लीग राउंड में शानदार प्रदर्शन करने के बावजूद राजस्थान रायल्स के समान अंक होने के बावजूद कम नेट रन रेट के कारण वह शीर्ष दो में जगह बनाने से चूक गई, जिसके कारण नाकआउट राउंड में अतिरिक्त मौका उसके हाथ से छूट गया। खिताब जीतने के लिए अब उसे हर मैच जीतना होगा। वहीं बेंगलुरु बड़ी मुश्किल से यहां तक पहुंची है, इसलिए आगे कोई गलती नहीं करना चाहेगी। राहुल पर दोहरी जिम्मेदारी : लखनऊ के कप्तान लोकेश राहुल ने अपनी टीम का सामने से नेतृत्व किया है। उन्होंने सूझबूझ भरी कप्तानी के साथ शानदार बल्लेबाजी भी की है। राहुल ने 14 मैचों में 537 रन बनाए हैं, जिनमें दो शतक और तीन अर्धशतक शामिल हैं। आरेंज कैप की दौड़ में वह इस समय दूसरे स्थान पर हैं। इस टीम के पास क्विंटन डिकाक जैसा विश्व स्तरीय विकेटकीपर बल्लेबाज भी हैं, जो 14 मैचों में 503 रन बना चुके हैं। इसमें एक शतक और तीन अर्धशतक शामिल हैं। दीपक हुड्डा (406 रन) ने भी बल्लेबाजी से जलवा बिखेरा है। विराट के फार्म में लौटने से बड़ी राहत : बेंगलुरु के लिए सबसे बड़ी राहत विराट कोहली का फार्म में लौटना है। विराट ने गुजरात के खिलाफ मैच में 54 गेंदों पर 73 रनों की शानदार पारी खेली थी। विराट बड़े मैचों के खिलाड़ी हैं, इसलिए इस मैच में टीम प्रबंधन को उनसे बड़ी पारी की उम्मीद है। डुप्लेसिस और मैक्सवेल पर भी दारोमदार : बेंगलुरु की बल्लेबाजी काफी हद तक कप्तान फाफ डुप्लेसिस और मैक्सवेल पर भी निर्भर करेगी। इसके अलावा उनके पास दिनेश कार्तिक जैसा उम्दा फिनिशर भी है। ईडन में कहर बरपा सकते हैं हसरंगा : ईडन की स्पिन फ्रेंडली पिच पर बेंगलुरु के स्पिनर वानिंदु हसरंगा कहर बरपा सकते हैं। हसरंगा इस सत्र के 14 मैचों में अब तक 24 विकेट चटका चुके हैं और पर्पल कैप की दौड़ में राजस्थान के युजवेंद्रा सिंह चहल (26 विकेट) के बाद दूसरे स्थान पर हैं। बिशनेई साबित हो सकते हैं डार्क हार्स : लखनऊ के रवि बिशनेई डार्क हार्स साबित हो सकते हैं। कुछ महीने पहले इसी ग्राउंड पर अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में शानदार पदार्पण करते हुए बिशनेई वेस्टइंडीज के खिलाफ टी-20 मैच में दो विकेट चटकाकर जीत के नायक बने थे। रायल चैलेंजर्स बेंलुरु : फाफ डुप्लेसिस (कप्तान), विराट कोहली, ग्लेन मैक्सवेल, मुहम्मद सिराज, हर्षल पटेल, वानिंदु हसरंगा, दिनेश कार्तिक, जोश हेजलवुड, शाहबाज अहमद, अनुज रावत, आकाश दीप, महिपाल लोमरोर, फिल एलन, शेरफाने रदरफोर्ड, जेसन बेहरनडोर्फ, सुयश प्रभुदेसाई, चामा मिलिंद, अनीश्वर गौतम, कर्ण शर्मा, डेविड विली, रजत पाटीदार, सिद्धार्थ कौल।

रणजी खिताब के लिए राह आसान बनाएंगे कुलदीप और भुवनेश्वर

कानपुर। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआइ) की ओर से आयोजित सबसे बड़ी घरेलू श्रृंखला रणजी के नाकआउट मुकाबलों की शुरुआत छह जून से बेंगलुरू में हो रही है। यहां उप्र, कर्नाटक के खिलाफ जीत हासिल कर वर्ष 2005-06 से चले आ रहे रणजी खिताब के सूनेपन को खत्म करने का प्रयास करेगी। कर्नाटक के खिलाफ होने वाले नाकआउट मैच में उप्र से भारतीय टीम के चाइनामैन सीरीज के लिए हुआ है। पूर्व खिलाड़ियों के मुताबिक, बल्लेबाजी के साथ गेंदबाजी में माहिर इन खिलाड़ियों के शामिल होने से निश्चित रूप से उप्र अन्य टीमों से मजबूत होगी। हालांकि कमला क्लब में पिछले कई दिनों से तैयारी कर रही उप्र की टीम जल्द लखनऊ के इकाना स्टेडियम में नाकआउट की तैयारी करने उतरेगी। उप्र से चाइनामैन गेंदबाज कुलदीप यादव और तेज गेंदबाज भुवनेश्वर कुमार

कुलदीप यादव और तेज गेंदबाज भुवनेश्वर कुमार को टीम में शामिल किया जा सकता है। इसके लिए उप्र क्रिकेट एसोसिएशन (यूपीसीए) योजना बना रहा है। रणजी का खिताब हासिल करने के लिए इस बार उप्र की टीम पूरी तैयारी के साथ उतरना चाहती है। आइपीएल के 15वें सीजन में शानदार गेंदबाजी कर कुलदीप व भुवनेश्वर खुद को साबित कर चुके हैं। जिसके चलते इन खिलाड़ियों का चयन साउथ अफ्रीका के साथ होने वाली टी-20 भी शामिल हो सकते हैं। कोरोना संक्रमण और आइपीएल मैचों के चलते इस बार रणजी का आयोजन दो चरणों में किया गया है। अब दूसरे चरण में रणजी के चार क्वार्टर फाइनल छह से 10 जून तक खेले जाएंगे। इसके क्वार्टर फाइनल में बंगाल का सामना झारखंड, मुंबई की भिड़ंत उत्तराखंड, कर्नाटक का मुकाबला उप्र और अंतिम क्वार्टर फाइनल में पंजाब और मध्य प्रदेश आमने-सामने होगी।

राशिफल

मेष-:आपको रुका हुआ धन मिलेगा और आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होगा. घर में कुछ बदलाव आपको काफी भावुक कर सकते हैं, लेकिन जो आपके लिए खास हैं, उनके सामने आप अपनी भावनाओं का इजहार कर पाएंगे।

वृष-:आज आपका मन पूजा-पाठ में अधिक लगेगा. आज आप अपने माता-पिता के साथ मंदिर जाने की योजना बना सकते हैं। कई दिनों से चली आ रही परेशानियां आज खत्म हो सकती हैं।

मिथुन-:परिवार के लिए आज का दिन शुभ है। आत्म विश्वास में वृद्धि होगी। बहुत उत्साहित रहेंगे। साहसिक कार्य करने से बचें। मान-सम्मान में वृद्धि होगी। नौकरी में अधिकारियों का सहयोग मिलेगा।

कर्क-:आपके घर से जुड़ा निवेश फायदेमंद रहेगा। अपने करीबी लोगों के सामने ऐसी बातें उठाने से बचें, जो उन्हें दुखी कर सकती हैं। प्रेम की दृष्टि से आज का दिन बेहद खास रहेगा।

सिंह-:आज का दिन लाभकारी रहेगा. आज आपके दोस्त आपके रुके हुए काम में आपकी मदद करेंगे। आज आपके शत्रु आपसे दूरी बनाए रखेंगे। आज आपको अपने किसी करीबी से खुशखबरी मिल सकती है।

कन्या-:आज आप अकेलापन महसूस कर सकते हैं, इससे बचने के लिए कहीं बाहर जाएं और दोस्तों के साथ कुछ समय बिताएं. जल्दबाजी में निर्णय न लें। व्यापार और व्यापार के लिए आपको कड़ी मेहनत करनी पड़ेगी।

तुला-:आपके घर से जुड़ा निवेश फायदेमंद रहेगा. यदि बातचीत और चर्चा आपके अनुसार नहीं है तो आप गुस्से में कड़वी बातें कह सकते हैं, जिसके बारे में आपको बाद में पछताना पड़ सकता है।

वृश्चिक-:आज आपका दिन राहत भरा रहने वाला है. आज आपके पारिवारिक जीवन में उत्साह का माहौल रहेगा। इस राशि के शायरों के लिए आज का दिन बेहद अहम रहने वाला है। आज आपको अपनी प्रतिभा का पुरस्कार भी मिल सकता।

धनु-:आज का दिन नया काम शुरू करने के लिए शुभ समय है. परिवार के सदस्यों के साथ मतभेद दूर कर आप अपने उद्देश्यों को आसानी से पूरा कर सकते हैं। प्रिय व्यक्ति से मेल-मिलाप होगा।

मकर-:आज का दिन विशेष है, क्योंकि अच्छा स्वास्थ्य आपको कुछ असाधारण कार्य करने की क्षमता देगा. यदि आप आय में वृद्धि के स्रोतों की तलाश कर रहे हैं, तो सुरक्षित आर्थिक परियोजनाओं में निवेश करें।

कुंभ-:आज भाग्य साथ देगा. ऑफिस में आज का काम इस राशि के बिजनेसमैन को ज्यादा फायदा देने वाला है। यदि आप कोई नया व्यवसाय शुरू करने की सोच रहे हैं तो आज का दिन शुभ है। धन के साथ सुख आएगा।

मीन-:आज निर्णय न ले पाने के कारण नए कार्यों की शुरुआत करना आपके लिए शुभ नहीं है. आज आप रिश्ते में औपचारिकता बनाए रखेंगे, अन्यथा मनमुटाव होने की संभावना है। मनोबल से सभी कार्य पूर्ण होंगे।

सम्पादकीय

किसी सैन्य घटक के बिना क्वाड न तो हिंद-प्रशांत क्षेत्र में शांति कायम करने में समर्थ हो सकेगा और न ही चीन की काट कर पाएगा

टोक्यो में आयोजित क्वाड देशों का तीसरा शिखर सम्मेलन विश्व व्यवस्था के निर्धारण में हिंद-प्रशांत की केंद्रीय भूमिका की पुष्टि का प्रतीक है। इस समय रूस-यूक्रेन युद्ध के कारण अंतरराष्ट्रीय समुदाय का ध्यान पूर्वी यूरोप पर टिका हुआ है। ऐसी स्थिति में क्वाड के चारों देशों भारत, अमेरिका, जापान और आस्ट्रेलिया के राष्ट्र प्रमुखों का जापान में बैठक करना और एशिया के भविष्य की रूपरेखा पर रणनीति बनाना यही संकेत करता है कि एशिया में शक्ति संतुलन ही अंततः वैश्विक भू-राजनीति एवं भू-अर्थनीति में निर्णायक सिद्ध होगा। द्वितीय विश्व युद्ध के उपरांत अमेरिका की राष्ट्रीय सुरक्षा नीति यही रही कि दुनिया के तीन प्रमुख क्षेत्रों में किसी भी प्रतिद्वंद्वी को हावी नहीं होने देना है। ये प्रमुख क्षेत्र रहे यूरोप, पश्चिम एशिया और पूर्वी एशिया। इसके पीछे अमेरिका का यह सोच रहा कि इनमें से कहीं भी अगर शक्ति संतुलन अमेरिका के विपरीत गया तो उसके लिए वैश्विक महाशक्ति बने रह पाना संभव नहीं होगा। बाइडन प्रशासन द्वारा 2021 में जारी 'राष्ट्रीय सुरक्षा सामरिक मार्गदर्शन' में यही दोहराया गया है। उससे यही स्पष्ट होता है कि अमेरिकी सुरक्षा के लिए दुनिया के प्रमुख क्षेत्रों पर विरोधियों का आधिपत्य होने से रोकना अनिवार्य है। पश्चिम एशिया और यूरोप में कोई ऐसी शक्ति नहीं जो अमेरिकी वर्चस्व को चुनौती दे सके। ईरान और रूस जैसे देश अमेरिका को परेशान करते आए हैं, लेकिन उनमें उतना आर्थिक एवं सैन्य बल नहीं, जिससे वे अमेरिका को मात दे सकें। केवल पूर्वी एशिया में स्थित चीन ही अमेरिका को चुनौती देने में सक्षम दिखाई पड़ता है और वह इसके कमर भी कस रहा है। अमेरिका भी इससे भलीभांति अवगत है। यही कारण है कि अमेरिकी राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार जेक सुलिवन ने कहा कि हिंद-प्रशांत क्षेत्र ही इक्कीसवीं सदी के भविष्य को परिभाषित करेगा और अमेरिकी राष्ट्रपति बाइडन इस मामले में अमेरिकी नेतृत्व एवं भागीदारी को लेकर प्रतिबद्ध हैं। उल्लेखनीय है कि क्वाड के साथ ही अमेरिका एक और महत्वाकांक्षी पहल कर रहा है। इसे 'हिंद-प्रशांत आर्थिक ढांचा' नाम दिया गया है। इसमें अमेरिका, भारत, आस्ट्रेलिया, ब्रूनेई, इंडोनेशिया, जापान, दक्षिण कोरिया, मलेशिया, न्यूजीलैंड, फिलीपींस, सिंगापुर, थाईलैंड और वियतनाम शामिल हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का इस फ्रेमवर्क के उद्घाटन पर उपस्थित होना दर्शाता है कि भारत इसके सामरिक लाभ को समझता है। आपूर्ति श्रृंखला को लचीला बनाना, 5जी तकनीक का सुरक्षित एवं भरोसेमंद विकास, उच्च गुणवत्ता वाला बुनियादी ढांचा और स्वच्छ ऊर्जा का उत्पादन आदि इस गठजोड़ के प्रमुख उद्देश्य बताए जा रहे हैं। सुलिवन ने डंके की चोट पर कहा कि इसकी धमक बीजिंग तक सुनाई पड़ेगी। इसमें चीन की बेल्ट एंड रोड परियोजना को टक्कर देने की पूरी संभावना है। यह क्वाड प्लस के रूप में उसका औपचारिक विस्तार तो नहीं, किंतु अनौपचारिक तरीके से आकार लेने वाले इस ढांचे में चीन की काट करने की क्षमता जरूर है। क्वाड के चार मूल सदस्य ही हिंद-प्रशांत क्षेत्र में बहुआयामी क्षमता रखते हैं। ऐसे में उन्हें स्वाभाविक रूप से इस इकोनमिक फ्रेमवर्क का साझा नेतृत्व करना होगा। ये चारों देश पहले ही इन्फ्रास्ट्रक्चर, वैक्सीन, आपूर्ति श्रृंखला, सामरिक साझेदारी और सेमीकंडक्टर आदि क्षेत्रों में समझौते कर चुके हैं और उनमें से कुछ पर काम भी शुरू हो चुका है। ऐसे में साझेदारी के इस दायरे को बढ़ाना और नए सहयोगियों को उसमें जोड?ा ही बुद्धिमत्ता होगी। अमूमन यही माना जाता है कि जिन अंतरराष्ट्रीय आर्थिक ढांचों में अधिक हितधारक होते है, वहां समन्वय, सहमति बनाकर अपेक्षित कार्य को शीघ्रता से संपादित करना संभव नहीं होता। इसलिए इस फ्रेमवर्क में विभिन्न पक्षों को देखते हुए उसकी कार्यसंस्कृति को बेहतर बनाने के उपाय करने होंगे। बाइडन प्रशासन कहता आ रहा है कि उसका लक्ष्य यह सिद्ध करना है कि 'लोकतांत्रिक देश वादों और अपेक्षाओं पर खरे उतर सकते हैं और तानाशाही वाले देशों से बेहतर प्रदर्शन दिखा सकते हैं।'

भूजल संरक्षण की राह दिखाता पंजाब, धान की खेती में पानी की खपत बचाने की ठोस पहल

पंजाब में धान की फसल के लिए वर्षों से पानी के अंधाधुंध दोहन के चलते रसातल में जा पहुंचे भूजल की गंभीर समस्या से निपटने के लिए भगवंत मान सरकार ने जो पहल की है, वह उम्मीद की नई रोशनी लेकर आई है। पंजाब की नई सरकार ने हाल में धान की बुआई के लिए 1,500 रुपये प्रति हेक्टेयर प्रोत्साहन राशि देने की घोषणा की है। इसमें डीएसआर (डायरेक्ट सीडिंग राइस) विधि यानी सीधी बुआई के तरीके को अमल में लाया जाएगा। डीएसआर विधि के तहत धान के बीजों को एक मशीन की मदद से नम मिट्टी वाले खेतों में सीधे बोया जाता है। पारंपरिक विधि में धान के पौधों को पहले नर्सरी में उगाया जाता है, फिर उन्हें पानी से भरे खेत में रोपा जाता है। उल्लेखनीय है कि धान की पारंपरिक तरीके से खेती में पानी की अत्यधिक खपत होती है। पंजाब को गेहूं और धान के उत्पादन में भारत का अनन्न भंडार कहा जाता है। एक समय पंजाब जल संसाधन से संपनन्न था और कृषि के मामले में एक आत्मनिर्भर राज्य था। पंजाब हरित क्रांति का एक प्रमुख गढ़ बना। इस क्रांति का लक्ष्य भारत को भूख से मुक्त करना था। पंजाब के किसानों ने खेती के नए तरीकों को अपनाने में बहुत लचीलापन दिखाया, लेकिन इसकी कीमत उनके पानी, उनकी मिट्टी और यहां तक कि उनकी सेहत को भी चुकानी पड़ी। हरित क्रांति के बाद 1972 और 1985-86 के बीच भारत की कृषि विकास दर 2.3 प्रतिशत थी, जबकि पंजाब की दर 5.7 प्रतिशत थी। इसके बाद पंजाब में अगले दो दशकों में गिरावट देखी गई और 2005-06 तथा 2014-15 के बीच 1.61 प्रतिशत की गिरावट आई। पंजाब के कृषि संकट का कारण भूजल का ज्यादा दोहन और गलत फसल पद्धतियां अपनाया जाना है। पंजाब कृषि विश्वविद्यालय के एक अध्ययन में पाया गया कि 1998 से 2018 तक राज्य के 22 में से 18 जिलों में हर साल भूजल स्तर में एक मीटर से अधिक की गिरावट आई। पंजाब में भूजल का

स्तर इसलिए नीचे जाता गया, क्योंकि यहां धान की खेती पारंपरिक विधि से ही की जाती रही, जिसमें पानी की अधिक खपत होती है। धान की सीधी बुआई वाली डीएसआर तकनीक से 15 से 20 प्रतिशत पानी की बचत होती है। इसके अलावा भूजल स्तर में 10 प्रतिशत से अधिक का सुधार होता है। स्पष्ट है कि यह तकनीक जल स्तर में आती खतरनाक गिरावट को काफी हद तक रोक सकती है। धान की परंपरागत रोपाई विधि के तहत किसान नर्सरी में धान के बीजों से पौधों को उगाता है। बाद में इन पौधों को लगभग एक महीने बाद पानी वाले खेत में लगाता है। रोपाई के बाद पहले तीन-चार हफ्तों तक खेतों में चार-पांच सेमी पानी सुनिश्चित करने के लिए धान की फसल को लगभग दैनिक रूप से पानी देना पड़ता है। जब धान की पौध का तना विकास के चरण में होता है, तब अगले चार-पांच सप्ताह तक आम तौर पर किसान हर दो-तीन दिनों में खेत की सिंचाई करते है। चूंकि धान की सीधी बुआई वाली डीएसआर तकनीक में पानी से भरे खेत की आवश्यकता नहीं होती, इसलिए मिट्टी की गुणवत्ता में सुधार होता है। इसके परिणामस्वरूप अगली फसल में उपज में वृद्धि होती है। चूंकि डीएसआर तकनीक में पानी और बिजली की भी बचत होती है, इसलिए वह किसानों के लिए कहीं किफायती है। इससे धान की रोपाई में आने वाला मजदूरी का खर्च भी बचता है। धान की खेती में डीएसआर तकनीक अपनाने से लागत 2,000-2,500 रुपये प्रति एकड़ से अधिक नहीं आती। इसमें मशीन का किराया, कीटनाशक स्प्रे और खेत को फसल के लिए तैयार करना भी शामिल है। एक आंकड़े के अनुसार 2020 में इस पद्धति से धान की खेती करने वाले किसान प्रति एकड़ लगभग 4,000 से 5,000 रुपये बचाने में कामयाब रहे। इससे लगभग 500 से 600 करोड़ रुपये की बचत हुई। पंजाब सरकार का लक्ष्य अब इस बचत को तीन गुना करना है। इसके लिए मान सरकार ने 12 लाख हेक्टेयर क्षेत्र को धान की सीधी बुआई यानी डीएसआर तकनीक के तहत लाने का लक्ष्य रखा है। यह पिछले साल डीएसआर के तहत क्षेत्र की तुलना में लगभग दोगुना होगा। इससे बहुत अधिक दीर्घकालिक लाभ होंगे। पंजाब के 20 फीसद क्षेत्र में किसान पहले से ही धान की सीधी बुआई कर रहे हैं, लेकिन यह ध्यान रहे कि पंजाब के लिए डीएसआर तकनीक की सिफारिश 2010 में की गई थी। पता नहीं किन कारणों से पिछली सरकारों ने इसकी खूबियों से अवगत होने के बावजूद गत 12 वर्षों से इस तकनीक को बढ़ावा देने और किसानों को प्रोत्साहित करने के लिए कोई प्रयास नहीं किया? इसका परिणाम यह हुआ कि भूजल का स्तर और गिरता चला गया। कोविड महामारी ने डीएसआर को एक आशा की किरण के रूप में सामने लाने और पंजाब को अपने खोए हुए संसाधनों को पुनः प्राप्त करने का एक रास्ता दिखाया। डीएसआर तकनीक से होने वाले लाभ को देखते हुए ही पंजाब की आम आदमी पार्टी सरकार ने पिछली सरकारों की ऐतिहासिक गलती को सुधारने और धान की सीधी बुआई को प्रोत्साहित करने का फैसला किया है। पंजाब के किसानों ने राज्य को भारत का अनन्न का कटोरा बनाने में बहुत योगदान दिया है। अब समय आ गया है कि कारगर साबित हो चुकी डीएसआर तकनीक को सभी किसानों की ओर से सहर्ष अपनाया जाए, ताकि भूजल संरक्षण के संकल्प को हासिल किया जा सके। इसके लिए उद्यम की भावना का प्रदर्शन करना होगा। इससे ही राज्य फिर से हंसता-खेलता पंजाब बनेगा। वास्तव में आवश्यकता तो इस बात की है कि धान की खेती के मामले में डीएसआर तकनीक को अन्यत्र भी अपनाया जाए, क्योंकि देश के कई इलाके ऐसे हैं, जहां भूजल का स्तर लगातार गिरता जा रहा है।

अनिश्चित वैश्विक परिदृश्य के कारण यह आवश्यक हो गया है कि महंगाई पर लगाम लगाई जाए

लगातार परेशान करती महंगाई के बीच शनिवार की शाम एक राहत भरी खबर आई। केंद्र सरकार ने पेट्रोल और डीजल पर उत्पाद शुल्क घटाने का एलान किया, जिससे बेलगाम महंगाई पर कुछ लगाम लगने की उम्मीद बंधी है। इससे जहां लोगों का आवाजाही से जुड़ा खर्च घटेगा, वहीं आवश्यक वस्तुओं की ढुलाई सस्ती होने से भी राहत मिलेगी। पिछले कुछ अर्से से प्रत्येक वर्ग पर महंगाई का असर दिखने लगा था। विशेषकर निमन्आय वर्ग के लिए यह नासूर बनती जा रही थी। इस तबके की आमदनी का एक बड़ा हिस्सा खानपान और ईंधन पर खर्च होता है। इस कारण बढ़ती कीमतों से उसका बजट बिगड़ता जा रहा था। ऐसे में सरकार के लिए कोई राहत देना आवश्यक हो गया था। इससे पहले गत नवंबर में भी केंद्र सरकार ने पेट्रोल-डीजल पर उत्पाद शुल्क घटाया था, लेकिन रूस-यूक्रेन युद्ध के बाद कच्चे तेल की कीमतों में बढ़ोतरी से उस कटौती का असर जाता रहा। महंगाई इस समय केवल भारत की समस्या नहीं है। तमाम देश इससे बुरी तरह त्रस्त हैं। भारत में तो करीब छह प्रतिशत मुद्रास्फीति का लक्ष्य भी सहज मान लिया जाता है। वहीं अमेरिका इसके लिए अधिकतम दो प्रतिशत का लक्ष्य तय करता है, लेकिन वहां मुद्रास्फीति की दर 8.3 प्रतिशत के स्तर पर पहुंच गई है, जो महंगाई की विकराल स्थिति को दर्शाता है। यूरोप का भी यही हाल है। कुल मिलाकर अधिकांश देश अभी महंगाई की मार से बेहाल हैं। फिलहाल रूस-यूक्रेन युद्ध इसका तात्कालिक कारण है। इस युद्ध ने दुनिया भर में तेल और गैस के दाम आसमान पर चढ़ा दिए हैं। खाद्य वस्तुओं के दाम भी उसकी चपेट में आ गए हैं। रूस और यूक्रेन दुनिया को गेहूं की बड़े पैमाने पर आपूर्ति करते हैं। यूक्रेन सूरजमुखी तेल का भी बड़ा उत्पादक है। उसके रणक्षेत्र में बदलने से इन उत्पादों की आपूर्ति पर असर पड़ा है। इस लड़ाई ने वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला को भी छिनन्भिनन्कर दिया है। केवल यही नहीं, बल्कि इसके कारण आपूर्ति केंद्रों के समीकरण भी गड़बड़ा गए हैं और उन्हें नए सिरे से तय करना पड़ रहा है। यह प्रक्रिया खर्चीली होने के साथ ही ज्यादा समय भी ले रही है। इससे वस्तुओं के दाम बढ? के साथ ही उनकी आपूर्ति का समय प्रभावित हो रहा है, जिससे उनकी किल्लत पैदा हो रही है। इस कारण भी कीमतों में बढ़ोतरी का रुझान दिख रहा है। वहीं चीन में कोविड के विस्फोट एवं उस पर काबू पाने की कड़ी नीति ने आर्थिक मोर्चे पर एक नया जोखिम उत्पनन्कर दिया है। भारत बड़े पैमाने पर कच्चे तेल, गैस के अलावा तमाम औद्योगिक जिंसों और खाद्य तेल जैसी वस्तुओं का आयात करता है तो उस पर इनका असर पड?ा स्वाभाविक है। इसे आयातित महंगाई का नाम दिया जाता है। इसका आशय है आयात की जाने वाली वस्तुओं के कारण बढ? वाली महंगाई। सामान्य परिस्थितियों में भारतीय महंगाई

परिदृश्य में आयातित महंगाई का अनुपात करीब 28 से 30 प्रतिशत के दायरे में होता है, लेकिन इस समय यह 60 प्रतिशत से भी ऊपर है। यह स्थिति की गंभीरता को दर्शाने के लिए पर्याप्त है कि वैश्विक रुझान किस प्रकार भारत में महंगाई की आग को हवा दे रहे है। कीमतों पर असर डालने के अलावा ये आर्थिक गतिविधियों की धार कुंद करने पर भी आमादा हैं। जैसे चीन में कोविड के कारण लगे लाकडाउन से देसी कंप्यूटर हार्डवेयर, कंज्यूमर ड्यूरेबल्स और दूरसंचार क्षेत्र की आपूर्ति पर असर पड़ा है। भारत अपनी आवश्यकता का करीब 53 प्रतिशत कंप्यूटर हार्डवेयर, 52 प्रतिशत कंज्यूमर ड्यूरेबल्स और 43 प्रतिशत दूरसंचार उपकरण एवं उनके निर्माण में आवश्यक कलपुर्जे चीन से आयात करता है। ऐसे में यदि यह गतिरोध लंबा चला तो मुश्किलें और बढ़ सकती हैं। इस आयातित महंगाई का दीर्घकालिक समाधान यही है कि जहां भारत हाइड्रोकार्बन पर अपनी निर्भरता घटाए, वहीं अधिक से अधिक वस्तुओं का घरेलू उत्पादन करे। सरकार द्वारा हरित ऊर्जा पर जोर और सेमीकंडक्टर जैसे उद्योग की स्थापना के लिए प्रोत्साहन इस दिशा में स्वागतयोग्य है, लेकिन उनके अपेक्षित परिणाम आने में समय लगेगा। मौजूदा परिस्थितियों की बात करें तो पेट्रोल-डीजल पर कर की दर घटाने की बहुत ज्यादा गुंजाइश न होने के बावजूद सरकार को ऐसा करने के लिए विवश होना पड़ा। दरअसल महंगाई नियंत्रण में मौद्रिक नीति के मोर्चे पर भारतीय रिजर्व बैंक ने नीतिगत ब्याज दरों में बढ़ोतरी की प्रक्रिया शुरू कर दी है और आगे भी उसने दरों में तेजी कायम रखने के संकेत दिए हैं। ऐसे में अब पूरा दारोमदार राजकोषीय नीति पर आ गया था कि सरकार अपने स्तर पर कोई कदम उठाए। पेट्रोलियम उत्पादों पर उत्पाद शुल्क की दरें घटाना इसी रणनीति का हिस्सा है। जल्द ही इसका असर देखने को मिलेगा, जब महंगाई के आंकड़े सामने आएंगे। फिर भी इसमें कुछ समय तो लगेगा। सरकार पर इस कटौती के असर को लेकर वित्त मंत्री ने स्वयं स्वीकार किया है कि इस कारण सरकारी खजाने पर करीब एक लाख करोड़ रुपये का बोझ बढ़ेगा। इससे पहले सरकार उर्वरक सब्सिडी में दोगुनी बढ़ोतरी कर चुकी है। खाद्य सब्सिडी पर भी उसका खर्च बढ?ा तय है। इन पहलुओं को जोड़कर देखा जाए तो सरकार के राजकोषीय घाटे में बढ़ोतरी निश्चित है। ऐसी स्थिति में सरकार को या तो बढ़े खर्च की पूर्ति के लिए ऋण लेना होगा, जिससे अन्य क्षेत्रों के लिए वित्तीय संसाधन सीमित होंगे या फिर सरकार को अपने पूंजीगत व्यय में कटौती करनी होगी। यानी सरकार के लिए एक तरफ कुआं और दूसरी तरफ खाई जैसी स्थिति है। इस मुश्किल माहौल में कुछ सकारात्मक पहलू भी हैं। जैसे अगर महंगाई बढ़ रही है तो उससे नामिनल जीडीपी में बढ़ोतरी होगी और उसी अनुपात में कर संग्रह में भी तेजी आएगी। कोविड के बाद आर्थिक गतिविधियों में भी खासी तेजी का रुख हौसला बढ़ाने वाला है। वहीं जीएसटी जैसे आर्थिक सुधार के सकारात्मक प्रभाव अब प्रत्यक्ष दिखने लगे हैं। मानसून पूरी तरह मेहरबान रह सकता है। ऐसे में यदि सरकार महंगाई पर काबू पाने में कामयाब रहती है तो आर्थिक वृद्धि की तस्वीर को बदरंग होने से बचाया जा सकता है। अनिश्चित वैश्विक परिदृश्य के कारण यह और भी आवश्यक हो गया है कि महंगाई पर लगाम लगाई जाए, क्योंकि उससे व्यापक राहत के आसार नहीं दिख रहे।पिछले दिनों प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि कोविड महामारी और वर्तमान वैश्विक संघर्षों के बीच अपनी नई प्रतिभाशाली पीढ़ी के बल पर भारत स्टार्टअप और साफ्टवेयर से लेकर अंतरिक्ष जैसे विभिनन्क्षेत्रों में सामर्थ्यवान देश के रूप में उभर रहा है और दुनिया की समस्याओं का समाधान भी पेश कर रहा है। मोदी ने युवाओं से आग्रह किया कि वे अगर 15 अगस्त, 2023 तक डिजिटल लेन-देन करें और नकदी का व्यवहार न करें तो देश में एक बड़ी आर्थिक क्रांति ला सकते हैं। इसमें कोई दो मत नहीं कि मजबूत होती भारतीय अर्थव्यवस्था से भारत सामर्थ्यवान बनता जा रहा है। निःसंदेह इस समय यूक्रेन संकट के कारण जब अमेरिका और जापान सहित दुनिया की विभिनन्अर्थव्यवस्थाएं मंदी का सामना कर रही हैं, तब भारत तेजी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्था वाले देश के रूप में चिन्हित किया जा रहा है। संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि वृद्धि चालू वित्त वर्ष में भारत के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी)में 6.4 प्रतिशत की वृद्धि होने का अनुमान है। यह कोई छोटी बात नहीं है कि वैश्विक मंदी की चुनौतियों के बीच वित्त वर्ष 2021-22 में भारत में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआइ) में रिकार्ड बढ़ोतरी हुई है। वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के मुताबिक भारत ने वित्त वर्ष 2021-22 में 83.57 अरब डालर का रिकार्ड एफडीआइ प्राप्त किया है। वहीं वित्त वर्ष 2020-21 में यह आंकड़ा 81.97 अरब डालर था। प्रमुख निवेशक देशों के मामले में सिंगापुर 27 प्रतिशत के साथ शीर्ष पर मौजूद है। इसके बाद अमेरिका 18 प्रतिशत के साथ दूसरे, जबकि मारीशस 16 प्रतिशत के साथ तीसरे स्थान पर है। कंप्यूटर साफ्टवेयर एवं हार्डवेयर, सेवा क्षेत्र और आटोमोबाइल उद्योग में सबसे अधिक एफडीआइ प्राप्त हुआ है। देश का विदेशी मुद्रा भंडार भी इस समय करीब 600 अरब डालर के मजबूत स्तर पर दिखाई दे रहा है। आज भारत मैन्यूफैक्चरिंग के क्षेत्र में विदेशी निवेश के लिए एक पसंदीदा देश के रूप में तेजी से उभर रहा है। दुनिया भर में यह माना जा रहा है कि भारत सस्ती लागत के विनिर्माण में चीन को पीछे छोड़ सकता है। भारत में विनिर्माण उद्योग जितनी अधिक तरक्की करेंगे, अर्थव्यवस्था में उतने ही अधिक रोजगार सृजित होंगे। भारत में श्रम लागत चीन की तुलना में सस्ती है। भारत के पास तकनीकी और पेशेवर प्रतिभाओं की भी कमी नहीं है। इसके अलावा केंद्र सरकार ने उद्योग-कारोबार, करारोपण और विभिनन्श्रम कानूनों को सरल बनाया है। इससे भी उद्योग-कारोबार आगे बढ़ रहे है। यह बात भी महत्वपूर्ण है कि कोविड-19 के बीच चीन के प्रति बढ़ी हुई वैश्विक नकारात्मकता और चीन में कोरोना संक्रमण के कारण उद्योग-व्यापार में ठहराव के चलते चीन से बाहर निकलते विनिर्माण, निवेश और निर्यात के मौके भारत की ओर आने लगे है। वहीं अब विशेष आर्थिक क्षेत्र (सेज) की नई अवधारणा और नए निर्यात प्रोत्साहनों से देश को दुनिया का नया मैन्यूफैक्चरिंग हब बनाए जाने और आयात में कमी लाने की संभावनाएं भी उभरकर दिखाई दे रही है। सेज की नई अवधारणा के तहत सरकार द्वारा सेज से अंतरराष्ट्रीय बाजार और राष्ट्रीय बाजार के लिए विनिर्माण करने वाले उत्पादकों को विशेष सुविधाओं से नवाजा जाएगा। देश को सामर्थ्यवान बनाने में देश के कृषि क्षेत्र की भी अहम भूमिका है। कृषि मंत्रालय द्वारा प्रस्तुत तीसरे अग्रिम अनुमान के अनुसार फसल वर्ष 2021-22 में देश में कुल खाद्यानन्उत्पादन रिकार्ड 31. 45 करोड़ टन होगा, जो पिछले वर्ष की तुलना में 37.7 लाख टन अधिक है। यद्यपि इस वर्ष गेहूं का उत्पादन 10.64 करोड़ टन होगा, जो कि पिछले साल के मुकाबले 31 लाख टन कम है, लेकिन धान, मोटे अनाज, दलहन और तिलहन का रिकार्ड उत्पादन होता दिखाई दे रहा है। ऐसे परिदृश्य से जहां महंगाई और गरीबी नियंत्रित रहेगी, वहीं कृषि निर्यात से जरूरतमंद देशों की मदद करते हुए विदेशी मुद्रा की कमाई भी की जा सकेगी।

कल्याणकारी योजनाओं से दिव्यांगजनों को सशक्त बना रही है प्रदेश सरकार

प्रतापगढ़।प्रदेश सरकार दिव्यांगजनों के हितार्थ अनेक कल्याणकारी योजनाओं को संचालित कर उन्हें सशक्त बना रही है। ये सभी योजनाएं दिव्यांगजनों को पुनर्वासित कर समाज की मुख्य धारा में शामिल करने के अपने वृहतर उद्देश्य की पूर्ति करती है।दिव्यांगजन सशक्तीकरण विभाग द्वारा संचालित विभिनन्योजनाएं दिव्यांगजनों के आर्थिक, शैक्षणिक पुनर्वासन के साथ आवश्यक शारीरिक एवं मानसिक पुनर्वासन को भी सुनिश्चित किया जा रहा है।प्रदेश सरकार दिव्यांग व्यक्तियों हेतु भरण पोषण अनुदान (दिव्यांग पेंशन) योजना के अन्तर्गत ऐसे दिव्यांगजन जिनके जीवनयापन के लिए स्वयं का न तो कोई साधन है और न ही वे किसी प्रकार का परिश्रम कर सकते हैं उनके भरण-पोषण हेतु प्रदेश सरकार द्वारा दिव्यांग भरण-पोषण अनुदान योजना अंतर्गत पूर्व में रू0 500 प्रति माह लाभार्थी की दर से अनुदान दिया जाता था, उसको प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी ने दिनांक 01 दिसम्बर, 2021 से बढ़ाकर रू0 1,000 प्रति माह प्रति लाभार्थी की दर से देने का आदेश जारी किया है। अद्यतन वित्तीय वर्ष 2021-22 में दिव्यांगजन पेंशन योजना के अन्तर्गत प्राविधानित धनराशि रू0 89402.00 लाख के सापेक्ष रू0 89401.98 लाख का व्यय करते हुए चतुर्थ किश्त में अद्यतन कुल 11,17,314 दिव्यांगजन को लाभान्वित किया गया है। कुष्ठावस्था पेंशन योजना के अंतर्गत कुष्ठ रोग के कारण दिव्यांग हुए दिव्यांगजन को पूर्व में रू0 2500 प्रति माह प्रति लाभार्थी की दर से अनुदान दिया जाता था, जिसको मुख्यमंत्री जी ने दिनांक 01 दिसम्बर, 2021 से बढ़ाकर रू0 3,000 प्रति माह प्रति लाभार्थी की दर से कर दिया है। उसी दर से लाभान्वित किया जा रहा है। अद्यतन वित्तीय वर्ष 2021-22 में कुष्टावस्था पेंशन योजना के अन्तर्गत प्राविधानित धनराशि रू0 3900.00 लाख के सापेक्ष कुल 11,430 कुष्ठ रोग के कारण दिव्यांग हुए दिव्यांगजन को लाभान्वित किया गया है। प्रदेश में शारीरिक रूप से अक्षम व्यक्तियों को कृत्रिम अंग एवं सहायक उपकरण क्रय हेतु अनुदान योजना संचालित करते हुए प्रदेश में 40 प्रतिशत या उससे अधिक की दिव्यांगता वाले दिव्यांगजन जिनकी आय गरीबी की रेखा के अन्दर हो, को अधिकतम रू0 10,000 के कृत्रिम अंग/सहायक उपकरण सरकार द्वारा प्रदान किया जाता है। इस योजनान्तर्गत वित्तीय वर्ष 2021-22 में प्राविधानित धनराशि रू0 3740.00 लाख के सापेक्ष कुल 19,964 दिव्यांगजन को लाभान्वित किया गया है। दिव्यांगजनों के लिए संचालित शल्य चिकित्सा अनुदान योजना के अंतर्गत शल्य चिकित्सा नियमावली के अर्न्तगत विभाग द्वारा 21 प्रकार की शल्य क्रियाओं के लिए प्रति लाभार्थी प्रति वर्ष रुपये 8000 की दर से अनुदान देय था।

निलम्बित लेखपाल दीपक कुमार शर्मा बिना किसी सूचना के लापता

(आधुनिक समाचार सेवा)
देव मणि शुक्ल

नोएडा । सहायक अभिलेख अधिकारी/उप जिलाधिकारी जेवर रजनीकांत ने जानकारी देते हुये बताया कि सर्वे लेखपाल दीपक कुमार शर्मा को सहायक अभिलेख अधिकारी, गौतमबुद्धनगर के आदेशों के क्रम में 07 जनवरी, 2021 को निलम्बित किया गया था, जिसको निलम्बन के उपरांत रजिस्ट्रार कानूनगों कार्यालय तहसील सदर, जनपद गौतमबुद्धनगर से सम्बद्ध किया गया। उन्होंने बताया कि मा0 राजस्व परिषद द्वारा निलम्बित सर्वे लेखपाल कार्यालय, सहायक अभिलेख अधिकारी, गौतमबुद्धनगर दीपक शर्मा को राजस्व परिषद, उ0प्र0 लखनऊ से सम्बद्ध किया गया, उक्त के अनुपालन में दीपक कुमार शर्मा सर्वे लेखपाल को सहायक अभिलेख अधिकारी, गौतमबुद्धनगर कार्यालय से अवमुक्त प्रमाण पत्र अवमुक्त किया गया। मा0 राजस्व परिषद ने अपने पत्र दिनांक 28.04.2022 द्वारा अवगत कराया है कि दीपक कुमार शर्मा सर्वे लेखपाल ने अपनी योगदान आख्या अभी तक भी मा0 राजस्व परिषद के समक्ष प्रस्तुत नहीं की है। सर्वे लेखपाल दीपक कुमार शर्मा की व्यक्तिगत पत्रावली पर उपलब्ध पते पर विशेष वाहक घनश्यामदास सर्वे चैनमैन को भेजा गया, जिसमें उनके द्वारा अवगत कराया कि उक्त(उनकी व्यक्तिगत पत्रावली पर उपलब्ध पते) पते पर दीपक कुमार शर्मा नाम का कोई व्यक्ति नहीं रहता है। निलम्बित सर्वे लेखपाल दीपक कुमार शर्मा बिना किसी सूचना के फरार/लापता चल रहा है। उसके द्वारा आदेशों की तामील नहीं की जा रही है।

काँग्रेस के नेताओ ने पूर्व केन्द्रीय रेल मंत्री पवन बंसल से मुलाकात की

(आधुनिक समाचार सेवा)
देव मणि शुक्ल

नोएडा । काँग्रेस के नेताओ ने काँग्रेस मुख्यालय अकबर रोड पर पूर्व केन्द्रीय मंत्री एव राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष पवन बंसल जी से शिष्टाचार मुलाकात की,उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के सदस्य सतेन्द्र शर्मा ने बताया काँग्रेस के वरिष्ठ नेता पवन बंसल जी से मिलकर संगठन पर विस्तृत चर्चा की ।पवन बंसल ने कहा है कि काँग्रेस कार्यकर्ता जब्बे के साथ सँघर्ष कर रहा है आने वाला समय काँग्रेस पार्टी का है भाजपा के राज में हर वर्ग परेशान है एक साथ मिलकर सँघर्ष करना होगा भाजपा की जनविरोधी नीतियों का विरोध जमकर करना होगा और लोगो को जागरूक करने की जरूरत है,पीसीसी सदस्य लियाकत चौधरी ने कहा है कि वरिष्ठ नेताओं द्वारा किये गए सँघर्ष का अनुशरण कार्यकर्ताओ को करना चाहिये।मुलाकात करने वालो में पीसीसी सदस्य सतेन्द्र शर्मा,पीसीसी सदस्य लियाकत चौधरी,राहुल कुमार,जीतू शर्मा आदि गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

योग करने से शरीर मे ऊर्जा का समाहित होती है - सुप्रिया माहेश्वरी

(आधुनिक समाचार सेवा)
देव मणि शुक्ल

नोएडा । योग का मतलब है जोड़ना, खुद में ऊर्जा को समाहित करना। योग करने से हमे शारीरिक बल के साथ साथ आत्मबल भी सशक्त होता है। योगागुरु सुप्रिया माहेश्वरी का कहना है कि अगर शरीर और मन मजबूत है तभी हम अपने साथ साथ परिवार और समाज की देखभाल अच्छी प्रकार से कर सकते है। नारी प्रगति सोशल फाउंडेशन की मीडिया प्रभारी अलका वर्मा ने बताया कि इसी महत्ता को ध्यान में रखते हुए सेक्टर 50 के मेघदूतम पार्क में योगागुरु सुप्रिया माहेश्वरी जी के निर्देशन में योग शिविर का आयोजन किया गया जिसका उदस्य ना केवल विभिनन प्रकार के योग को करने का तरीका , सावधानियां एवं उसका अभ्यास कराना था बल्कि प्राप्त डोनेशन से बच्चो की शिक्षा में मदद करने के लिए लोगो को आमंत्रित करना था। संस्था की संस्थापक मीनाक्षी त्यागी , निशु गुप्ता ने योगागुरु सुप्रिया माहेश्वरी को योगा शिविर लगा कर स्वस्थ रहने के लिए विभिनन प्रकार के योगा क्रियाओं को बताने एवं बच्चो की शिक्षा में मदद करने के लिए दिल से आभार किया एवं नताशा कपूर, सती कुमार, सिम्मी वासु , सौरभ त्यागी, विशाल गुप्ता , अलका वर्मा का दिल से आभार व्यक्त किया जिहोने इस योग शिविर में शामिल होकर बच्चों की शिक्षा में डोनेशन देकर नेक कार्य में अपना योगदान दिया।

29 मई को लोक अदालत

(आधुनिक समाचार सेवा)
देव मणि शुक्ल

नोएडा । राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण सवीच्च न्यायालय, नई दिल्ली तथा उच्च न्यायालय इलाहाबाद के निर्देशों पर उ0प्र0 राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, लखनऊ तथा माननीय अध्यक्ष, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण/जनपद न्यायाधीश, श्री अशोक कुमार - सप्तम के दिशा-निर्देशन में आज अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश-प्रथम, श्री वेद प्रकाश वर्मा की अध्यक्षता में सभागार कक्ष, दीवानी न्यायालय परिसर, गौतमबुद्धनगर, में बैठक की गई। बैठक में श्री राजीव कुमार वत्स , अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश,/ नोडल अधिकारी/ राष्ट्रीय लोक अदालत, समस्त अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश एवम सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, श्री जयहिंद कुमार सिंह तथा फाइनेंस कम्पनी के अधिवक्तागण उपस्थित रहे। बैठक की अध्यक्षता करते हुए अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश - प्रथम द्वारा उपस्थित न्यायिक अधिकारीगणों एवं फाइनेंस कंपनियों के अधिवक्तागणों को 29 मई 2022 को आयोजित होने वाली विशेष लोक अदालत में अधिक से अधिक आर्बिटेशन के निष्पादन के वाद से सम्बन्धित वादों को चिन्हित करते हुए उनके पक्षकारों को नोटिस सम्मन के अतिरिक्त अन्य माध्यम जैसे मेल, एसएमएस, फोन किए जाने, तथा व्हाट्सएप के माध्यम से सूचना दिए जाने के संबंध में विचार विमर्श किया गया।

5 वर्षो का वार्षिक विवरणी आर0एन0आई में न प्रस्तुत करने पर प्रकाशन होगा रद्द

(आधुनिक समाचार सेवा)
देव मणि शुक्ल

नोएडा । अपर प्रेस पंजीकय, सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, भारत के समाचार पत्रों के पंजीयक कार्यालय नई दिल्ली द्वारा जनपद गौतमबुद्धनगर से प्रकाशित 261 समाचार पत्र/पत्रिकाओं की विगत पॉच वषी के दौरान वार्षिक विवरणी न प्रस्तुत करने पर प्रकाशन को रद्द करने से सम्बन्धित पत्र जिला कलेक्टर/जिला मजिस्ट्रेट को प्रेषित किया है। जिला मजिस्ट्रेट सुहास एल0वाई0 के निर्देश पर तत्सम्बन्धी समाचार पत्र/पत्रिकाओं की सूची उनके प्रकाशक/स्वामी के अवलोकनार्थ जिला सूचना कार्यालय गौतमबुद्धनगर में उपलब्ध है। उपरोक्त पत्र के द्वारा अवगत कराया है कि भारत के समाचार पत्रों के पंजीयक कार्यालय (आर0एन0आई0) प्रेस एवं पुस्तकों के पंजीयन अधिनियम 1867 के अन्तर्गत सम्बन्धित जिला मजिस्ट्रेट के द्वारा संस्तुति किये गये घोषणा पत्र के आधार पर समाचार पत्रों/पत्रिकाओं का पंजीयन करता है। पंजीकृत प्रकाशनों के स्वामी/प्रकाशक के लिए यह अनिवार्य है कि वह निर्धारित प्रपत्र में प्रेस एवं पुस्तक पंजीयन अधिनियम 1867 की धारा-19डी के अनुसार प्रत्येक वर्ष 31 मई तक अथवा उससे पूर्व वार्षिक विवरणी आर0एन0आई0 कार्यालय में जमा कर दें। पत्र के द्वारा यह अवगत कराया गया है कि ऐसे प्रकाशक जिन्होनें विगत तीन वषी तक वार्षिक विवरणी प्रस्तुत नहीं की थी जनवरी 2020 में अवसर प्रदान किया गया था कि वे अपनी वार्षिक विवरणी जमा कर दें। अपर प्रेस पंजीयक आर0एन0आई0 द्वारा जारी पत्र व जनपद गौतमबुद्धनगर के 261 पंजीकृत प्रकाशनों की सूची प्रकाशन स्थल के आधार पर जिला सूचना कार्यालय गौतमबुद्धनगर में उपलब्ध है। सम्बन्धित समाचार पत्र के स्वामी/प्रकाशक सूची देखकर वांछित सूचना जिला सूचना अधिकारी को 15 दिन के भीतर अनिवार्य रूप से उपलब्ध करा दें अन्यथा पी0आर0बी0 अधिनियम 1867 की धारा-8 के अन्तर्गत इन प्रकाशनों प्राधिकत घोषणा पत्र (फार्म-1) रदद् कर दिया जायेगा। आर0एन0आई0 के द्वारा जिन समाचार पत्रों के नाम पत्र के माध्यम से जिलाधिकारी को प्रेषित किये है उसमें विकल्प चेतना, समय संबंध, लोकमंच जन चेतना, बाजार गाइड, वॉइस ऑफ इंडिया, नोएडा लाइफ, लोह स्तंभ, जनता विद्यालय एच एस स्कूल जेवर मैगजीन, मतदाता लोक संपर्क ऑन लोकसेवा सूत्र, भवानी मेल, आनंद धाम, बुद्धि प्रकाश, यथार्थ समाचार, विकासशील भारत, नोएडा दर्पण, नोएडा टाइम्स, रिफॉर्म इंडिया, उत्तरांचल गौरव, स्वर्ण विधान, निशा संदेश, युगांचल, स्वतंत्र हिंद सत्ता, वॉइस ऑफ दी कॉरपोरेट वर्ल्ड, पंच सत्ता, न्यू नोएडा बाजार, विस ए विस, गांव देहात, वर्तमान सच्चाई, मीडिया सत्ता, सुदर्शन इंडिया, प्रोफाइलर, कानून की कलम, मंत्रा माधव, भारत धाम, कर्ण मीडिया, चारुशील भारत, जन जन की आवाज जनचेतना, प्राकृत मार्ग, जी आई एस एंड डेवलपमेंट, दा फ्यूचर जेड टाइम्स, देहात मोर्चा, फाइंड टिप्स, द संडे पोस्ट, नोएडा किंग, सुदर्शन भारत, इंडिया एब्रॉड एक्सप्रेस, टूडेज इकोनॉमिक्स, वर्तमान सत्ता, रोजगार सूचना एवं मार्गदर्शन, गौरव मंच, राष्ट्रीय राजधानी स्टार, अर्चना सत्ता, स्वदेशी आंचल, लोक दृष्टि, हिंदी की राजनीति, तरुण मेघ, ग्रहण, राज सरोकार, रेडियो दुनिया, डिजिटल लर्निंग इंडिया, ईगोव, द्रोण रथ, गोल्फ प्लस, ग्रेट जेवर टाइम्स, मंगलमय जर्नल ऑफ मैनेजमेंट एंड टेकनेलॉजी, अमर उजाला कॉम्पैक्ट, ट्रेड टाल्क, मानव युग, सिटी लाइफ लाइन, दा इंडिया पोस्ट जनरल, रिपोर्ट आप तक, सिटी वीकेंड, ग्रेटर नोएडा केशव आवाज, दा नेक्स्ट लोकेशन, गवर्नेंस नाउ, चैथी दुनिया, प्रणाम संदेश, मानस क्रांति, अमेठी जनरल ऑफ मार्केटिंग, अमेठी जनरल ऑफ हेल्थ केयर मैनेजमेंट, अमेठी जनरल ऑफ ट्रेनिंग एंड डेवलपमेंट, अमेठी जनरल ऑफ इकोनॉमिक्स,अमेठी जनरल ऑफ कॉपीरेट गवर्नेंस, अमेठी जनरल ऑफ ऑपरेशन मैनेजमेंट, अमेठी जनरल ऑफ इंटरप्रेन्योरशिप, अमेठी जनरल ऑफ फाइनेंस, अमेठी जनरल ऑफ मैनेजमेंट रिसर्च, अमेठी जनरल ऑफ एग्रीबिजनेस, सिटी चीयर्स, पॉलिटिकल मैगजीन, दमन का दस्तावेज, ग्रेट जेवर टाइम्स, वेब टुडे, प्रॉपर्टीज डॉट इन, ई ब्रोकर्स, एडवर्ट टाइम्स वर्ल्ड, आई एम एस क्षितिज, इलाइट दिल्ली, काजल, लैंड स्केप, ट्रीम, नोएडा परिक्रमा, हिंद के जज्बात, जर्नल ऑफ टीचर एजुकेशन एंड रिसर्च, आई एम एस मंथन, ग्राउंड टूरुथ, खौफ, लिटिल बिग ब्रिज, शिर्डी साई तपोवन, इनलाइटन मेंट, अफीबा टाइम्स, ई-गेमज, ई-लॉयर्स, दुनिया अब तक, पेट लाइफ, सर्कल, निर्भीक प्रहरी, एलपामा बुलेटिन, सिटी इन्फो, स्वास्थ्य सफलता समृद्धि, अथाह, पॉलिटिकल मैगजीन, नोएडा सिटी लुक, कानून की कलम, मकरंद, हमारा नोएडा, राष्ट्रीय धुरंधर, नोएडा फोकस, वर्ल्ड स्मॉल एंड मीडियम एंटरप्राइजेज न्यूज, नेशनल पॉलिटिक्स, तनुल टाइम्स, किसान परिवार, शोपी टुडे, अध्यात्मिक दर्पण, सिटी मार्केट अपडेट, प्रशासन पब्लिक और सरकार, राष्ट्रीय प्रधान, एजुकेशन वॉच ऑफ इंडिया, काव काव भारत, उज्जवल भारत समाचार, प्रज्ञा दर्शन, राष्ट्र शक्ति, भोर मेल, सजग साथी, भारतीय लेखक, पोर्ट्रेट ऑफ ट्रेड एंड इंडस्ट्री, तुम्हारा राज्य, नोएडा दूत, उद्योग अंकुर, डेवलपमेंट एजुकेशन, निर्माणशाला टाइम्स, दा पेकमैन, राष्ट्र की प्रगति, भारतीय सरोकार, पार्थ संदेश, जनरल ऑफ गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल एंड एब्डोमिनल रेडियोलॉजी इसगर, यूथ प्रेस एक्सप्रेस, ड्रीमलाइन एक्सप्रेस, प्रजातंत्र लाइव, खोड़ा एक्सप्रेस, दा इन्फ्राट्रक्चर कंस्ट्रक्शन एंड इंजीनियरिंग कनेक्ट, सक्षम समाचार दर्पण, जर्नल ऑफ क्लिनिकल इंटरवेंशनल रेडियोलॉजी इसवीर, नोएडा मेल, दा मॉर्निंग मिनट्स, पान सम्राट, सियासी मुल्क, प्लस न्यूज लाइन, टेकिन्कल टुडे, राष्ट्रीय धरोहर, सॉलिटेयर एक्सप्रेस, न्यूज इंडिया लाइव, जन कलरव, श्री मोहन कीर्ति आदर्श पत्रकाम, सॉलिटेयर एक्सप्रेस, श्री साईं की अनुभूति, रिसोर्ट एंड स्पा, बेबाक बोल, चीफ मिनिस्टर, कर्तव्य निष्ठा, सर्वे टुडे, लीडर्स स्पीक, जयपुरिया इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मैनेजमेंट रिसर्च, दस्तक टुडे, तत्काल इंडिया न्यूज, मार्केट मंत्रा, उद्योग निर्माण, जर्नल ऑफ हेल्थ एंड एलाइड, साइंस न्यू, आज की पुकार, फार्च्यून फैशन, गगन मंच, डिस्कवरिंग नोएडा, इंडियन जर्नल ऑफ कार्डियोवैस्कुलर डिजीज इन विमेन विनकार्ड, दा बैंकिंग एंड फाइनेंस पोस्ट, बिमटेक बिजनेस परस्पेक्टिव, डिजाइन क्विस्ट एन एडवांस्ड रिसर्च जर्नल ऑन डिजाइन, एनल्स ऑफ ऑटोलॉजी एंड न्यूरोलॉजी आई एस ओ, अमेठी जनरल ऑफ एंटरप्रेन्योरशिप एंड लीडरशिप, अमेठी जनरल ऑफ कॉमर्स एंड फाइनेंसियल रिव्यू, अमेठी इंटरनेशनल जर्नल ऑफ लीगल एंड मल्टी डिसीप्लिनरी स्टडीज, महर्षि जनरल ऑफ लॉ एंड सोसायटी, मिरर जेवर, जिओ चाइल्ड, हरपल रिपोर्टर, स्वराज खबर, दा सलून स्पा एंड फिटनेस टाइम्स, ब्रह्मज्ञान वाणी, सेव फ्यूचर इंडिया, सिटी आंदोलन, नवोदया प्रहरी, ग्रोविंग न्यूज, किसान करवान, अमेठी जनरल ऑफ स्ट्रेटेजिक मैनेजमेंट, जनरल ऑफ कार्डियक क्रिटिकल केयर टीएसएस, नोएडा कलम, पालिच्यामेंट्री बिजनेस, अमेठी जनरल ऑफ कंप्यूटटीशनल साइंसेस, एफ एम एल न्यूज टाइम्स, प्रजा सप्तक, टूरू वैल्यू येलो पेजेस,ई हेल्थ, पचैरी टाइम्स, प्रवासी प्रभात, व्यापार उद्योग समाचार, नोएडा मेगा बाजार, श्री निणय्य सिंधु सत्य, मेरिटोक्रेसी इंडिया इंटरनेशनल, बाजार हॉट डील्स, वीकेन्ड न्यूज, डेमी परवाज, नोएडा नजर, युवा प्रवाह, जिओ इंटेलिजेंस, संबंध सेतु, श्री मोहन योग दर्शन, पहल अनोखा कदम, प्रॉपर्टी फॉर सेल, ऐड मैगन्स, इयूफोरिक मैगजीन, श्री टाइम्स, किड्स मेल, नोएडा टुडे, एसएमपी न्यूज, प्योर एंड इको इंडिया, गो ग्रेटर नोएडा, हमारा विश्वास, इंडिया शिक्षा मिशन, भव्य भास्कर, क्लब 26 नमस्कार 26, नोएडा लाइव, दिल्ली मेरी जान, दिल्ली मेरी जान, सारनी टाइम्स, पलेनेट टुडे, तरुण रथ, चीफ मिनिस्टर, नेशनल दुनिया, शास्त्री टाइम्स, अजीजुल हिंद, हैवेंस सिटी, लोक शक्ति एक्सप्रेस सम्मलित है। यदि उपरोक्त में से किसी प्रकाशक ने अपना प्रकाशन जारी रखा है तो उसकी सूचना कार्यालय को दी जाये।

गलगोटिया विश्वविद्यालय में तीन दिवसीय टॉयकैथॉन 2022 प्रतियोगिता का भव्य आयोजन

(आधुनिक समाचार सेवा)
देव मणि शुक्ल

नोएडा । मंगलवार को सुबह 10 बजे से गलगोटिया विश्वविद्यालय में तीन दिवसीय टॉयकैथॉन-2022 प्रतियोगिता का भव्य आयोजन किया जाएगा। जिसमे महाराष्ट्र, तमिलनाडु, उडीसा, आन्द्रप्रदेश, मणिपुर, केरला, उत्तराखण्ड सहित देश के आठ राज्यों के शिक्षण संस्थानों से 42 टीम भाग ले रही है। प्रतियोगिता में कुल 250 छात्र भाग लेकर देश में खिलौने बनाने की तकनीक को और मजबूत एवं सुगम बनाने पर लगातार 72 घण्टे तक कार्य करेंगें। जिसका मुख्य उद्देश्य पारंपरिक भारतीय खिलौनों की खोजना करना और उन्हें नया स्वरूप देना है। यह टॉयकैथॉन प्रतियोगिता शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार के इनोवेशन सेल के संरक्षण में आयोजित की जा रही है। भारत सरकार ने ङ्घआत्मनिर्भर भारत अभियानङ्घ के तहत टॉयकैथॉन 2022 की पूरे भारत में नवीन खिलौनों और खेल के विचारों को बढ़ावा देने के लिए एक अवसर के रूप में शुरूआत की है। जिसमें विभिनन राज्यों और शहरों के कॉलेज एवं विश्विद्यालय इसका आयोजन कर आत्मनिर्भर भारत अभियान में अपना महत्वपूर्ण योगदान देंगें। टॉयकैथॉन 2022 के शुभारम्भ एवं समापन कार्यक्रम की मेजबानी गलगोटियाज विश्वविद्यालय 24 से 26 मई तक अपने परिसर में करने जा रहा है। विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो0 डॉ0 प्रीति बजाज, प्रति कुलपति डॉ0 अवधेश कुमार, कुलसचिव नितिन गौड ने प्रेस वार्ता के दौरान बताया कि आत्म निर्भर भारत के लिए टॉयकैथॉन माननीय प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी का एक ड्रीम प्रोजेक्ट है। जिसको गलगोटियाज विश्वविद्यालय ग्रैड फिनाले के साथ नोडल सैंटर के रूप में भी आयोजित करेगा। जहाँ से शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार, सूक्ष्म एवं लघु उद्योग मंत्रालय, अखिल भारतीय तकनिकी शिक्षा परिषद्, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, और कपडा मंत्रालय सीधे प्रतियोगिता की समीक्षा और अवलोकन करेंगें।

पंचायत निर्वाचन संबंधित आरक्षण की कार्यवाही 25 मई को

(आधुनिक समाचार सेवा)
दुर्गेश कुमार गुप्ता

शहडोल ।23 मई 2022- कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी ने मध्यप्रदेश पंचायत राज एवं ग्राम स्वराज अधिनियम, 1993 की धारा 13, 17 एवं 129 (ख) मध्यप्रदेश पंचायत निर्वाचन नियम, 1995 के नियम 4 एवं नियम 7 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते सर्वसंबंधितों को सूचित किया है कि ग्राम पंचायत के वार्ड, सरपंच ग्राम चायत के पद हेतु अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़े वर्ग तथा इन सभी वर्गों में हिलाओं के लिए आरक्षण किया जाना है। आरक्षण से संबंधित संपूर्ण कार्यवाही 25 मई 2022 को पूर्वान्ह 11:00 बजे से जनपद पंचायत सोहागपुर एवं बुढार हेतु जनपद पंचायत सोहापुर के सभाकक्ष, जनपद पंचायत गोहपारू एवं जनपद पंचायत जयसिंहनगर हेतु पूर्वान्ह 11 से जिला पंचायत सभागार पुरानी बिल्डिंग तथा जनपद पंचायत ब्यौहारी की आरक्षण की कार्यवाही जिला पंचायत सभाकक्ष पुराना कमिशन्र कार्यालय में आयोजित की जाएगी।

विश्व भर में हिंदुत्व का डंका बजने लगा है - पंडित विष्णु शर्मा

(आधुनिक समाचार सेवा)
देव मणि शुक्ल

नोएडा ।ऑस्ट्रेलिया के नए प्रधानमंत्री एंथोनी अल्बनेस है जिनका विश्व हिंदू परिषद का लोगो लगा भगवा वस्त्र धारण करना ये बताता है कि हिन्दू दुनिया के हर कोने में संगठित वोट करने लगा है। क्योकि दुनिया भर का हिन्दू जान चुका है जैसे भारत मे हिन्दुओ ने 2014 से संगठित होकर वोट देना शुरू किया और भारत में राष्ट्र सुरक्षा से लगाकर सनातन मान बिंदुओं की रक्षा तक हिंदुओं के मुद्दे प्रथम पंक्ति में आ गए हैं ठीक उसी प्रकार ऑस्ट्रेलिया सहित दुनिया भर के हिंदू यह समझने लगे हैं कि अगर सनातन धर्म और संस्कृति के मुद्दों को मजबूती से रखना है और दुनिया में सनातन को मजबूत करना है तो हिंदुओं को संगठित वोट करना पड़ेगा फिर चाहे वह भारत हो या ऑस्ट्रेलिया। ऑस्ट्रेलिया का प्रधानमंत्री गले में सनातन को लेकर इसलिए घूम रहा है क्योंकि आस्ट्रेलिया के हिंदुओं ने अपने वोट की कीमत पेट भरे मुद्दे नहीं बल्कि जितना समरस संगठित और मजबूत होगा ।सनातन धर्म का प्रचार दुनिया में उतना मजबूती से होगा। फिर चाहे वह हिंदू भारत का हो या ऑस्ट्रेलिया का। मोदी (भारत के संगठित हिंदुओ की ताकत) ने भारत ही नहीं पूरे विश्व की राजनीति में हिंदुओं की आवाज मजबूत की है। मैं इसीलिए हमेशा कहते रहता हूं सत्ता जब राष्ट्र धर्म के अनुकूल होती है तब दुनिया में भारत और सनातन का व्याप्त बढ़ता है। यह सभी सुपरिणाम संघ के 97 वषी की तपस्या का ही फल है कि आज विश्व भर में हिंदुत्व के डंका बजने लगा है । वह दिन दूर नही जब हमारा सपना परम् वैभवनेतुमेतत स्वराष्ट्रम (विश्व गुरु भारत)साकार होगा ।

दिल्ली से शराब की तस्करी को लेकर आबकारी विभाग एक्टिव

(आधुनिक समाचार सेवा)
देव मणि शुक्ल

नोएडा ।उत्तर प्रदेश शासन की मंशा के अनुरूप एवं आबकारी आयुक्त उ0प्र0 के निर्देशों के क्रम में दिल्ली राज्य में शराब के दामों पर भारी छूट के दृष्टिगत जनपद गाजियाबाद एवं गौतमबुद्धनगर में दिल्ली राज्य से शराब की तस्करी की संभावना को लेकर संयुक्त आबकारी आयुक्त, मेरठ जोन के नेतृत्व में जनपद गाजियाबाद एवं गौतमबुद्धनगर के जिला आबकारी अधिकारी निरन्तर स्तर पर कार्यवाही सुनिश्चित कर रहे है। इसी क्रम में आज जिला आबकारी कार्यालय गाजियाबाद में संयुक्त आबकारी आयुक्त, मेरठ जोन की अध्यक्षता में जनपद गाजियाबाद एवं गौतमबुद्धनगर के सीमावर्ती क्षेत्रों में स्थित दिल्ली राज्य की शराब की दुकानों के अनुज्ञापियों एवं इनके प्रतिनिधियों के साथ बैठक सम्पनन हुयी, जिसमें जिला आबकारी अधिकारी गाजियाबाद राकेश कुमार सिंह, जिला आबकारी अधिकारी गौतमबुद्धनगर राकेश बहादुर सिंह, सैनिक फूट्स प्रा0 लि0 दिल्ली के प्रतिनिधि शिव कुमार, ट्राइडेट कैम्फर प्रा0 लि0 दिल्ली के प्रतिनिधि वेंकेटाचलपति, एलकोमार्ट लिक्विर शॉप लि0 दिल्ली के प्रतिनिधि राजेश यादव, भगवती ट्रांसफारमर दिल्ली के प्रतिनिधि श्रेष्ठ कालरा उपस्थित रहे। बैठक में संयुक्त आबकारी आयुक्त, मेरठ जोन द्वारा

दिल्ली राज्य के अनुज्ञापियों/प्रतिनिधियों को निर्देश दिये गये कि दिल्ली राज्य में शराब की दुकानों पर छूट के दृष्टिगत विक्रेताओं को निर्देशित किया जाये कि खरीदारों को अधिक मात्रा में शराब की बिक्री न की जाये। उन्होंने कहा कि यदि दिल्ली राज्य की शराब उत्तर प्रदेश के किसी अन्य जनपद में पकड़ी जाती है तो शराब जिस दुकान से खरीदी गई है, उस दुकान के विक्रेता एवं अनुज्ञापी के विरूद्ध आबकारी अधिनियम की सुसंगत धाराओं में अभियोग पंजीकृत किया जायेगा। अभी विगत दिनों में सैनिक फ्रूट्स प्रा0 लि0 दिल्ली एवं ट्राइडेंट कैम्फर प्रा0 लि0 दिल्ली ग्रुप के विरूद्ध एफ0आई0आर0 दर्ज कराई गई है। दिल्ली राज्य की सीमावर्ती दुकानों के अनुज्ञापियों/प्रतिनिधियों को स्पष्ट करते हुये कहा कि शराब के मूल्य पर जो भारी छूट (रिबेट) दिया जा रहा है, उसे शीघ्र ही बन्द किया जाये। संयुक्त आबकारी आयुक्त द्वारा जनपद गाजियाबाद एवं गौतमबुद्धनगर के जिला आबकारी अधिकारियों को निर्देशित किया गया कि दिल्ली बॉर्डर पर प्रतिदिन टीमें बनाकर सघन चेकिंग अभियान जारी रखते हुए प्रभावी प्रर्वतन कार्यवाही करें तथा दिल्ली शराब की मदिरा लेकर आने वाले के विरूद्ध दण्डात्मक कार्यवाही की जाये। उपस्थित प्रतिनिधियों द्वारा बैठक में सहमति व्यक्त की गयी कि उनके द्वारा विचार विमर्श करके उत्तर प्रदेश राज्य की सीमा पर स्थित दिल्ली की दुकानों पर शराब की छूट शून्य की जायेंगी। उकांत जानकारी राकेश चैहान जिला सूचना अधिकारी ने दी।

गजराज नागर बने समाजवादी के प्रदेश सचिव

(आधुनिक समाचार सेवा)
देव मणि शुक्ल

नोएडा ।समाजवादी पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष नरेश उत्तम पटेल ने राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव की स्वीकृति से जनपद गौतम बुद्ध नगर के वरिष्ठ नेता गजराज नागर को समाजवादी पार्टी का प्रदेश सचिव एवं संजीव त्यागी को विशेष आमंत्रित सदस्य नामित किया है। सपा द्वारा ग्रेटर नोएडा में आयोजित एक प्रेस वार्ता में यह जानकारी दी। बसपा सुप्रीमो के पैतृक गांव बादलपुर निवासी गजराज नागर लंबे समय से राजनीति में सक्रिय है और उनकी गिनती जिले के कद्दावर नेताओं में होती है। उनकी पतने जयवती नागर पूर्व में जिला पंचायत अध्यक्ष रह चुकी है व वर्तमान में जिला पंचायत सदस्य है। विधानसभा चुनाव पूर्व उन्हों ने बसपा को छोड़कर समाजवादी पार्टी की सदस्यता ली थी। 2022 विधानसभा चुनाव के दौरान उन्होंने ईमानदारी और मेहनत के साथ पार्टी के लिए काम किया था। जिसके फलस्वरूप पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष ने उन्हें प्रदेश संगठन में यह महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपी गई है। वही संजीव त्यागी भी समाजवादी पार्टी को मजबूत करने के लिए लगातार कार्य कर रहे हैं। समाजवादी पार्टी में सचिव मनोनीत होने पर गजराज नागर ने पार्टी हाईकमान का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव व प्रदेश अध्यक्ष नरेश उत्तम पटेल ने प्रदेश संगठन में प्रदेश सचिव मनोनीत करके उन पर जो भरोसा जताया है उस पर वह खरा उतरने के लिए पूरी ईमानदारी और निष्ठा के साथ कार्य करेंगे और समाजवादी पार्टी मजबूत बनाने काम करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव के सिद्धांतों और पार्टी की नीतियों को जन-जन तक पहुंचाने के लिए कार्य करेंगे। इस मौके पर समाजवादी पार्टी के जिलाध्यक्ष इन्दर प्रधान ने कहा कि प्रदेश में एक बार फिर से भाजपा सरकार के गठन के बाद से अराजकता का माहौल बना हुआ है, हत्या, लूट, महिलाओं के साथ अत्याचार की घटनाओं में अप्रत्याशित वृद्धि हो रही है। इस मौके पर राष्ट्रीय प्रवक्ता राजकुमार भाटी ने कहा कि देश और प्रदेश की भाजपा सरकार की जन विरोधी नीतियों के कारण आज देश मे महंगाई और बेरोजगारी भयंकर रूप धारण कर चुकी है, महंगाई और बेरोजगारी को रोकने में विफल भाजपा सरकार जनता का ध्यान भटकाने के लिए नाटकिय अंदाज में साम्प्रदायिकता की राजनीति कर रही है। प्रेस वार्ता में मुख्य रूप से नरेंद्र नागर, सुनील भाटी, पीताम्बर शर्मा, कृशान्त भाटी, सुधीर भाटी, रामशरण नागर, जगबीर नंबरदार, मेंहदी हसन, श्याम सिंह भाटी, रोहित बैसोया, सुरेन्द्र नागर, राजू नम्बरदार, कृष्णा चौहान, अकबर खान, विनीत भाटी, विपिन नागर, अक्षय चौधरी, नवीन भाटी, विकास जतन, चमन नागर, दीपक नागर, शैलेंद्र भाटी, लखन यादव, विकास तौगड़, सीपी सोलंकी, मिंटी खारी,जय यादव, अवनीश भाटी, देवेंद्र भाटी, जगत खारी, कुलदीप भाटी, अनूप तिवारी, बलेश्वर वाल्मीकि, अनिल नागर, अक्षय पंडित, सुमित नागर, प्रशांत भाटी, मनोज शर्मा, ललित कुमार, लाडसाहब लोहिया, बेगराज गुर्जर, रोहताश बैसोया, आदि मौजूद रहे।

करण जौहर कोरोना महामारी के बाद मनाएंगे ग्रैंड बर्थडे, 50 वें जन्मदिन पर रखी खास थीम

नई दिल्ली। बॉलीवुड के मशहूर निर्माता और निर्देशक करण जौहर 25 मई को अपना 50वां जन्मदिन मना रहे है। साल 1998 में आई फिल्म 'कुछ-कुछ होता है' से अपने करियर की शुरुआत करने वाले करण जौहर का जन्म 25 मई 1972 को हुआ था और वह साल 2022 में अपनी हाफ सेंचुरी पूरी करने जा रहे हैं। करण जौहर अपनी फिल्मों के साथ-साथ ग्रैंड पार्टीज करने को लेकर भी बहुत फेमस हैं। उनकी ग्रैंड पार्टी अक्सर चर्चा में रहती है। हालांकि पिछले दो साल से कोरोना महामारी के चलते बॉलीवुड में बड़ी पार्टीज कम ही देखने को मिलीं। लेकिन अब एक बार फिर से करण जौहर अपने 50वें बर्थडे पर ग्रैंड पार्टी का आयोजन करने वाले हैं। रिपोर्ट्स की मानें तो करण जौहर अपने 50वें जन्मदिन को शानदार और यादगार बनाना चाहते हैं, इसलिए उन्होंने इस ग्रैंड पार्टी का आयोजन किया है। उनकी ये पार्टी उनके बांद्रा के घर पर नहीं, बल्कि यशराज स्टूडियो में होगी। इस ग्रैंड पार्टी में फिल्मी दुनिया की कई बड़ी हस्तियां शामिल होने वाली हैं। रिपोर्ट्स की माने तो करण जौहर के 50वें

जन्मदिन की पार्टी को और भी शानदार बनाने के लिए दीपिका पादुकोण भी पति रणवीर सिंह के साथ कान फिल्म फेस्टिवल से लौट रही हैं। रिपोर्ट्स की मानें तो अपने 50वें जन्मदिन की पार्टी को शानदार बनाने के लिए करण जौहर ने थीम पार्टी रखी है। उन्होंने बर्थडे पर 'ब्लैक एंड ब्लिंग' थीम रखी है। इस थीम को बॉलीवुड सितारों द्वारा खूब पसंद किया जाता है। एएनआई की रिपोर्ट्स की मानें तो यशराज में करण जौहर के पार्टी सेट को अमृता महल ने डिजाइन किया है, जो इससे पहले करण जौहर की फिल्म 'कलंक', ब्रह्मास्त्र' जैसी फिल्मों के सेट डिजाइन कर चुकी हैं। रिपोर्ट ये भी है कि उनके बर्थडे बैश में सेट को लाल गुलाब से सजाया जायेगा। कहा जा रहा है कि करण की ये पार्टी काफी ग्रैंड लेवल पर होगी, बॉलीवुड में ऐसी पार्टी अब तक नहीं हुई होगी। करण जौहर की पार्टी हो और उसमें बड़े सितारें न हो, ऐसा तो हो ही नहीं सकता। करण जौहर के जन्मदिन के मौके पर बॉलीवुड के कई बड़े सितारें उन्हें बधाई देने के लिए ग्रैंड पार्टी में शिरकत करने वाले हैं। रिपोर्ट्स की मानें तो उनके 50वें जन्मदिन की पार्टी में करीना कपूर खान, मलाइका अरोड़ा, आलिया भट्ट,सिद्धार्थ मल्होत्रा, कियारा आडवाणी, मनीष मल्होत्रा, शाहरुख खान, रणबीर कपूर, काजोल, वरुण धवन और गौरी खान समेत कई बड़े सितारे शामिल होंगे।

फिल्म एक्ट्रेस कंचन अवस्थी से सीधा साक्षात्कार आधुनिक समाचा के ईजी इंटरव्यू विथ सुधांशु में

(आधुनिक समाचार सेवा)
प्रयागराज। कंचन अवस्थी बॉलीवुड की एक मानी जानी एक्टर और मॉडल है। अंकुर अरोरा मर्डर केस, गन वाली दुल्हनिया जैसी फिल्मों और तमाम टीवी शोज वेब सीरीज में अपने अभिनय का लोहा मनवाने वाली कंचन अवस्थी उत्तर प्रदेश के लखनऊ की रहने वाली है, रेडियो एंड ऐप हेड सुधांशु शर्मा से सीधी बात के कुछ अंश से रूबरू होते है। आइए बात करते है सीधे कंचन अवस्थी से कंचन अवस्थी (एक्ट्रेस एंड मॉडल) 1. कंचन जी पहले तो एक सीधा सा सवाल लखनऊ शहर से मुंबई कब आई , क्या मकसद था आने का, कि एक्ट्रेस बनना है या फिर कुछ और 2. जैसे की आज भी यूपी के कई शहर ऐसे है जहां पर लड़के लड़कियों में भेद भाव रखा जाता है या उन्हें ज्यादा बाहर निकलने की नौकरी करने की या कोई काम करने पर रोका टोका जाता है, इस बारे में क्या कहेंगी क्या आपको भी इस तरह के किसी मामले का सामना करना पड़ा 3. अंकुर अरोरा मर्डर केस, गन वाली दुल्हनिया जैसी मूवीज हो या फिर सीरियल्स हो या वेब सीरीज सब जगह आपने अपनी खूबसूरती और अदाकारी से दर्शकों का मन मोहा, अभी आगे का क्या प्लान है कौन कौन से प्रोजेक्ट है आपके 4.आज के समय में एक झगड़ा सा चल रहा है जैसे कि बोला जा रहा है कि साउथ की फिल्में बॉलीवुड को टेक ओवर कर रही है , क्या लगता है इस बारे में आपको, क्या कभी साउथ की फिल्मों में काम करना चाहेंगी आप 5. आपका फेवरेट

एक्टर और एक्ट्रेस कौन है आज के दिनो मे?.. किसके साथ काम करने की दिली तमनन है. 6. आखिरी में हमारे चैनल की तरफ से हमारे सुनने वाले और आपके चाहने वालो को क्या कहना चाहेंगी आप इन सारे सवालों पर कंचन अवस्थी का कहना है 1 कुछ कल्चरल एक्टिविटीज की वजह से मेरा मुंबई आना जाना काफ़ी पहले से शुरू हो गया था , लेकिन करियर बनाने के लिहाज़ से मैं 2015 मुंबई में हूँ और जहाँ तक बात है मक़सद चुन ने का तो शुरू से ही मेरी रुचि परफ़ॉर्मिंग आर्ट में रही है . शुरू में स्टेज पर सिंगिंग की फिर थिएटर में ऐक्टिंग और अब फ़िल्म और वेब सीरिज़ की दुनिया में हूँ 2- आप की बात काफ़ी हद तक सही है लेकिन अब धीरे धीरे तस्वीर बदल रही है .. आज फ़िल्म मेकिंग के हर डिपार्टमेंट में स्मॉल टाउन से आने वाले लोग आसानी मिल जाएँगे और वो सिर्फ़ आ ही नही रहे है बल्कि वो हिंदी सिनेमा का चेहरा भी बदल रहे है ! आप अगर मेरे बारे में पूछे तो मेरी फ़ैमिली इस मामले में बहुत सपोर्टिंग रही है 4 -मेरे ख़याल से फ़िल्मों को साउथ नोर्थ में बाँटना ही ग़लत ये सब हिंदुस्तानी फ़िल्में है और सारी भाषाए हिंदुस्तानी भाषा है और मुझे अगर अच्छा रोल मिला तो मैं ज़रूर साउथ की फिल्में करना चाहूँगी 5 - मौजूदा दौर में बहुत से अच्छे ऐक्टर ऐक्ट्रेस काम कर रहे है .. फिर भी अगर आप उनमें से मेरे पसंदीदा जान ना चाहेंगे तो मुझे रणवीर सिंह और आलिया भट्ट का काम पसंद आता है 6 मैं अपने सुनने देखने वाली से बस यही कहना चाहूँगी की वो मेरा काम देखे और सराहे और अगर उन्हें कुछ मुझसे कहना या पूछना हो तो वो आप के माध्यम से मुझसे सम्पर्क कर सकते है 7- मैं आप के साथ साथ आधुनिक समाचार और उसकी सारी टीम को बहुत बहुत बधाई देना चाहूँगी !! आप सब बहुत अच्छा काम कर रहे है और आशा करती ही भविष्य में भी आप ऐसा करते रहेंगे जैसा कि आप जानते हैं की मीडिया समाज का चौथा स्तम्भ कहलाता है और किसी भी कलाकार को उसकी कला के शीर्ष तक पहुँचाने का काम आप जैसे मीडिया बंधुओं का ही होता है । बिना आप सबके सपोर्ट के किसी भी कलाकार को अपनी कला को शीर्ष तक पहुँचाना मुश्किल ही नहीं नामुमकिन है।

जैकलीन फर्नांडिस की पतली कमर ने खींचा इस 'खिलाड़ी' का ध्यान

नई दिल्ली। कनन्ड़ फिल्म इंडस्ट्री के सुपर स्टार किच्चा सुदीप हाल ही में भाषा विवाद को लेकर काफी चर्चाओं में थे। इन दिनों वो अपनी पैन-इंडिया मेगा वेंचर फिल्म विक्रांत रोणा में नजर आने वाले हैं। अब मंगलवार को फिल्म का विशेष एल्बम सॉन्ग रा रा रक्कम्मा रिलीज रिलीज हो चुका है। इस विशेष एल्बम सॉन्ग में जैकलीन फर्नांडिस और साउथ के सुपरस्टार किच्चा सुदीप अपने डांस मूव्स से सभी का दिल जीत रहे हैं। विक्रांत रोणा के इस हिंदी वर्जन गाने को शब्बीर अहमद ने लिखा और नकाश अजीज, सुनिधि चौहान ने अपनी शानदार आवाज में गाया है। इस सॉन्ग को टी-सीरीज के आधिकारिक यूट्यूब को ट्विटर हैंडल पर शेयर कर लिखा, मैं अभी भी इसके विजुअल्स में बंधा हुआ हूं भाई किच्चा सुदीप। विक्रांत रोणा का हिंदी वर्जन पेश करते हुए खुशी हो रही है, भारतीय सिनेमा का सबसे बड़ा 3डी अनुभव है। कन्नड़ सुपरस्टार किच्चा सुदीप ने भी सलमान खान की पोस्ट को रिट्वीट कर उनका धन्यवाद किया था। कन्नड अभिनेता ने लिखा, धन्यवाद सलमान सर ये सहयोग टीम को बेहद खुशी और प्रोत्साहन देता है। बता दें, 'विक्रांत रोणा' में किच्चा सुदीप लीड रोल निभा रहे हैं। फिल्म में सुदीप के साथ एक्ट्रेस जैकलीन फर्नांडीज, निरुप भंडारी और नीता अशोक भी मुख्य किरदार में नजर आने वाली हैं। जैक मंजूनाथ

चैनल पर रिलीज किया गया है। वहीं, सलमान खान ने फिल्म के हिंदी वर्जन को प्रेजेंट करने का एलान किया था। इस जानकारी को अपने आधिकारिक ट्विटर हैंडल पर शेयर किया था। इस वीडियो ने अपने प्रोडक्शन हाउस शालिनी आर्ट्स के बैनर तले बनी इस फिल्म को जी स्टूडियोज द्वारा प्रस्तुत किया है और इनवेनियो ओरिजिन्स के अलंकार पांडियन द्वारा सह-निर्मित है।

धमाकेदार है धनुष की डेब्यू हॉलीवुड फिल्म 'द ग्रे मैन' का ट्रेलर

नई दिल्ली। दक्षिण भारतीय फिल्मों के सुपरस्टार और बेहतरीन कलाकार धनुष के फैंस के लिए बेहतरीन खबर है। उनकी डेब्यू हॉलीवुड फिल्म द ग्रे मैन का ट्रेलर रिलीज कर दिया गया है। इस फिल्म में धनुष कई मशहूर इंटरनेशनल कलाकारों के साथ नजर आएंगे, जिनमें कैप्टन अमेरिका फेम क्रिस एवांस और अमेरिकी गुप्तचर संस्था सीआईए के एजेंट बने हैं। क्रिस एवांस का किरदार लॉयड बागी हो चुके कोर्ट जेंट्री (रायन) के पीछे है। लगभग 1.59 मिनट के ट्रेलर में धनुष को सिर्फ एक दृश्य में दिखाया गया है। हालांकि, उतनी ही देर में धनुष ने अपने अंदाज से अपनी दमदार मौजूदगी के संकेत दे दिये हैं। इस दृश्य में धनुष हॉलीवुड एक्टर के

रायन गोसलिंग शामिल हैं। फिल्म नेटफ्लिक्स पर रिलीज होगी। फिल्म का निर्देशन रूसो ब्रदर्स ने किया है। रूसो ब्रदर्स दुनियाभर में एवेंजर्स और कैप्टन अमेरिका सीरीज की फिल्मों के लिए जाने-जाते हैं। इससे पहले नेटफ्लिक्स के लिए उन्होंने एक्सट्रैक्शन का निर्माण किया था, जिसमें क्रिस हेम्सवर्थ और रणदीप हुड्डा लीड रोल्स में थे। इस ट्रेलर का धनुष के फैंस बेसब्री से इंतजार कर रहे थे। नेटफ्लिक्स ने मंगलवार देर शाम ट्रेलर जारी करके जानकारी दी कि फिल्म 22 जुलाई को रिलीज होगी। ट्रेलर में सभी मुख्य कलाकारों को जगह दी गयी है। मुख्य रूप से ट्रेलर में रायन गोसलिंग और क्रिस एवांस के बीच फेस ऑफ दिखाया गया है, जो साथ भिड़ते हुए नजर आते हैं। धनुष ने ट्रेलर सोशल मीडिया में शेयर किया है। सोमवार को नेटफ्लिक्स ने फिल्म के सभी मुख्य किरदारों के पोस्टर्स जारी किये थे, जिनमें धनुष को लीदल फोर्स नाम दिया था, मगर ट्रेलर देखकर धनुष के तमाम फैंस निराश हैं, क्योंकि उनकी प्रेजेंस बहुत कम है। फैंस उनकी ब्लिंक एंड मिस एपीयरेंस से नाराज दिखे। इंस्टाग्राम पर कई फैंस ने ट्रेलर पर कमेंट करके अपनी प्रतिक्रिया दी है। कुछ ने नेटफ्लिक्स पर धनुष को इस्तेमाल करने का आरोप भी लगाया है। हालांकि, कुछ फैंस उन्हें देखकर खुश हैं। हालांकि, यह अभी पहली झलक है। हो सकता है, भविष्य में आने वाले ट्रेलर्स में धनुष की प्रेजेंस ज्यादा हो। धनुष को

'भूल भुलैया 2' को मिली सफलता के बाद वाराणसी पहुंचे कार्तिक आर्यन

नई दिल्ली। कार्तिक आर्यन और कियारा आडवाणी की हॉरर कॉमेडी फिल्म 'भूल भुलैया 2' रिलीज होने के बाद से ही बॉक्स ऑफिस पर अपना कमाल दिखा रही है। फिल्म को मिली इस अपार सफलता का जश्न मनाने के लिए अभिनेता कार्तिक आर्यन वाराणसी काशी विश्वनाथ के दर्शन करने और आशीर्वाद लेने पहुंच हैं, जहां उन्होंने भगवान भोलेनाथ के दर्शन किया और गंगा आरती के व्यहंगम दृश्य के भी साक्षी बने। बताया फिल्म ने पहले वीकेंड में 55.96 करोड़ का बिजनेस कर हिन्दी फिल्मों के लिए बॉक्स ऑफिस पर एक नई उम्मीद जगाई है। कार्तिक ने तो अपने फैंस के साथ इस सफलता को सेलिब्रेट करना भी शुरू कर दिया है। अनीस बज्मी के निर्देशन में बनी इस फिल्म में कार्तिक आर्यन और कियारा आडवाणी और तब्बू ने मुख्य किरदार निभाया है। जबकि राजपाल यादव और सौरभ शुक्ला ने भी अहम किरदार निभाया हैं। वहीं, बात अगर कार्तिक आर्यन के

जा रहा है कि, कार्तिक आर्यन ने भूल भुलैया 2 की सफलता के लिए मनन्त मांगी थी, जो पूरी हो गई है। जिसके बाद उन्होंने बाबा विश्वनाथ मंदिर में जाकर भगवान भोलेनाथ का आशीर्वाद लिया और मां गंगा का आरती में भी शामिल हुए। आपको बता दें कार्तिक और कियारा की फिल्म भूल भुलैया 2 इस साल वीकेंड पर सबसे ज्यादा कमाई करने के बाद इस फिल्म ने मंडे टेस्ट भी पास कर लिया है। वर्कफ्रंट की करें तो वो इस साल बैक-टू-बैक कई फिल्मों में नजर आने वाले हैं। वो जल्द ही शशांक घोष के निर्देशन में बनी रोमांटिक थ्रिलर फिल्म 'फ्रेडी' में अभिनेत्री पूजा बेदी की बेटी आलया फर्नीचरवाला के साथ मुख्य किरदार में नजर आने वाले हैं। साथ ही कार्तिक 'कैप्टन इंडिया' और 'लुका छुपी 2' में नजर आने वाले हैं। उन्हें आखिरी बार नेटफ्लिक्स पर रिलीज हुई फिल्म 'धमाका' में देखा गया था।

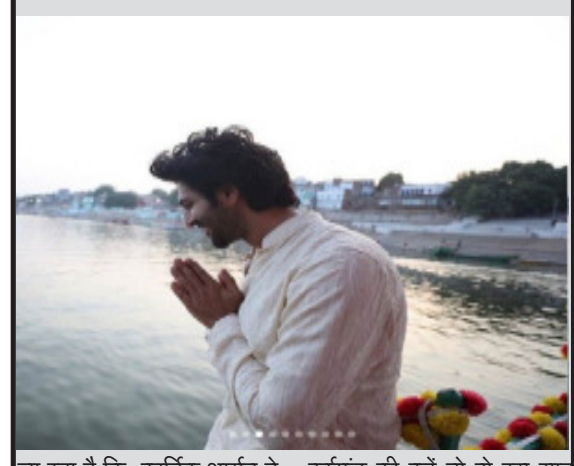

बैग में हमेशा होती है हैंगओवर उतारने के लिए ये खास दवा

नई दिल्ली। बॉलीवुड डिंपल गर्ल यानी दीपिका पादुकोण आज उस मुकाम पर हैं जहां तक पहुंचने के लिए उन्होंने काफी मेहनत की है। दीपिका ने अपने करियर में कई हिट फिल्मों के साथ कई अलग-अलग तरह के रोल को पर्दे पर जिया है। प्रोफेशनल लाइफ के साथ दीपिका अपनी पर्सनल लाइफ को लेकर भी काफी सुखिर्यों में रहती ओपन किया उसमें एक खास दवा निकली। ये दवा हैंगओवर उतारने वाली थी। दीपिका ने बताया कि वो अपने बैग में हैंगओवर उतारने की दवाई रखती हैं और उस दवाई का नाम है। हैंगओवर रिलीफ की ये टेबलेट्स हैंगओवर के लक्षणों को कम करती हैं, जैसे सिर दर्द, बदन दर्द, थकान।वहीं दीपिका के बैग में हैंगओवर रिलीफ दवा के आलवा

हैं। वहीं दीपिका फैंस के बीच अपनी अक्सर अपनी लाइफ से जुड़ी बातें शेयर करने से पीछे नहीं हटती हैं। इसी बीच दीपिका ने अपनी एक ऐसी आदत का खुलासा किया है। दीपिका ने बताया है कि वह अपने बैग में क्या-क्या सामान रखती हैं। तो आइए जानते हैं दीपिका पादुकोण ने हाल ही में न्दुल इंडिया को एक इंटरव्यू दिया है, जो आप काफी दिलचस्प रहा था। न्दुल इंडिया के 'ट्रैं ग्ह स्र्ब्ु' सेशन में दीपिका ने दिखाया कि वह अपने बैग में आखिर कौन-कौन सी जरूरी चीजें रखती हैं। दीपिका ने जैसे ही अपना बैग माउथ फ्रेशनर, पेंसिल-डायरी जैसे चीजें भी रहती हैं। उन्होंने बताया कि ये सारी चीजें उनके डेली रुटीन के लिए बहुत जरूरी हे। इसके अलावा दीपिका हमेशा अपने बैग में सेफ्टी पिन्स और बैंडेज भी कैरी करती हैं। वहीं अगर आप भी दीपिका के फैन है तो आप भी उनकी इस बैग हैबिट को जरूर फॉलो करना चाहेंगे।दीपिका पादुकोण के वर्कफ्रंट की बात करें तो वह इन दिनों कान्स में अपने जलवे बिखेर रही हैं। दीपिका कान्स 2022 में जूरी मेंबर में शामिल हैं।

'बदनाम आश्रम' को लेकर अपने ऊपर हुए हमलों पर प्रकाश झा ने तोड़ी चुप्पी, कहा- 'डर के जीना अच्छा नहीं लगता'

नई दिल्ली। समाजिक और राजनीति मुद्दों पर फिल्म बनाने के लिए मशहूर निर्देशक प्रकाश झा जल्द ही पाप्यूलर वेब सीरीज 'आश्रम' का तीसरा सीजन लेकर आ रहे हैं। इस वेब सीरीज को लेकर प्रकाश झा पर अब तक कई हमलें किए जा चुके हैं। जिसे लेकर उन्होंने 'आश्रम 3' के प्रेस कॉन्फ्रेंस में पहली बार अपनी चुप्पी तोड़ी और बताया कि जब भी उन पर ऐसे हमलें होते हैं, तो उनकी क्या प्रतिक्रिया होती है। मुंबई के जुहू स्थित पांच सितारा होटल में रखी गई एमएक्स प्लेयर की सीरीज 'एक बदनाम-आश्रम 3' के प्रेस कांफ्रेंस पर जब डायरेक्टर प्रकाश झा से पूछा गया कि 'आश्रम' के पहले सीजन में उनके खिलाफ एफआईआर दर्ज की गई और अब के सीजन में उन पर स्याही फेकी गई, ऐसे में लगातार हो रहे हंगामों से क्या वो डरते भी हैं इस पर प्रकाश झा कहते हैं, आश्रम के बारे में ऐसा हैं कि कहीं कुछ भी हो सकता हैं , किसी एक व्यक्ति या कल्पना की कहानी नहीं हैं और मैं ये कहूं

कोई कुछ भी कर सकता हैं। क्योंकि हमने विषय ही ऐसा चुना हैं जो समाज का विषय हैं, लोगों से संबंध रखता हैं , लेकिन यहां की मुझे डर नहीं लगता तो ये भी गलत बात हैं, लेकिन डर के जीना भी अच्छा नहीं लगता, तो उसके साथ जीता हूं। प्रकाश झा ने आगे कहा, हमेशा से मन करता हैं कि जो कहना हैं वो तो कहना ही हैं। किसी व्यक्ति को अगर व्यक्तिगत रूप से चोट पहुंचाए बिना कुछ कह सकूं, तो मैं कोशिश करता हूं की उसे कहूं। अब चाहे वो राजनीतिक हो, चाहे धार्मिक हो या चाहे वो व्यवसायिक हो। बाकी पत्थर फेंके जाते हैं , गालियां पड़ती हैं, एफआईआर दर्ज होते हैं, चलो कोई नहीं लोगों के हाथ मजबूत होंगे। आपको बता दे की इस प्रेस कांफ्रेंस में डायरेक्टर और प्रोड्यूसर प्रकाश झा के अलावा दर्शन कुमार, अध्यन सुमन, सचिन श्रॉफ, राजीव सिद्धार्थ, त्रिधा चौधरी ,अनुप्रिया गोयनका और एमएक्स प्लेयर के सीईओ गौतम तलवार भी मौजूद थे। वेब सीरीज एक बदनाम -आश्रम 3 , एमएक्स प्लेयर पर 3 जून से स्ट्रीम की जाएगी, जिसे लोग मुफ्त में देख सकेंगे।

महज एक डोरी पर टिकी फुल बैकलेस वनपीस ड्रेस पहन दिखाया अपना बोल्ड अवतार

नई दिल्ली। दिवंगत एक्ट्रेस श्रीदेवी की बड़ी बेटी जाह्नवी कपूर आज फिल्म इंडस्ट्री का एक बड़ा नाम हैं। जाह्नवी ने अपनी पहली ही फिल्म 'धड़क' से दर्शकों के दिल में एक खास जगह बनाई थी। अबतक के करियर में उन्होंने कई फिल्मों में अलग-अलग रोल प्ले किए हैं। वह एक्टिंग के साथ सोशल मीडिया पर भी काफी एक्टिव रहती हैं। आए दिन जाह्नवी अपनी हॉट एंड बोल्ड तस्वीरें और वीडियोज फैंस के साथ साझा करती हैं। इसी बीच जाह्नवी का एक लेटेस्ट फोटोशूट चर्चा में बना हुआ हैं। इन तस्वीरों में उनकी बोल्डेस फैंस के होश उड़ा रही है। यहां देखें तस्वीरें जाह्नवी कपूर ने अपने इंस्टाग्राम अकांउट पर एक नहीं बल्कि अपने कई मूड की तस्वीरें शेयर की हैं। इन तस्वीरों के जरिए जाह्नवी ने बताया कि मई में उनका मूड कैसा था। तस्वीरों में कभी जाह्नवी वर्कआउट करती दिख रही हैं तो कभी जमकर पिज्जा खातीं। वहीं इसके साथ ही उन्होंने फैंस को मई का अपना बोल्ड लुक भी

दिखाया हैं इन तस्वीरों में बला ही हॉट नजर आ रही हैं। जाह्नवी की ये तस्वीरें सोशल मीडिया पर ताबड़तोड़ वायरल हो रही हैं। उनकी हर तस्वीर पर फैंस फिदा होते नजर आ रहे हैं। इन्हें पसंद करने के साथ ही फैंस इन पर कमेंट्स कर अपनी प्रतिक्रिया भी दे रहे हैं। इस पर कमेंट कर कोई जाह्नवी को हॉट, तो कोई गॉजियस बता रहा है। कुछ ही देर में जाह्नवी की इस तस्वीर पर लाखों लाइक्स आ चुके हैं। इस पर कमेंट करते हुए एक यूजर ने लिखा, 'जाना लेकर ही मानेंगी क्या वहीं एक लिखता है, 'कतई जहर। आपको बात दें कि ऐसा पहली बार नहीं हुआ है जब जाह्नवी की किसी तस्वीर को इतना पंसद किया गया है। इससे पहले भी उनकी हर तस्वीर को फैंस ने काफी प्यार दिया।

स्वत्वाधिकारी एवं मुद्रक डा0 दीपक अरोरा द्वारा रामा प्रिन्टर्स 53/25/1 ए बेली रोड न्यू कटरा प्रयागराज (उ.प्र.) 211002 से मुद्रित एवं सी-41 यूपी एसआईडीसी औद्योगिक क्षेत्र नैनी प्रयागराज। (उ.प्र.) 211010 से प्रकाशित।
सम्पादक/प्रकाशक
डा0 पुनीत अरोरा
मो0न0 09415608710
RNI No. UPHIN/2015/63398
website:www.adhuniksamachar.com

नोटः- इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होगे।